RNI N0. MP/HIN/2010/36142

प्राची

वर्ष : 12, अंक : 8-10 : जनवरी-मार्च 2022

सहायक संपादक : डॉ. भावना शुक्ल
मोः 09278720311
Email:bhavanasharma30@gmail.com

संपादक : राकेश भ्रमर
मो. 09968020930
Email: rakeshbhramar@rediffmail.com

प्रकाशक व प्रबन्ध संपादक
श्रीमती किरन वर्मा
संपादन-संचालन
पूर्णतया अवैतनिक, अव्यावसायिक

सम्पादकीय पता
96-सी, प्रथम तल, डीडीए फ्लैट्स,
पॉकेट-4, मयूर विहार फेज-1,
दिल्ली-110091
Email:- **prachimasik@gmail.com**

एक प्रतिः ₹50, वार्षिकः ₹550, द्वैवार्षिकः ₹1100, आजीवनः ₹10,000, संरक्षक सदस्यः ₹15,000 सहयोग राशि आप प्रज्ञा प्रकाशन के चालू खाता संख्या **3058002125**, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, **IFSC: CBIN 0280744** जबलपुर शाखा में भी जमा कर सकते हैं. पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाएगी.

श्रीमती किरन वर्मा स्वत्वाधिकारी व प्रकाशक एवं श्री अमरेन्द्र सिंह, मुद्रक द्वारा प्रज्ञा प्रकाशन के लिये ग्रेनेडियर्स प्रिंटिंग प्रेस, कैन्ट, जबलपुर (म.प्र.) से मुद्रित तथा 7, श्री होम्स, कंचन विहार, बचपन स्कूल के पास, लामटी, विजय नगर, जबलपुर-482002 (म.प्र.) से प्रकाशित. विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र जबलपुर होगा.

इस अंक में

लेख-आलेख एवं विविधा

लघुकथायें क्यों और किसलिए (संपादकीय) :
डॉ. कुँवर प्रेमिल 02
लघुकथा का स्वरूप एवं सार्थकता (लघुलेख)
डॉ. रामनिवास मानव 03

लघुकथायें

डॉ. रामनिवास 'मानव' : 05; डॉ. बलराम अग्रवाल : 06; डॉ. प्रतापसिंह सोढ़ी : 07; डॉ. प्रदीप शशांक : 08; डॉ. योगेन्द्र नाथ शुक्ल : 08; सतीश राठी : 08; ओम प्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' : 08; डॉ. वसुधा गाडगिल : 09; अंतरा करवड़े : 09; सन्तोष सुपेकर : 10; रूप देवगुण : 10; विरेंदर 'वीर' मेहता : 11; संजय सिंह : 12; डॉ. गीता गीत : 13; मुइनुद्दीन अतहर : 13; समीर उपाध्याय : 13; डॉ. के.बी. श्रीवास्तव :14; डॉ. कुँवर प्रेमिल : 14; गुरुनाम सिंह रीहल : 15; आशा भाटी : 15; गोविंद शर्मा : 15; राकेश भ्रमर : 16; कृष्ण मनु : 16; डॉ. ऋचा शर्मा : 17; राम मूरत 'राही' : 18; गोविन्द शर्मा : 18; डॉ. रामकुमार घोटड़ : 19; गोविन्द भारद्वाज : 20; डॉ. शील कौशिक : 21; अनिल शूर आज़ाद : 22; डॉ. सन्ध्या तिवारी : 23; डॉ. सत्यवीर 'मानव' : 24; अशोक श्रीवास्तव 'सिफर' : 25; पवन शर्मा : 26; अशोक गुजराती : 26; ज्ञानप्रकाश 'पीयूश' : 27; सपना चन्द्रा : 27; विजय कुमार : 28; पवित्रा अग्रवाल : 29; मधु जैन : 30; सुकेश साहनी : 31; रामेश्वर काम्बोज हिमांशु : 31; योगराज प्रभाकर : 32; बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान' : 33; जय प्रकाश पाण्डेय : 33; केदारनाथ सविता : 34; मधुकांत : 34; अजीव अंजुम : 35; सुरेश सौरभ : 36; मधुकांत : 36; पुरुषोत्तम दुबे : 36; कान्ता राय : 37; महेश कुमार केशरी : 38; सूर्यकांत नागर : 38; योगेन्द्र नाथ शुक्ल : 39; राधेश्याम भारतीय : 40; गोकुल सोनी : 41; माधव नागदा : 42; प्रजन्या सिंह : 43; आनन्द कुमार तिवारी : 43; रामयतन प्रसाद : 44; डॉ. कुँवर प्रेमिल : 44; अतुलमोहन प्रसाद : 45; डॉ. भावना शुक्ल : 46; राकेश भ्रमर : 47

इस अंक के संपादक
डॉ. कुँवर प्रेमिल

सम्पादकीय

लघुकथायें क्यों और किसलिए

लघुकथा इसलिए चाहिए कि आकार-प्रकार में इसका प्रारूप लघु अवश्य है, पर है बहुत ही असरदार. वक्तव्य छोटा सा, परन्तु है बहुत ही सारगर्भित. ये वे छोटे-छोटे दीप हैं जो दीप मालिके का निर्माण करते हैं.

ये मानो तो छोटे-छोटे झरने हैं जो मिलकर नदी बने, नदियाँ बनकर समुद्र, समुद्र उतना ही बड़ा जितना आकाश, जैसे लघुकथा के वैराट्य का यकीनन आभास.

लघुकथा की उपयोगिता सर्वविदित है. इसे सबसे ज्यादा पाठक मिले. इन पाठकों में बुद्धिजीवियों के अलावा आम पाठक भी शामिल हुए, चलते-चलते ट्रेनों, बुकस्टॉलों पर लोगों ने लघुकथा का रसास्वादन किया. कम समय में ज्यादा पढ़ा-लिखा और समझा.

हर आदमी ने इसे पढ़कर अपनी सोच पैनी की. उसे चोट की पहचान हुई, बुलंदी का अहसास हुआ. आम आदमी की पहचान बढ़ी. उसमें लोकप्रियता का विशेषण लगा.

प्रजातंत्र में कहने का हक सभी को है, लेकिन कब, क्या और कैसे कहा जाये, सवाल यह है. लघुकथा ने हमें यह सब सिखाया, हक और हल दिया, सूक्षमता के साथ विवेचना की शक्ति प्रदान की.

इसे मीठी गोली समझकर चूसने वाले भी मिले. रातों-रात लेखक प्रकाशक बनने की लालसा वाले भी साथ हो लिए. छपास, महत्त्वाकांक्षा भी साथ-साथ हो लिये. आंशिक लघुकथायें भी मिलीं. फिर भी किसी के प्रयास को अनदेखा नहीं किया गया.

अच्छे और वरिष्ठों ने अपने खून से इस बिरवे को सींचा. पनपाया और बड़ा बनाया. तब कहीं यह लघुकथा रूपी विशाल वटवृक्ष के आकार में सामने है. पत्ते, जड़, पेड़ तक उसकी प्रसिद्धि ही प्रसिद्धि है.

यह आदमी की सोच है, तर्क है, चोट है, सहनशीलता है, आभास और अहसास है. सूक्ष्म है तो व्यापक भी, कम समय में पढ़ी, सोची-समझी गयी विधा है. इससे पाठकों को फायदा ही हुआ है.

इससे तर्क और फर्क करना सिखाया है. इसने निरक्षरों में भी प्राण फूँके. उन्हें क्रमशः पढ़ने को तैयार किया. सहज-सुलभ होने से इसे हिज्जे कर-करके पढ़ा गया.

इधर जब दूरदर्शन जैसे मीडिया ने आदमी की सोच को संकुचित किया, नौकरी-गृहस्थी-दूरदर्शन के बीच में लेखन, पठन-पाठन, ठिठुरकर रह गया. ऐसे में लघुकथा काम आई. अति व्यस्तता में भी इसे पढ़ा गया.

लघुकथा इसलिए भी पढ़ी गई कि इसके नन्हें से कलेवर में कुछ बहुत ज्यादा छिपा-छिपा रहा. गहरे पैठ वाली बात इसके साथ रही.

आज का हर दूसरा आदमी लघुकथा का फैन है, इसलिए यह आज की जरूरत है. इसका संबंध चिंतन से है, प्रहारक क्षमता से है, अतएवः-

- ❖ लघुकथा बिंदु-बिदु विचार हैं.
- ❖ एक तथ्य है, एक आईना है.
- ❖ पुरजोर असर करती है.
- ❖ लाग-लपेट से दूर रहती है.
- ❖ इसका भीतर-बाहर सब खुला है.
- ❖ कृत्रिमता से दूर है.
- ❖ विसंगतियों पर प्रहार करती है, तिलमिला देती है.
- ❖ चेतना प्रधान है, बोधगम्य है.
- ❖ लघुकथा पहले भी थी, आगे भी इसकी चाहत बनी रहेगी.
- ❖ इसका मार्ग प्रशस्त है, प्रशस्त है और भविष्य में भी प्रशस्त रहेगा.

डॉ. कुँवर प्रेमिल

लघुकथा का स्वरूप एवं सार्थकता

डॉ. रामनिवास 'मानव'

लघुकथा का प्रारंभ तभी से माना जाना चाहिए, जब से इस विधा के लिए 'लघुकथा' अभिधान का प्रयोग प्रारंभ हुआ। इस दृष्टि से सन् 1938 में प्रकाशित 'इन्द्रधनुष के नीचे' को हिन्दी की प्रथम लघुकथा तथा इसके लेखक नित्यानन्द को हिन्दी का प्रथम लघुकथाकार माना जा सकता है। नित्यानन्द द्वारा रचित 'इन्द्रधनुष के नीचे' शीर्षक रचना इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र 'विशाल भारत' के सितम्बर, सन् 1938 अंक में फिलर के रूप में प्रकाशित हुई थी। संयोग से बनारस (उत्तर प्रदेश) से प्रकाशित होने वाली 'हंस' पत्रिका ने, अगले ही महीने यानी अक्टूबर में इसे 'विशाल भारत' से साभार प्रकाशित करते हुए, इस नन्हीं कथा-विधा को 'लघुकथा' नाम भी दे दिया। अतः लघुकथा का प्रारम्भ अक्टूबर, सन् 1938 से 'हंस' पत्रिका द्वारा माना जा सकता है। इससे स्पष्ट है कि वर्तमान लघुकथा, अपनी युवावस्था को पूर्ण कर, प्रौढ़ावस्था में पहुंच चुकी है।

यह आश्चर्य की बात है कि 80-82 वर्ष बाद भी, लघुकथा के स्वरूप को लेकर, जब-तब प्रश्न उठाए जाते रहते हैं। नई पीढ़ी के लघुकथाकार, बिना पूर्व-रचित लघुकथा-साहित्य को पढ़े, यह मानकर चलते हैं कि उन्होंने जिस दिन से लघुकथा-लेखन प्रारम्भ किया है, उसी दिन से हिन्दी-लघुकथा की विकास-यात्रा भी प्रारम्भ होती है। उनकी इस भ्रान्ति को दूर करने के लिए मैं अपना एक लघुलेख 'लघुकथा : स्वरूप-विवेचन' यहां ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत कर रहा हूं, जो लगभग चालीस वर्ष पूर्व, अंबाला से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक 'पवन-वेग' के 'लघुकथाकार रामनिवास 'मानव' विशेषांक' (21 दिसम्बर, 1981) में प्रकाशित हुआ था। लेख इस प्रकार हैः

वह गद्य-रचना, जिसमें किसी सूक्ष्म मनःस्थिति या भाव-स्थिति को लघु घटना द्वारा कथात्मक संस्पर्श देकर उकेरा गया हो, लघुकथा कहलाती है। यह आकार में जितनी छोटी होती है, स्वरूप में उतनी ही संश्लिष्ट होती है। इसमें किसी प्रकार के विस्तार की गुंजाइश नहीं होती। यह तो बिजली की तरह कौंधती है और पाठक को, एक क्षण के लिए चमत्कृत कर, खत्म हो जाती है। इसकी संवेदना, कहानी की तरह व्यापक और गहन नहीं होती, बल्कि उस स्पर्श की भांति होती है, जो एक क्षण के लिए गुदगुदा जाता है। तो भी, लघुकथा प्रभाव की दृष्टि से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। कई लघुकथाएं पाठक को अन्दर तक गुदगुदा जाती हैं और कई बार यह गुदगुदाहट, प्रेम के प्रथम स्पर्श की भांति, चिर स्मरणीय होती है।

आकार की दृष्टि से लघुकथा बहुत संक्षिप्त होती है। यह चार-छह पंक्तियों से लेकर एक-डेढ़ पृष्ठ तक की हो सकती है। चन्द पंक्तियों में ही, अपना सम्पूर्ण रचना-कौशल प्रदर्शित करते हुए, लेखक को रचना को एक विशिष्ट भंगिमा के साथ उद्देश्य तक पहुंचाना होता है। इसका अन्त तो नाटक के अन्त की भांति होता है, जिसमें कथा के उद्देश्य तक पहुंचते ही एकाएक पटाक्षेप हो जाता है। यहां यह स्पष्ट करना भी आवश्यक है कि लघुकथा विधा की दृष्टि से कथा के अन्तर्गत ही आती है। फिर भी, यह कहानी का संक्षिप्तिकरण या सारांश नहीं है। संरचना की दृष्टि से यह काफी स्वतन्त्र तथा कहानी से भिन्न है।

लघुकथा में, कहानी की भांति, संवाद-योजना, चरित्र-चित्रण तथा पृष्ठभूमि-निर्माण के लिए जगह नहीं होती। कहानी तो बीस पेज की भी हो सकती है। उसमें लेखक जिस ढंग से चाहे, अपनी बात कह सकता है। कहानीकार चिड़िया की आंख के साथ-साथ उसकी चोंच, पैर, पंख आदि सभी कुछ देखता है, पर लघुकथाकार इसकी केवल आंख ही देखने को बाध्य है। उसकी थोड़ी-सी शिथिलता या असावधानी रचना को लघुकथा के क्षेत्र से कहानी के क्षेत्र में पहुंचा सकती है। कहानीकार में धैर्य चाहिए और लघुकथाकार में चुस्ती। कहानी अपने उद्देश्य की ओर हाथी की तरह झूमती चलती है, तो लघुकथा अपने उद्देश्य पर चीते की तरह से झपटती है। जो लघुकथाकार अपनी रचना में जितनी गति या पैनापन ला पाता है, वह उतनी ही उत्कृष्ट रचना होती है।

कहानी और लघुकथा में मूल अन्तर कथानक की स्थिति का है। कहानी तलहटी से शुरू होती है और फिर, चोटी पर चढ़कर, नीचे उतरती है। लघुकथा की शुरुआत ही चोटी से होती है और एकदम द्रुत गति से उद्देश्य तक पहुंच जाती है। कहानी में तीर, कमान, तीरन्दाज, लक्ष्य और लक्ष्य-बेध की सारी प्रक्रिया आ जाती है, पर लघुकथा का सम्बन्ध तीर के कमान से निकलने और लक्ष्य को बेधने तक है। यह लक्ष्य-बेधन कहानी और लघुकथा, दोनों में ही प्रायः व्यंग्य द्वारा होता है। किन्तु लघुकथा का व्यंग्य अधिक पैना तथा धारदार होता है। इंजेक्शन की सुई की भांति, बिना कोई गहरा घाव किए, पाठक के मन में अन्दर तक उतर जाता है। इसके चुभने से पाठक चाहे पूरी तरह तिलमिलाए नहीं, फिर भी यह अपना एहसास अवश्य करवा जाता है। व्यंग्य लघुकथा का पर्याय नहीं, विशिष्ट गुण अथवा प्राण है। बिना व्यंग्य के लघुकथा निर्जीव और निस्पन्द हो जाती है।

अब प्रश्न उठता है कि लघुकथाकार अपनी रचना में गति या पैनापन कैसे ला सकता है। लघुकथा वर्णनात्मक हो, चाहे संवादात्मक, लघुकथाकार को कथानक चरम उत्कर्ष से उठाना चाहिए, जिससे वह एकदम गति पकड़ सके। अन्त के पास पहुंचते ही उसे व्यंग्य की छड़ी से उछालकर उद्देश्य के गोल में डाल देना चाहिए। लघुकथाकार को ध्यान रखना चाहिए, उद्देश्य के व्यक्त होने के बाद उसके द्वारा की गई कोई भी टिप्पणी लघुकथा को निष्प्राण बना देगी। उसे, पाठक को चमत्कृत होकर, एक क्षण के लिए सोचने देना चाहिए। यही लघुकथा की सार्थकता है। शिल्प की सरलता तथा भाषा की कसावट इसके लिए काफी सहायक हो सकती है।

अब रही लघुकथा की सार्थकता अथवा प्रासंगिकता की बात। अपने आठ दशक के जीवन-काल में लघुकथा ने, विभिन्न चरणों को पार करते हुए, अनेक महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की हैं। समकालीन दौर में, गद्य की लघु विधाओं में, सर्वाधिक लोकप्रिय है लघुकथा। वर्तमान भाग-दौड़ और आपा-धापी का युग है। आज लोग व्यस्त ही नहीं, अस्त-व्यस्त भी हैं। युवा नौकरी, व्यापार या खेल-कूद में व्यस्त हैं, तो प्रौढ़ शेयर या सट्टा बाजार में, और कुछ नहीं, तो ताश खेलने में ही व्यस्त हैं। युवा हों या प्रौढ़, किसी के पास समय नहीं है। इसीलिए सभी को सब-कुछ फास्ट चाहिए; जैसे फूड नहीं, फास्ट फूड; ट्रेन नहीं, फास्ट ट्रेन। लोगों की इसी मनोवृत्ति के कारण क्रिकेट का टेस्ट मैच से वनडे और फिर वनडे से टी-20 मैच के रूप में विकास हुआ। यही स्थिति कथा की है। कभी, कथा की तुलना क्रिकेट से करते हुए, मैंने लिखा था कि उपन्यास की तुलना टेस्ट मैच से, कहानी की तुलना वनडे मैच से, तो लघुकथा की तुलना टी-20 मैच से की जा सकती है। खेल-समीक्षक अक्सर कहते हैं कि क्रिकेट-खिलाड़ी की वास्तविक परीक्षा टेस्ट मैच में ही होती है, लेकिन असली रोमांच वनडे मैच में, बल्कि उससे भी अधिक टी-20 मैच में होता है। सब-कुछ फटाफट, चौके-छक्के, और फिर परिणाम भी उसी दिन, कुछ ही घंटों में। इसी कारण जहां टेस्ट मैच के दौरान स्टेडियम अक्सर खाली पड़े रहते हैं, वहीं वनडे या टी-20 मैच के दौरान उन में पैर रखने को भी जगह नहीं मिलती। यही स्थिति कथा की है।

मेरे विचार से कथाकार की लेखन-कला की वास्तविक परीक्षा उपन्यास या कहानी लेखन द्वारा ही होती है। लेकिन लघुकथा का रोमांच उसे अत्यंत लोकप्रिय और महत्त्वपूर्ण बना देता है। लघुकथा का प्रभाव गहरा और मारक क्षमता अचूक है। यह कमान से छूटे तीर अथवा बन्दूक से निकली गोली की भांति, लक्ष्य पर, सीधा प्रहार करती है। इसी का परिणाम है कि जब पाठक पत्रिका पढ़ता है, तो सबसे पहले लघुकथा पढ़ता है, फिर कहानी और अन्त में उपन्यास-अंश अथवा कुछ और। फिलर के रूप में प्रारम्भ हुई लघुकथा आज प्रिन्ट मीडिया से लेकर सोशल मीडिया तक में अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करवा रही है। नए-पुराने लघुकथाकारों के साथ विष्णु प्रभाकर, रामप्रसाद रावी, अवधनारायण मुद्गल, चित्रा मुद्गल, सूर्यकान्त नागर जैसे वरिष्ठ कथाकार भी इसकी ओर आकर्षित हुए और हो रहे हैं। आज भी नई-पुरानी पीढ़ी के सैकड़ों लेखक लघुकथा-लेखन में सक्रिय हैं। लघुकथा-केन्द्रित 'दृष्टि', 'संरचना' और 'लघुकथा-कलश' जैसी पत्रिकाएं भले ही कम हों, लेकिन 'वीणा', 'कथा-बिम्ब', 'शुभ-तारिका', 'प्राची', 'अक्षरा', 'हरिगन्धा', 'पंजाब-सौरभ', 'शीराजा' आदि पत्रिकाएं लघुकथा को पाठकों तक पहुंचाने हेतु निरन्तर प्रयासरत हैं। पारिवारिक और सामाजिक विसंगतियों, राजनीतिक विद्रूपताओं, साम्प्रदायिक वैमनस्य, धार्मिक पाखंड, व्यवस्था-जनित अन्यान्य विकृतियों को न केवल परत-दर-परत उघाड़ रही है, बल्कि दबे-कुचले, डरे-सहमे और वंचित-शोषित जन की घुटन, वेदना, हताशा और निराशा को मुखरित भी कर रही है, लघुकथा। कहा जा सकता है कि समकालीन जीवन-यथार्थ को आईना दिखा रही है, आज की लघुकथा। अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लघुकथा की सार्थकता, प्रासंगिकता एवं उपादेयता स्वतः ही सिद्ध है।

(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं और सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (राज.) के हिन्दी-विभाग में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष रह चुके हैं.)

सम्पर्क : 571, सैक्टर-1, पार्ट-2,
नारनौल-123001 (हरि)
मो : 80 5354 5632

❑❑

दो लघुकथायें

डॉ. रामनिवास 'मानव'

1. गरीब की मां

हुआ वही, जिसका उसे अंदेशा था। घर की देहरी पर पैर रखते ही बीमार मां का खनखनाता प्रश्न, उल्कापिंड की भांति, उसके कानों से टकराया- "म्हांकी दबाई ल्यायो बेट्टा?"

उसने मां के चेहरे की झुर्रियों में उभर आई क्षणिक आशा की झलक देखी और फिर उसे अचानक खांसी में तब्दील होते हुए भी देखा। मां का चेहरा काला पड़ने लगा। लगा, जैसे उसकी सांस निकली, अब निकली।

मां की हालत देखकर वह घबरा गया। मां दमे की मरीज है। रोज दवा लाने के लिए कहती है। वह रोज ही, कोई-न-कोई बहाना बनाकर, दवाई न लाने की बात कह दिया करता था। लेकिन आज मां की हालत देखकर उसे झूठ बोलना पड़ा- "हां, ल्यायो हूं मां! इबी ल्यायो।"

घर के अंदर घुसते हुए उसे अपनी फैक्ट्री के मालिक पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। कितना गिड़गिड़ाया था वह सौ रुपए 'एडवांस' लेने के लिए, लेकिन उसने एक न दिया। मां की बीमारी की दुहाई देने से भी उस बेरहम का दिल नहीं पसीजा।

एक आले में रखी कुछ पुरानी शीशियों को उसने टटोला। हिलाकर देखने पर पता चला कि एक शीशी में कुछ दवा है। उसने, बिना सोचे-समझे, वह दवा मां के हलक के नीचे उतार दी।

दवा अंदर जाते ही मां का खोखला शरीर झनझना उठा। जोर की खांसी के साथ उसे उल्टी और दस्त भी आने लगे। हिचकियां बंध गईं तथा आंखें बाहर निकल आईं। थोड़ी ही देर में मां का चेहरा पीला पड़ गया।

"अरै या किसी दबाई ल्यायो हरिया?" मां का प्रश्न था।

"मैं वा डाकदर रो खून पी जाऊंलो मां! वा कमीणा नै गलित दबाई दे दी। स्यात गरीबा री मां, मां नाही होवै ली।" पुनः झूठ बोलकर, अपराध-बोध से मुक्ति पाने का प्रयास करते हुए, वह कहता है।❑

2. कसक

गांव का युवक पढ़-लिखकर शहर में नौकरी क्या लगता है, अपनी जड़ और जमीन से ही कट जाता है। शहर जाकर वह अपने गांव के अभावों और अतृप्तियों का प्रतिशोध लेना शुरू कर देता है। उसके इस प्रतिशोध का पहला शिकार मां-बाप ही होते हैं, क्योंकि अपने को गरीब घर में पैदा करने का सीधा जिम्मेदार वह उन्हें ही मानता है।

हमारे लघुकथा-नायक श्रीमान के साथ भी ऐसा ही हुआ। श्रीमान ओवरसियर लगा है, सिंचाई-विभाग में। तनखा के इलावा भी मोटी इनकम है। अब वह कपड़े के जूतों से लिबर्टी शूज तक और लट्ठे के कुर्ते-पजामे से सफारी सूट तक पहुंच गया है। पिछले साल ही शादी हुई है उसकी। सारी कमाई पति-पत्नी के बनाव-सिंगार, खान-पान और पिकनिक-पिक्चर पर ही खर्च हो जाती है। मां-बाप के लिए कुछ नहीं बचता। उनकी हालत पहले जैसी भी नहीं रही। जो कुछ था, श्रीमान की शिक्षा और शादी पर खर्च कर हो गया। उम्र की तरह खेती भी जवाब दे गई। मां की लुगड़ी के पैबंद तथा काका के चेहरे की झुर्रियां और बढ़ गई हैं।

श्रीमान कभी कभार ही घर आता है। पत्नी को गांव में परेशानी न हो, अतः रास्ते में ससुराल छोड़ जाता है। घरवालों के रुकने के लिए कहने पर शानपत दिखाकर कहता है- "नीलम गुड़गांव में है। अकेली डरेगी, इसलिए आज ही जाना पड़ेगा।"

कल वह घंटे-भर बाद ही जाने लगा, तो काका ने मन भारी कर कहा- "इतनू नगीच हुयां पाच्छै बी महनां-महनां मैं आवा सा। आतो रह्याकर बेट्टा! बहू नै बी साथ लियाया कर। हम कोई हमेस्यां तो बैठ्या ना रहां; इब तो साल-दो साल का सां।"

"वो तो ठीक है काका! पर गांव में छह बीघा ऊसर जमीन, कच्चे पुश्तैनी मकान और तुम्हारे सिवाय है ही क्या, जिसके लिए आना हो।"

"तेरी मरजी बेट्टा!" कहकर काका ने श्रीमान को विदा कर दिया। पर उन्हें रात देर तक नींद नहीं आई। वह सोचते रहे कि बेटे के लिए उनका महत्त्व ऊसर जमीन और कच्चे मकान जितना भी है या नहीं।❑

सम्पर्क : 571, सैक्टर-1, पार्ट-2,
नारनौल-123001 (हरि)
मो : 80 5354 5632?

डर

डॉ. बलराम अग्रवाल

दोनों अगल-बगल बैठे थे।

पहला किसी चिंता में मग्न था।

"बहुत चुप है आज!" कुछ देर उसे निहारता रहने के बाद दूसरे ने पूछा, "बात क्या है?"

"बात!" दोस्त का सवाल सुन पहले ने धीमे स्वर में कहा, "सोचो तो बहुत बड़ी है, न सोचो तो कुछ भी नहीं।"

"हुआ क्या?"

"हुआ यह कि," पहले ने बताना शुरू किया, "कल रात, लिखने की अपनी मेज पर बैठा मैं कुछ सोच रहा था कि एक युवती कमरे में दाखिल हुई। मुस्कुराते हुए उसने अभिवादन किया और सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई।"

"फिर?"

"उसने कहा कि वह एक अन्तरराष्ट्रीय कहानी सर्वे के भारतीय प्रतिनिधिमंडल की सदस्य है। बोली, आप वरिष्ठ कथाकार हैं। कृपया अपनी 30 ऐसी कहानियों की सूची मुझे दें, जिन्हें आप उच्च स्तरीय मानते हों।"

"यह तो कोई मुश्किल काम नहीं था।" दूसरे ने कहा।

"यार, बिरला ही कोई कथाकार होगा जिसे अपनी सभी कहानियों के शीर्षक याद रह गए हों!"

दूसरा इस तर्क का तुरंत प्रतिवाद नहीं कर पाया।

"उनमें भी, श्रेष्ठ का चुनाव!" पहले ने कहना जारी रखा, "मेहनत जरूर करनी पड़ी, लेकिन अपनी पसंद की 30 कहानियों की सूची बनाकर मैंने उसके आगे रख दी।"

"फिर?"

"सूची को देखकर उसने कहा, इन्हें कृपया अपनी दृष्टि से वरीयता के क्रम में लिख दें। मैंने वह भी कर दिया।"

"फिर?"

"उस नई सूची पर क्रमांक 16 से 30 तक के नामों को अपने हाथ में पकड़े पेन से उसने एक बॉक्स में बंद कर दिया; फिर मुझसे कहा, ऊपर की 15 में से यदि 10 कहानियों का चुनाव करना हो, तो आप किन्हें चुनना चाहेंगे?

इस तरह उसने पाँच कहानियाँ और अलग करवा दीं।"

"यानी सिर्फ दस कहानियों की सूची अपने पास रखी?" दूसरे ने पूछा।

"अरे नहीं," पहले ने दुखी अंदाज में कहा, "बोली- इन 10 कहानियों को सम्पादक अगर 5-5 की दो किस्तों में छापना चाहें, तो जिन 5 को आप पहले छपवाना चाहेंगे; उन्हें कृपया पहले, दूसरे, तीसरे... स्थान के वरीयता क्रम में लिख दें।"

"यह तो कोई मुश्किल काम नहीं था।" दूसरे ने कहा।

"यार, 300 में से 30 कहानियों के नाम चुनने में ही मेरी ऐसी-तैसी हो गई थी और तुम कह रहे कि यह कोई मुश्किल काम नहीं था!" पहले ने गुस्सेभरी तेज आवाज में कहा। दूसरे को उसका यह अंदाज बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा; लेकिन उसने प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की।

"मैं उसके शिकंजे में फँस चुका था और अब वह चालाक युवती उसे कसे जा रही थी।" पहला कुछ देर बाद अपने-आप में बुदबुदाया फिर स्पष्ट आवाज में बोला, "इतना कर चुकने के बाद मैंने झिड़ककर उसे भगा देना चाहा, लेकिन... न जाने क्या सोचकर वह क्रम भी बना दिया।"

"फिर?"

"फिर वह हुआ जिसकी मुझे सपने में भी उम्मीद नहीं थी।" पहले ने दुखी स्वर में कहा।

"क्या?"

"उस सूची को देखते ही उसने कहा- सर, स्वयं चुनी हुई 30 में से 25 कहानियों को तो खुद आप ही निचले पायदान पर रख चुके हैं। खेद की बात यह कि पाठकों और आलोचकों की संयुक्त राय के आधार पर तैयार श्रेष्ठ कहानियों की जो सूची हमारे पास है, उसमें इन पाँच में से एक का भी नाम नहीं है।"

"ओह!" दूसरे के कंठ से निकला।

"मैं तो 'ओह' भी नहीं कह पाया था," पहला बोला, "उसका निर्णय सुनकर बेहोश-सा हो गया।"

"हे भगवान!" दूसरे ने चिंता जताई, "फिर क्या हुआ?"

"चैतन्य हुआ तो कमरे में सिर्फ मैं था।" पहले ने कहा।

"यानी कि वह जा चुकी थी!" दूसरे ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"आई ही कब थी!" पहले ने ठंडे स्वर में कहा, "पत्नी-बच्चे सब बाहर गए हुए हैं। सिक्योरिटी गार्ड्स को 'डोंट डिस्टर्ब' बोल रखा था। फ्लैट अंदर से बंद। मेरा कमरा अंदर से बंद। रात, दो बजे का समय। कौन आ सकता था!!!"

"डर!" दूसरे ने सधे स्वर में कहा।

पहले ने नजरें उठाकर बगल में देखा- वहाँ दूसरा कोई नहीं था।

सिर्फ वह था, निपट अकेला।❑

सम्पर्क : एम.70, नवीन शाहदरा,
दिल्ली-110032
मोः 8826499115

डॉ. प्रतापसिंह सोढ़ी की तीन लघुकथायें

मनोवृत्ति

नीम के पेड़ नीचे हाफिज सा. अपने शागिर्दों को कुरानशरीफ की आयतें याद करा रहे थे, तभी पेड़ की शाख से एक तिनका उनकी श्वेत बढ़ी हुई दाढ़ी में आकर अटक गया. कोहनी मारते हुए सबसे शरारती विद्यार्थी इकबाल ने हाफिज सा. की दाढ़ी में अटके तिनके को देखा और अपने पास बैठे साथी असलम को हाफिज सा. की दाढ़ी में अटके तिनके की ओर इशारा करते हुए कहा- "देखो, चोर की दाढ़ी में तिनका."

हाफिज सा. ने सुन लिया. उन्होंने फुर्ती से दाढ़ी में अटके तिनके को निकाल फेंका और अपने शागिर्दों से मुस्कराते हुए बोले, "बच्चों, जो खुद चोर होते हैं, उन्हें दूसरों की दाढ़ी में तिनका दिखाई देता है." इकबाल ने गौर से देखा, हाफिज सा. की दाढ़ी में तिनका नहीं था. झेंपते हुए उसने अपनी नजरें झुका लीं.❑

औलाद

चोरी के इल्जाम में पुलिस उसे थाने ले गई. हैडसाहब ने उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है छोकरे?"

दबी आवाज़ में उसने उत्तर दिया, "मातादीन."

"बाप का नाम?"

मातादीन चुप रहा. डंडा फर्श पर फटकारते हुए हैडसाहब ने उसे डराया, "अबे, मैं तेरे बाप का नाम पूछा हूं, बताता क्यों नहीं?" मातादीन गर्दन झुकाये चुपचाप खड़ा रहा. इस बार हैड साहब ने उसकी पीठ पर डंडा मारते हुए धमकाया, "जल्दी से बता दे अपने बाप का नाम, नहीं तो मार-मार के तेरा कचूमर बना दूंगा."

हैड साहब की इस धमकी का भी मातादीन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वह चुपचाप खड़ा रहा. हैड साहब के क्रोध का पारा बेहद बढ़ गया और उन्होंने पूरी ताकत लगा उसकी दोनों टांगों पर डंडे से प्रहार किया.

मातादीन की चीख निकल पड़ी और वह फर्श पर गिर पड़ा. हैड साहब की प्रताड़ना पाकर भी वह मौन फर्श पर पड़ा कराहता रहा.

मातादीन के इस अडिग मौन से हैड साहब चीख पड़े, "साले कहता क्यूं नहीं कि तू किसी हरामी की नाजायज औलाद है."

मातादीन की सारी पीड़ा को आंखों से टपकने वाले आंसुओं ने बयान कर दिया.❑

सम्पर्क : एजी-1/33-बी, विकासपुरी,
नई दिल्ली -110018

जूते

राजाराम शू मेंडर को अपने जूते थमाते हुए मैंने कहा, "इनकी मरम्मत कर देना."

जूतों को उलट-पुलट कर देखने के बाद वह बोला, "मेरी राय मानो तो इन जूतों को अब बदल दो."

बिलकुल ठीक कह रहा था राजाराम. पिछले कई सालों से इन्हें घसीट रहा हूं. बार-बार फट जाने से कई बार इन्हें सिलवा भी रहा हूं. तले तब्दील कर चुका हूं. अब इनमें दम नहीं रहा, लेकिन नये जूते खरीदने की बजट में कोई गुंजाइश नहीं थी. इसी माह बच्चों की फीस भरना है. किताबें एवं यूनिफार्म खरीदना है.

मुझे चुप देख राजाराम ने कहा, "क्यों सोच रहे हैं बाबूजी? मैं इन जूतों को ही ठीक कर दूंगा. फिर भी अब इन्हें बदल दें तो अच्छा है." मैं सोच रहा था कि पांच सौ रुपये से कम तो नये जूते नहीं आयेंगे और इतना रुपया मैं तीन माह में ही जुटा पाऊंगा.

मेरी बेबसी को भांपते हुए उसने विनयपूर्वक कहा, "मेरे पास एक ग्राहक के जूते पिछले दो साल से पड़े हैं. अब वह आने वाला नहीं. आपके नाप के भी हैं. आप इन्हें ले लेंगे तो मुझे खुशी होगी."

उसने गुमटी से जूत कपड़े से साफ कर मेरे सामने रख दिये. पास ही रखे जगह-जगह से फटे मेरे पुराने जूते मुझे चिढ़ा रहे थे. मेरे हाथ राजाराम के जूतों की तरफ बढ़े और रुक गये. मैंने इस बार दृढ़तापूर्वक कहा, "तुम मेरे पुराने जूतों की ही मरम्मत कर देना."❑

सम्पर्क : 5, सुखशान्ति नगर,
बिचौली हप्सी रोड,
इन्दौर-452016 (म.प्र.)
मो : 9479560623

❑❑

साहित्य के व्यापारी

डॉ. प्रदीप शशांक

हमारे लेखक मित्र बहुत दिनों बाद मिले. हमने पूछा- "आपकी बहुत दिनों से कोई नई रचना पढ़ने को नहीं मिली. क्या बात है?"

मित्र ने मुस्कराते हुए कहा- "आजकल हम संकलनों के संपादक-प्रकाशक बन गये हैं. कुछ नव धनाढ्य लेखकों में छपास रोग तेजी से फैल रहा है. वे अपनी रचना (भले ही दोयम दर्जे की हो) रुपये देकर छपवाना चाहते हैं. ऐसे लेखकों से प्रति रचना 500 रुपये लेकर लघुकथा, कविता आदि के संकलन निकालकर उनके छपास रोग का इलाज कर रहे हैं. इस काम में हमें नाम और दाम दोनों का फायदा हो रहा है."

हम एक योग्य साहित्यकार को साहित्य का व्यापारी बनते देख अवाक रह गए.❑

सम्पर्क : श्री कृष्णम ईको सिटी,
श्री राम इंजीनियरिंग कॉलेज के पास,
कटंगी रोड, माढ़ोताल,
जबलपुर (म.प्र.) 482002
मो : 9131485948, 9425860540.

रोती हुई किताब

डॉ. योगेन्द्र नाथ शुक्ल

"सन्दीप सर! मैं देख रहा हूँ कि आप बहुत देर से टेबल पर रखी इस किताब को देखते हुए सोच में डूबे हैं?"

"सर! मुझे लगता है कि इस किताब से अश्रुधारा बह रही है!"

"मैं आपकी पीड़ा समझता हूँ. पाठ्यक्रम की इस नयी किताब में तुलसी, सूर, मीरा, माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारीसिंह दिनकर जैसे महान् साहित्यकार अपने साथ जोड़-तोड़ से शामिल हुए अंशु कुमार, मोनिका सिंह, लवलीन जैसे रचनाकारों को देखकर आँसू ही तो बहाएँगे!"❑

सम्पर्क : पूर्व प्राध्यापक एवं प्राचार्य, निर्भयसिंह पटेल शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, 390, सुदामा नगर, ए सेक्टर, अन्नपूर्णा मार्ग, इंदौर-9, (मध्य प्रदेश)

पेट का सवाल

सतीश राठी

"क्यों बे! बाप का माल समझ कर मिला रहा है क्या?" गिट्टी में डामर मिलाने वाले लड़के के गाल पर थप्पड़ मारते हुए ठेकेदार चीखा.

"कम डामर से बैठक नहीं बन रही थी ठेकेदार जी. सड़क अच्छी बने, यही सोचकर डामर की मात्रा ठीक रखी थी." मिमियाते हुए लड़का बोला.

"मेरे काम में बेटा तू नया आया है. इतना डामर डाल कर तूने तो मेरी ठेकेदारी बंद करवा देनी है." फिर समझाते हुए बोला, "यह जो डामर है... इसमें से बाबू, इंजीनियर, अधिकारी, मंत्री सबके हिस्से निकलते हैं बेटा. खराब सड़क के दचके तो मेरे को भी लगते हैं. चल! इसमें गिट्टी का चूरा और डाल." मन ही मन लागत का समीकरण बिठाते हुए ठेकेदार बोला.

लड़का बुझे मन से ठेकेदार का कहा करने लगा. उसका उतरा हुआ चेहरा देखकर ठेकेदार बोला, "बेटा, सबके पेट लगे हैं. अच्छी सड़क बना दी और छह माह में गड्ढे नहीं हुए तो, इंजीनियर साहब अगला ठेका किसी दूसरे ठेकेदार को दे देंगे. इन गड्ढों से ही तो सबके पेट भरते हैं बेटा."❑

सम्पर्क : आर 451, महालक्ष्मी नगर,
इंदौर - 452 010 (म.प्र.)
मो : 9425067204

अपनी अपनी सोच

ओम प्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

जैसे ही उसने माऊस वाला हाथ पकड़ा वैसे ही वह बोली, "साहब जी! मुझे प्रमोशन चाहिए, इसलिए सब कुछ सीखना चाहती हूं." कहते हुए उसने कंप्यूटर स्क्रीन पर नजरें गड़ा दीं.

"हां, मैं सब कुछ सिखा दूंगा," कहते हुए साहब ने कंधे पर दूसरे हाथ का दबाव बढ़ा दिया; ताकि वे जान सके कि सब कुछ सीखना चाहती है या...?❑

सम्पर्क : मित्तल मोबाइल के पास,
रतनगढ़-458226 (नीमच) (म.प्र.)
मो : 9424079675.

दोहरी हत्या

डॉ. वसुधा गाडगिल

“पापा, पापा... मैंने और टिंकू ने आँगन में वहाँ उस कोने में पौधा लगाया था!” परेशान बिट्टू नल के नीचे रखी छोटी बाल्टी में पानी लेकर आँगन में नजरें दौड़ाते, परेशान होते हुए पापा से बोला.

“हाँ, वो उधर है. उसे दूसरी जगह लगा देना.” पिताजी ने बिट्टू को संकेत करते हुए बताया.

“अरे! इसे किसने उखाड़ दिया! कल मैम बोली थी कि पर्यावरण दिवस पर पौधा लगाओ, इसलिये हमने लगाया था.”

“ये पौधे-वौधे लगाओगे तो धंधे का सामान कहाँ रखूंगा!” कहते हुए बिट्टू के पिताजी ने कार्टन उठाकर आँगन के कोने में रख दिये.

“पर पापा आपने इसे...” नन्हा बिट्टू दौड़कर पौधे के पास गया. एक दिन पहले ज़मीन से उखड़ चुका पौधा दुनिया छोड़ चुका था. पौधे को देख बिट्टू रोने लगा. सूखे, गर्दन लटकाए पौधे पर उसके आँसूओं की बूंदें गिर रही थीं. पौधे को नन्ही-नन्ही उँगलियों से सहलाते, सिसकते हुए वह पिताजी से बोला-

“पापा, आपने इसे... याने कल मैम जो बता रही थी वही आपने आज... हत्या, हाँ, हत्या!”

बेटे के मुँह से ‘हत्या’ शब्द सुन पिताजी को काठ मार गया!

“ओह... ये मैं क्या कर बैठा! पौधे के साथ इसके विचारों की भी मैंने...! एक साथ दो भ्रूणहत्या!” बुदबुदाते हुए प्रकृति को सहेजने वाले संवेदनशील बालमन के सामने एक पिता अपराध भाव से जमीन में आँखें गड़ाए जड़वत खड़ा था!❑

सम्पर्क :
इंदौर - 452 010 (म.प्र.)

सरोवर

अंतरा करवड़े

“देखो नित्या! अब तुम अपने आप को काफी हद तक सम्हाल चुकी हो. तुम्हारे लिये ये मुश्किल तो होगा, लेकिन उतना ही जरूरी है कि तुम्हें आने वाले जीवन की चुनौतियों के बारे में बता दिया जाए.”

राष्ट्रीय स्तर की एथलीट नित्या, एक दर्दनाक सड़क हादसे की शिकार होकर महीनों से बिस्तर पर सिमटकर रह गई थी. आज उसकी कुछ महत्वपूर्ण रिपोर्ट्स आई थीं, जिनके अनुसार नित्या का सामान्य रूप से चलना फिरना, स्नायु नियंत्रण और अन्य गति-विधियां अत्यंत सीमित रह जाने वाली थीं. जीवनपर्यन्त अब उसे एक निर्भर और आश्रित स्वरूप में रहना था.

डॉक्टरों को अंदेशा था कि अपनी इस हालत का सामना करना उसके लिये मुश्किल होगा, और वे उसे भविष्य के लिये तैयार कर रहे थे.

“मुझे पता है एक उम्दा एथलीट होने के कारण तुम्हारे लिये एक थमा हुआ, बेजान सा जीवन जी पाना मुश्किल होगा. लेकिन इस सत्य को जितना जल्दी स्वीकार लोगी, सब कुछ आसान बनता जाएगा. अपनी गति को अब तुम्हें विराम देना ही होगा.” डॉक्टर ने हिम्मत कर नित्या की ओर देखा. अपेक्षा थी कि आंसू, हताशा और बेचैनी होगी, लेकिन उसकी दोनों आंखें आत्मविश्वास से जगमगा रही थीं.

“माना कि मुझे दौड़ना नहीं है, थम जाना है, लेकिन क्या यह संभव नहीं है कि मैं इतनी शिद्दत से ठहर जाऊं कि दौड़ने वालों को भी रश्क हो.”

डॉक्टर ने प्रश्नार्थक चेहरे से उसकी ओर देखा.

“पिछले वर्ष आप ही गये थे ना कैलाश मानसरोवर? डॉक्टर, मुझे ठहरना ही है तो उस एकमात्र पवित्र सरोवर के जैसा, जो स्वयं कहीं नहीं जाता, आपके जैसे भक्त आते हैं वहां, डुबकी लगाने, पूजा करने. और अपने आप को धन्य मानने.”

पवित्र यात्रा की स्मृतियों से डॉक्टर के चेहरे पर भी मुस्कान फैल गई.

“तुम्हे किसी सायकोलॉजिकल काउंसेलिंग की जरूरत नहीं है नित्या. तुमसे ही हमें सीखना चाहिये कि कैसे एक ठहराव भी पूजनीय हो जाता है.”

आज नित्या ने अपनी सारी मेहनत चोटिल खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाने वाले कोच के रूप में लगा दी है. उसका पारदर्शी मानस वाकई एक ठहरा हुआ सा सरोवर है, जहां पर डुबकी लगाकर मनोबल पाते खिलाड़ी अपने आप को धन्य मानते हैं.❑

सम्पर्क : अनुध्वनि,
127, श्री नगर एक्स्टेंशन,
इन्दौर (म.प्र.)

आर्द्रता

सन्तोष सुपेकर

बहुत समय से लगातार तेज गति से चल रही ट्रेन शाम चार-पांच बजे के आसपास एक छोटे से रेलवे स्टेशन पर देर तक रुक गई तो यात्रियों ने राहत सी महसूस की. हमारे कोच के कुछ यात्री तो खिड़की-दरवाजों से बाहर झांकने लगे तो कुछ बाहर खड़े होकर धूम्रपान, तंबाकू, मोबाइल फोन, पानी भरने आदि में व्यस्त हो गए.

बाहर घने बादल छाए हुए थे और आसपास ढेर सारे हरे-भरे पेड़ होने के कारण मौसम बड़ा सुहावना प्रतीत हो रहा था.

"तू समझती क्या है अपने आपको?" अचानक हमारी तरफ आती जोरदार-गरजदार आवाज़ सुनाई दी तो सब चौंककर उस दिशा में देखने लगे. एक छोटी सी बंद छतरी हाथ में लिए एक आदमी साथ चल रही एक औरत (जो कि उसकी पत्नी थी) को बुरी तरह डाँटता-फटकारता ट्रेन की दिशा में चला आ रहा था.

"पहले तेरे भाई ने मेरा मजाक उड़ाया, तब तूने उसका साथ दिया. अभी परसों तेरी भाभी ने मेरी इंसल्ट की, तब भी तू चुप रही. ध्यान रखना, मैं उनकी भी अक्ल ठिकाने लगा दूँगा और तेरी भी. .." उसका गुस्सा इतना बढ़ता जा रहा था, लगा जैसे कुछ देर में औरत को पीटने लगेगा. औरत जार-जार रोती हुई तेज कदमों से पति के साथ-साथ चलती जा रही थी.

जैसे स्वादिष्ट पकवान खाते हुए मुँह में कोई कंकड़ आ गया हो, गरजती-बरसती वह आवाज़ सुनकर और ऐसा माहौल देखकर इतने खूबसूरत मौसम में भी हम देखने वालों के मुँह कड़वे हो आए.

तभी जोरदार बारिश चालू हो गई. बाहर खड़े यात्री अचकचाकर कोच के अंदर आने लगे. कोच के खिड़की-दरवाजों के काँच गिराए जाने लगे. उसी समय बाहर का दृश्य देखकर हमारे हालिया तल्खी से भरे चेहरे सामान्य हो गए, होंठों पर मुस्कान आ गई. सब उँगली उठाकर एक-दूजे को बाहर का दृश्य दिखाने लगे.

हमने देखा कि बारिश चालू होते ही लड़ते-झगड़ते, औरत को मारने पर उतारू, उस आदमी ने छतरी खोलकर औरत के सिर पर तान दी थी और खुद पूरी तरह भीगता हुआ उसके साथ-साथ चल रहा था.

हालाँकि उसका डांटना-फटकारना एवं औरत का रोना-धोना अब भी जारी था, लगातार...❑

सम्पर्क : 31,सुदामा नगर,
उज्जैन 456001 (मध्यप्रदेश)
मो : 9424816096❑

रूप देवगुण की दो लघुकथायें

माली

राकेश धवन व उसकी पत्नी अपने शिशु आशुतोष को दाखिल करवाने के लिए शिशु विद्या मन्दिर में ले गए. द्वार पार करते ही उन्होंने एक साधारण वेशभूषा पहने व्यक्ति को लॉन में पौधों को सींचते हुए देखा. राकेश धवन ने कहा, "मालीजी, प्रिन्सिपल साहब कहां हैं? हम उनसे मिलना चाहते हैं."

"सामने उनका दफ्तर है, जाइए उनसे मिल लीजिए." उसने उत्तर दिया.

वे दफ्तर में पहुंचे तो कुछ ही देर में वह व्यक्ति आकर प्रिन्सिपल की कुर्सी पर बैठ गया.

"आप प्रिन्सिपल हैं?" राकेश धवन ने कहा.

"हां, मैं ही हूं."

"सॉरी सर, मैंने आपकों माली समझा. मुझे क्षमा कर दीजिए. " राकेश धवन ने कहा.

"नहीं, इसमें सॉरी की कोई बात नहीं. आपने ठीक ही समझा. मैं माली ही तो हूं, इन पेड़-पौधों का भी और इस स्कूल के बच्चों का भी."❑

कुल जमा पूंजी

अब्बू छह वर्ष का बालक था. वह अपनी चाची को बहुत प्यार करता था. एक दिन जब वह अपने ननिहाल जाने लगा तो चाची से आकर बोला, "चाचीजी, मैं आपके लिए वहां से एक साड़ी, एक सूट और कुछ चूड़ियां लेकर आऊंगा."

चाची को यह सुनकर हंसी आई और अचरज भी हुआ. उसने अब्बू से कहा, "तुम्हें पता है, इन चीजों को खरीदने के लिए ढेर सारे पैसों की जरूरत होती है."

"मेरे पास हैं पैसे!"

"कहां हैं तुम्हारे पास पैसे?"

अब्बू तुरन्त अपने कमरे में जाकर गुल्लक उठा लाया. उसमें से कुछ जमा पूंजी दो रुपये निकाल कर चाची को दिखाते हुए बोला, "यह रहे पैसे."

अब चाची भाव-विह्वल हो आंखों के आंसुओं को रोकने का प्रयास कर रही थीं.❑

सम्पर्क : डॉ. गांधीवाली गली, 13/676,
गोबिन्द नगर, सिरसा-125055 (हरि.)
मो : 9812236096

विरेंदर ‘वीर’ मेहता की दो लघुकथायें

मंज़िलें और भी हैं

“नहीं आज नहीं.” कहता हुआ वह आगे बढ़ गया. ‘बार’ के बाहर खड़ा गार्ड भी हैरान था. सातों दिन पीने वाला शख्स आज बिना पिये जा रहा था.

उसके मन-मस्तिष्क में बेटी की बात घूम रही थी, “पापा, आज आप ड्रिंक नहीं करेंगे और चर्च में हमारे लिए ‘प्रेयर’ भी करेंगे.”

आखिर वह उस दोराहे पर आ खड़ा हुआ, जहां से एक रास्ता रैन-बसेरे की ओर से जाता था. वहाँ के गंदे-अधनंगे बच्चों के कुछ मांगने के लिए पीछे पड़ जाने की आदत के चलते वह उधर जाने से कतराता था. दूसरा रास्ता ‘सर्वशक्तिमान’ के दरवाजे पर जाता था, जिस ओर जाना उसने महीनों पहले बंद कर दिया था, क्योंकि ठीक एक वर्ष पहले उसके खुद के हाथों हुई दुर्घटना में अपने परिवार को खोने का जिम्मेदार भी वह ‘उसे’ ही मानता था.

‘क्या करे और क्या न करे’ की स्थिति में वह कुछ देर सोचता रहा और फिर एक ठंडी सांस लेकर बुदबुदाते हुए रैन बसेरे की ओर चल पड़ा. “नहीं बिटिया नहीं! मैं जीवन भर भटकता रहूँगा इन्हीं गलियों में, लेकिन अब ‘उधर’ कभी नहीं जाऊँगा.”

“अरे बाबू, कुछ खाने को देना.” जिस बात से वह डर रहा था, वही हुआ. रैन बसेरे के ठीक सामने शोर मचाते बच्चों में से कुछ बच्चों के साथ वह बच्ची भी उसकी टाँगों से आ चिपकी.

“अरे चलो, दूर हटो.” सहज प्रतिक्रियावश उसने बच्चों को दूर धकेल दिया और तेज कदमों से वहाँ से निकल जाना चाहा, लेकिन नीचे गिरे बच्चों में से बच्ची के रोने की आवाज से उसके पाँव अनायास ही थम गए. “कहीं लगी तो नहीं? बोल न, क्या खाएगी बिटिया?” वह खुद भी नहीं जानता था कि आज ऐसा क्यों हुआ, लेकिन कुछ क्षणों में ही वह उस बच्ची के साथ और बच्चों को भी ब्रेड लेकर बांट रहा था.

रोने वाली बच्ची अब मुस्करा रही थी और वह उसे एकटक देख रहा था. महीनों के बाद उसने आज ‘नैंसी’ को हँसते देखा था. “नैंसी मेरी प्यारी बेटी!” वह बुदबुदाया.

“क्या देख रहे हो पापा? आज मैं बहुत खुश हूं, आज आपने मेरी दोनों बातें मान लीं.”

“पापा!... दोनों बातें.” वह जैसे सोते से जाग गया हो. “हाँ, मान ही तो ली मैंने दूसरी बात भी. ये ब्रेड खाते बच्चे भी तो नन्हें-नन्हें ‘ईसा’ ही हैं और ये बच्ची मेरी नैंसी.”

“सुनो बेटी.” उसने जाती हुई बच्ची को पुकारा, “आज तुमने अपनी ही दुनिया में भटकते मुझ मुसाफिर को उसकी मंजिल का पता दे दिया है। थैंक्यू नैंसी, थैंक्यू...”

बच्ची कुछ नहीं समझी, पर वह मुस्कराता हुआ आगे बढ़ चला था.❑

दिन अभी ढला नहीं

“कितने साल गुजर गए सुधा, लेकिन ज़्यादा नहीं बदला हमारा गाँव. बस कुछ आधुनिकता की निशानियों को छोड़... वही बाग-बगीचे और वही हरे-भरे रास्ते.” शाम की सैर के बीच छाई चुप्पी को भंग करते हुए उमाशंकर जी ने पत्नी से बात शुरू की.

“सही कहा आपने. कुछ बगीचों की बाड़ जरूर टूटी-फूटी लकड़ियों की जगह मेटल की खपचियों से बन गयी है, पहले से सुंदर और ज़्यादा मजबूत. सुधा ने सामने नज़र आते बगीचों की बाड़ के उस पार लहलहाती फसल को निहारते हुए उत्तर दिया.

बरसों बाद लौटे थे वे गाँव. बहुत पहले ही अपनी जिद् के चलते अपना संयुक्त परिवार छोड़ बच्चों को लेकर विदेश चले गए थे, क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि गाँव के देहाती-अनपढ़ माहौल में उनके बच्चे सांस लें. और फिर समय गुजरता गया. उन्होंने अपने बच्चों को शिक्षित और आधुनिक नागरिक के साथ सफल इंसान भी बनाया, लेकिन शायद उचित संस्कार नहीं दे पाए. परिणामतः आज फिर वह अपने गाँव में लौट आए थे, नितांत अकेलेपन को लेकर।

“मैं जानता हूँ सुधा, तुम्हारे लिए गाँव में रहना कठिन है. बच्चों से मैं अपना अपमान बर्दाश्त कर सकता हूँ, पर उनका बार-बार तुम्हारा अपमान करना, यह बर्दाश्त नहीं होता था. खैर, उन्हें सही संस्कार नहीं दे सके, ये दोष भी तो हमारा ही है.”

“आप परेशान न हों. मुझे यहाँ कोई दिक्कत नहीं होगी.” पति की बात का उत्तर देते हुए वह कहने लगी, “सच तो ये है कि मैं सारा जीवन यही समझती रही कि उच्च शिक्षा और आधुनिक सभ्यता से ही हम संतान को एक अच्छा इंसान बना सकते हैं. लेकिन अब जाकर समझी हूँ कि संस्कार तो प्रकृति के

वो बीज होते हैं जो परिवार के बुजुर्गों और अपनों के सानिध्य-प्रेम में ही पैदा होते हैं. काश कि हमने अपने बच्चों की परवरिश यही परिवार के बीच रहकर की होती, तो जीवन की ढलती सांझ में हम अकेले नहीं होते."

"सुधा, बीता हुआ समय तो लौटकर नहीं आता, लेकिन हम चाहें तो अतीत का प्रायश्चित कर सकते हैं." उन्होंने अपनी नजरें पत्नी की ओर जमा दीं.

"कैसे...?"

"सुधा!" पत्नी की प्रश्नवाचक नज़रों को निहारते हुए उनकी आँखों में एक विश्वास था, "हमारे समाज में और भी बहुत से परिवार बिखरे हुए हैं या बिखरने की कगार पर है, जिन्हें हम चाहें तो..."

"हाँ क्यूँ नहीं, इससे बेहतर हमारे जीवन का आख़िरी पड़ाव और क्या होगा?" पति की अधूरी बात पर सहमति की छाप लगाते हुए सुधा ने मुस्कराते हुए पति का हाथ थाम लिया.❑

सम्पर्क : 62, गली नं. 7, नियर मंगल बाज़ार,
लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092
मो : 918130607208

खतरा

संजय सिंह

"साँप को मार दिया गया." आदमी ने उत्साह के साथ कहा, "बहुत खतरनाक साँप था. बहुत बड़ा विषधर! साढ़े तीन हाथ लम्बा!"

"साँप कहाँ था भाई?"

"सड़क किनारे झाड़ी में."

"तो आदमी को क्या खतरा था?" दूसरे आदमी ने कहा, "साँप तो झाड़ी में था..."

"अजीब अमहक आदमी हैं आप." पहला बिगड़ा, "साँप काटने से आदमी मर जाता है. किसी को काट लेता तब?"

"झाड़ी में जाकर साँप को मारना उचित नहीं." दूसरे आदमी ने साफ-साफ कहा.

"मतलब?" आदमी अकबकाया।

"मतलब साफ है." दूसरे आदमी ने कहा, "यहाँ जितना खतरा आदमी को आदमी से है... उतना झाड़ी में बैठे साँप से नहीं."

पहला आदमी लाजवाब हो गया.❑

साक्षी-भाव

संजय सिंह

स्वामी जी ने हंसाकार गद्दी पर बैठते हुए कहा, "आदमी को ऐश्वर्य्य और भोग-विलास मय जीवन से बचना चाहिए, इससे शरीर रूपी भगवान का दिया चोला गंदा होता है. सुख हो कि दुख साक्षी भाव से जीवन जीना चाहिए. कष्ट को प्रारब्ध मानना चाहिए. खुद भगवान राम ने कितने कष्ट सहे... राज-पाट को छोड़ कर दुख का जीवन चुना. वन गमन किया. पर्ण कुटी में घास पर सोये, वल्कल पहना..." उन्होंने सामने रखा चाँदी का गिलास उठाया, अनार का रस पीया और फिर कहा, "तो मैं कह रहा था साक्षी भाव..."

"ओह!" जैसे ही उन्होंने आसन बदला, गद्दी के नीचे काष्ठ में छिपी कील उनकी जंघा में चुभ गयी. वे दर्द से कराह उठे. अपने पट्ट-शिष्य भद्रेश्वर जी को माइक थमा कर वे लंगड़ाते हुए अंदर आराम-गृह में चले गए. भक्त-गण दौड़े. तुरंत डॉक्टर बुलाया गया. खून साफ किया गया. पट्टी की गयी. टिटबैक दिया गया.

वे इतने नाराज थे कि क्रोध उनके चेहरे से छलक रहा था. उन्होंने साफ-साफ कहा, "अब वे जीवन में कभी प्रवचन करने इस गाँव नहीं आएँगे. इतना पुअर मैनेजमेंट कहीं नहीं देखा..."

डॉयबिटिक भी थे, सात दिन में घाव सूखा! सातों दिन वे तपते रहे. सातवें दिन यज्ञ की समाप्ति पर भी क्रोधित ही थे. भक्तगण गिड़गिड़ाते हुए बोले, "स्वामी जी भूल-गलती हो गयी. अब क्षमा कीजिए. हमारी भक्ति साक्षी-भाव से रही है आपके प्रति. अब भविष्य में कुछ अपूर्व आसन बनाया जाएगा. सिर्फ फूल का आसन!"

स्वामी जी स्वास्थ्य-लाभ कर चुके थे. प्रसन्न होकर बोले, "साक्षी-भाव से अगर बुलाइएगा, तो आऊँगा... बस मैनेजमेंट में थोड़ा सुधार कीजिए. यह खयाल रखिए कि आपके यहाँ मैं क्यों आता हूँ, यह धर्म-कर्म की नगरी है इसलिए!" भक्त गण की खुशी का ठिकाना नहीं था, वे बारी-बारी से श्री चरण पर गिर रहे थे. स्वामी जी भी बारी-बारी से कह रहे थे... एवमस्तु! एवमस्तु!!❑

सम्पर्क : प्रिंसिपल,
पूर्णिया महिला कॉलेज,
पूर्णिया-854301
मो : 9431867283

काली बिल्ली

डॉ. गीता गीत

सड़क के इस पार भी भारी भीड़ जमा थी, सड़क के उस पार भी बहुत से लोग खड़े थे. जाम जैसी स्थिति हो चुकी थी. न तो उस तरफ के लोग इस तरफ आ रहे थे और न ही इस तरफ के लोग उस तरफ जा रहे थे. तभी एक नौजवान मोटर साइकिल लेकर आया और जमा भीड़ को संबोधित करते हुए बोला, "क्या हो गया है? क्यों खड़े हैं सब लोग?"

एक बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "काली बिल्ली ने रास्ता काट दिया है."

लड़के ने उपेक्षा से भीड़ की ओर देखा और लापरवाही से सिर को एक झटका सा दिया. मोटर साइकिल को स्टार्ट किया और तेजी से आगे बढ़ गया.

लड़के के जाते ही सड़क के दोनों तरफ की भीड़ छंट गई❑

सम्पर्क : 1050, सरस्वती निवास,
शक्ति नगर, गुप्तेश्वर,
जबलपुर (म.प्र.)

सबसे बड़ा भिखारी

स्मृति शेष : मुइनुद्दीन अतहर

सर्वेक्षक ने एक भिखारी से पूछा, "भारत में सबसे बड़ा भिखारी कौन है?"

भिखारी कुछ देर मौन रहा, फिर सर खुजाते हुए बोला, "सर! सबसे बड़ा भिखारी पुलिस वाला है."

सर्वेक्षक : "वह कैसे? पुलिस तो जनता की सेवक है."

भिखारी : "सर! आप तो पढ़े लिखे हैं. मैं भी पढ़ा-लिखा हूँ. ग्रेजूएट हूँ. मुझे इन पुलिसवालों ने ही भिखारी बनाया है. ये पुलिसवाले सबसे बड़े भिखारी हैं, क्योंकि ये भिखारियों से भी भिक्षा माँगने के पैसे वसूल करते हैं."

सर्वेक्षक के चेहरे के भाव बदलने लगे. आँखें लाल सुर्ख अंगारे के समान दहकने लगीं. वह जोर से दहाड़ा, "चुप्प!... पुलिस को बदनाम करता है. मैं सिविल ड्रेस में हूँ तो तू कुछ भी बकवास करेगा और मैं मान लूँगा. मैं सरकारी आदमी हूँ... समझा! तू यहाँ पर एक घंटे से खड़ा भिक्षा माँग रहा है, मैंने तुझसे कुछ माँगा क्या? नहीं ना? चल निकाल पाँच रुपये."

दोनों एक साथ बड़बड़ाए, "साला, भिखारी कहीं का.❑

(ककुभ-2 से साभार)

ध्वज की कराह

समीर उपाध्याय

एक पाठशाला में एक महोदय के कर कमलों से ध्वज को फहराने का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। पूरी पाठशाला को दुल्हन की तरह सजाया गया था। पूरे मैदान में फूलों और रंगों से रंगोलियां बनाई गई थी। रंग-बिरंगे पताके फहरा रहे थे। दीप झिलमिला रहे थे। वीर शहीदों पर भाषण दिए जाने वाले थे। देशभक्ति के गीत गाए जाने वाले थे। वातावरण में जैसे देशभक्ति की एक लहर फैल गई थी।

आखिर, ध्वज को फहराने का समय आ ही गया। खद्दर के श्वेत वस्त्रों में सजे और अपने वाक् चातुर्य से जनता को प्रभावित करने वाले महोदय पधार चुके थे। ध्वज को सलामी दी गई। महोदय ने ध्वज को फहराने के लिए रस्सी को खींचा, लेकिन रस्सी की गांठ खुली ही नहीं। महोदय ने फिर से रस्सी को खींचा, लेकिन रस्सी की गांठ खुलने का नाम नहीं ले रही थी। महोदय ने तीसरी बार रस्सी को जोर से झटका दिया और यकायक वातावरण बदल गया।

आकाश में काले बादल मंडराने लगे। बिजली चमकने लगी। भयानक मेघ गर्जना होने लगी। यकायक ध्वज से एक दर्द भरी चीख सुनाई दी- "त्राहिमाम!!! त्राहिमाम!!! त्राहिमाम!!! एक समय था जब मुझे फहराने के लिए लोग अपनी जान की परवाह किए बिना अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने के लिए तैयार रहते थे। आज अपने ये यकायक मौसम की तरह बदल क्यों गए? नहीं फहरना मुझे कागज के चंद टुकड़ों की खातिर अपने ईमान को बेच देने वाले व्यक्ति के हाथों। नहीं फहरना मुझे खुली हवा में। नहीं फहरना मुझे लहराती फिजाओं में। मुझे रस्सी की गांठ में ही बंद रहने दो। बंद रहने दो। बंद रहने दो।"❑

सम्पर्क : मनहर पार्क 96/ए
चोटिला: 363520
जिला: सुरेंद्रनगर (गुजरात)
मो : 92657 17398

पत्थर की आँख

डॉ. के.बी. श्रीवास्तव

मुरारी वर्मा नगर के चर्चित चित्रकारों में विशिष्ट स्थान रखते थे. उनकी प्रौढ़ावस्था लगभग पार हो चुकी थी. पिछले दो वर्षों में कोई चित्र प्रदर्शन का आयोजन नहीं हुआ, जिससे उनकी आर्थिक दशा बिगड़ गयी थी. अभी तक वे तीन मास से मकान का किराया भी चुकता नहीं कर पाये थे. इसकी चिंता उन्हें अलग सता रही थी. मकान मालिक बच्चा पाठक कई बार किराये के लिए तकादा भेज चुके थे. पर वर्माजी बेचारे करें तो क्या करें, उधार लेने की आदत उनकी थी नहीं, झूठ बोलना उनके संस्कार में नहीं था.

एक दिन रास्ते में वर्माजी की मुलाकात मकान मालिक से हो गयी. वे बोले, "वर्मा जी आपके तो दर्शन ही दुर्लभ हो गये हैं. कितनी बार किराये के लिए आदमी भेजा, पर किसी की आपसे भेट होती ही नहीं. हद कर दी आपने."

वर्माजी कुछ झेंपते हुए, कुछ सकुचाते हुए कहा, "क्या करूँ पाठकजी, इधर कुछ महीनों से रुपयों का प्रबंध नहीं हो पा रहा है. इसी के लिए कुछ भाग-दौड़ इधर ज्यादा बढ़ गयी है और जब तक रुपयों का इंतजाम नहीं होगा तब तक मेरी परेशानी बनी रहेगी. मैं अति शीघ्र आपके बकाया किराये का भुगतान कर दूंगा."

इस पर पाठकजी ने कहा, "मैं आपकी सब मजबूरी समझता हूँ, पर क्या करूँ, मैं भी तो किराये पर आश्रित हूँ. साथ ही साथ उधारी का असर अन्य किरायेदारों पर भी पड़ता है."

"वर्माजी, आप बहुत प्रसिद्ध चित्रकार हैं. मैं आज आपकी एक परीक्षा लूँगा. यदि आप सफल रहे तो सारा बकाया किराया माफ है. मंजूर हो तो बोलूँ."

वर्माजी ने कहा, "ठीक है, प्रश्न करें. प्रयास करूँगा कि सफल हो जाऊँ."

पाठक जी ने कहा, "मेरी एक आँख पत्थर की है जिसे आज तक मेरी माँ और डॉक्टर के अतिरिक्त कोई नहीं जानता. आपको बस इतना बताना है कि मेरी दोनों आँखों में कौन सी आँख पत्थर की है?"

वर्माजी ने बड़े गौर से दोनों आँखों को कुछ देर तक बड़ी गंभीरता से देखा, फिर शीघ्रता से कहा, "जी आपकी बायीं आँख पत्थर की है."

"आश्चर्य, घोर आश्चर्य! कैसे पहचाना वर्माजी? आपने तो कमाल कर दिया." यह कहते हुए पाठकजी वर्माजी के हाथ अपने हाथ में लेकर पाँच मिनट तक हिलाते रहे.

तब वर्माजी ने स्पष्ट करते हुए कहा, "आपकी दायीं आँख में दुनिया भर की नफरत, घृणा, द्वेष की झलक तैर रही थी, जबकि बायीं आँख शांत, स्थिर रहकर दया और सहानुभूति प्रकट कर रही थी."

पाठकजी इस उत्तर से इतना प्रभावित हुए कि वर्माजी के बकाये महीनों का सारा किराया माफ कर दिया.❑

सम्पर्क : जेपीआईपी मेडिकल साइंस एंड हास्पिटल,
रोड नं. 5, जूरन छपरा,
मुजफ्फरपुर (बिहार)
पिन- 842001

पूर्वाभ्यास

डॉ. कुँवर प्रेमिल

संपादक : प्रतिनिधि लघुकथाएँ वार्षिकी

"भाग्यवान, अब हम उम्रदराज हो चुके हैं. अब हमें भी सच्चाई का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए."

"मैं आपका मतलब नहीं समझी?"

"तुम मुझे कल से खाना बनाना, बर्तन माँजना, किचिन साफ करना, ठाकुर को भोग लगाना सभी कुछ सिखाओगी."

"पर क्यों भला, अभी तक तो मैं ही करती आई हूँ यह सब."

"मैं तुम्हें ए.टी.एम. से पैसे निकालना, बिजली बिल जमा करना, मकान टैक्स जमा करना, बाज़ार हाट, सौदा-सुल्फ खरीदना सिखाऊँगा."

पत्नी के आश्चर्यचकित होने पर- "देखो जी, तुम जो घर-गृहस्थी के कार्य करती हो मुझे सिखाओगी और घर के बाहर के काम जो मैं करता हूँ, तुम्हें सिखाऊँगा."

"मतलब!"

"हम दोनों में से किसी एक के न रहने पर उसका काम भी तो हममें से किसी एक को सँभालना पड़ेगा. तब कौन सिखाने आएगा, और कौन हमारी हर जरूरत को पूरा करता रहेगा."❑

सम्पर्क : एम.आई.जी.-8, विजय नगर,
जबलपुर-482002 (म.प्र.)
मोः 9301822782

बेड़ियाँ

स्मृति शेष : गुरुनाम सिंह रीहल

"अरे बचकर... थोड़ा देखकर चलो. अभी टोटके पर पैर रख देते तो तुम्हारा अहित हो जाता." रवि दीवान ने बाँह पकड़कर अपने ममेरे भाई रघुवर सावन को एक किनारे करते हुए कहा.

"मतलब!" रघुवर ने पलटकर पूछा.

"नहीं जानते?" दीवान ने झट उत्तर दिया- "शायद पहली बार सुबह सुबह घर से निकले हो. यदि हर रोज यूँ ही सुबह सवेरे निकलने की आदत डाल लोगे तो ऐसे टोकटे तुम्हें लोगों के घरों के सामने अथवा सड़क पर मिल ही जायेंगे."

"तुम यदि धागे में बंधे नींबू, हरे पत्ते, हरी मिर्च, लाल रंग की बात कर रहे हो, तो मैं यह बात स्पष्ट कर दूँ, मैं इन चीजों पर कतई विश्वास नहीं करता हूँ. यह अंधविश्वास है, इसके अलावा और कुछ नहीं है. मैंने तो कई बार ऐसे टोटकों को सड़क पर देखा है और जल्दबाजी में इन पर पैर रखते हुए आगे बढ़ गया हूँ. मुझ पर कभी आज तक इनका कोई असर नहीं हुआ है. कभी मुझे नहीं लगा, ये बेहद खतरनाक हैं, किसी बम की तरह." रघुवर ने लापरवाही से कहा.

"गलत! ये किसी बम से भी ज्यादा खतरनाक हैं." रवि दीवान ने दावे के साथ अपनी बात पर जोर देते हुए कहा- "क्योंकि बम से आस-पास खड़े लोग ही तबाह होते हैं, परन्तु ऐसे टोटों के स्पर्श से घर के घर भी संकट में आ जाते हैं."

"मैं नहीं मानता." रघुवर ने निर्भीकता के साथ अपनी ताल ठोंकी- "अरे भाई, जो टोटका साइकिल, स्कूटर, मोटर साइकिल, कार, ट्रक के चक्कों में पिस कर पिचक जाये वो कोई दैत्याकार राक्षस है अथवा कोई खंजर है या कोई तलवार है जो किसी के पैर रखते ही सामने वाले की अंतड़ियों को निकाल कर बाहर कर देगा. ज़रा सोचो- जो ऐसे हादसों से खुद को नहीं बचा सकते, वे दूसरों का क्या बिगाड़ेंगे."❑

(ककुभ-2 से साभार)

श्रेय

गोविंद शर्मा

शहर में रहते हुए गांव आधारित राजनीति में भाग लेकर आपने खूब तरक्की की है। वाह, इसका श्रेय किसे जाता है? आपके पूंजीवाद या आपके समाजवाद को?

दोनों को ही नहीं। श्रेय तो मेरे 'अवसरवाद' को जाता है।❑

मीठी नीम, कड़वी नीम

आशा भाटी

एक महल.

उसके सामने झोंपड़ी.

महल के सामने कड़वी नीम!

झोंपड़ी में पनपी एक मीठी नीम!

मीठी नीम के लिए सुबह से ही झोंपड़ी के सामने होती भीड़.

गृहस्वामिनी हँस-हँसकर, दो-दो, चार-चार पत्तियाँ देकर सभी को संतुष्ट करती.

इधर यदि कोई कड़वी नीम लेने वाले आते तो महल के लठैत उन्हें खदेड़ भगाते. एक दिन झोंपड़ी सूनी देखकर महल ने मीठी नीम काट डाली और अपने आँगन में रोप दी. न प्यार था, न पानी, मीठी नीम सूखकर ठूँठ हो गई. उधर झोंपड़ी में खड़ा ठूँठ पुनः लहलहाने लगा. उसके तने को प्यार से सींचा जो जा रहा था.

इसलिए और एक दिन वैसी की वैसी भीड़ झोंपड़ी के सामने फिर इकट्ठी होने लगी. महल की तरफ कोई फूटी आँखों से भी नहीं देख रहा था.❑

सम्पर्क : एम.आई.जी.-8, विजय नगर,
जबलपुर-482002 (म.प्र.)
मोः 9301822782

दुश्मन

गोविंद शर्मा

उसे खुद की ओर आता सांप दिखाई दिया। उसे मारने के लिये लाठी उठाई। सांप भी चौकन्ना था। उस आदमी से दूर खड़ा रह कर बोला- "मुझे क्यों मार रहे हो? मैं तुम्हारा ही काम करके आया हूं। अभी अभी मैं तुम्हारे सबसे बड़े दुश्मन को डस कर आया हूं।"

आदमी खुश हो गया, पर अपनी खुशी प्रकट नहीं की। वह लाठी मारता रहा। सांप पर नहीं, सांप के आसपास की ज़मीन पर। भीतर की खुशी के कारण वह असावधान हो गया और उसी सांप ने उसे डस लिया।❑

सम्पर्क : ग्रामोत्थान विद्यापीठ,
संगरिया-335063,
जिला- हनुमानगढ (राज.)
मो : 9414482280.

वफादार पति

राकेश भ्रमर

समिता ने प्रेम-विवाह किया था, परन्तु वह अपने पति से खुश नहीं थी. शादी के बाद से ही वह उसकी बुराई करने लगी थी. अपनी सहेलियों के बीच हमेशा उसके बारे में कहती रहती, ''सिद्धार्थ अब मुझे पहले जैसा प्यार नहीं करता.''

''ऐसा क्या हो गया?'' किसी सहेली ने पूछ लिया.

''अरे, जब देखो तब काम में व्यस्त रहता है. मुझे पहले की तरह कहीं घुमाने नहीं ले जाता, मेरी पसंद का ख्याल नहीं करता. लगता है, अपने ऑफिस की किसी लड़की के साथ चक्कर चला रखा है. तभी तो देर से घर लौटकर आता है.''

''मैडम, शादी के पहले की बात और होती है. शादी के बाद पति-पत्नी की जिम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं. तुम उन जिम्मेदारियों को नहीं समझती, परन्तु तुम्हारा पति समझता है. वह काम नहीं करेगा, तो परिवार कैसे चलेगा?'' एक और सहेली ने कहा.

सहेलियां उसे समझातीं. इसके बावजूद समिता की अपने पति के प्रति कटुता बढ़ती ही गई. जब भी कोई सहेली मिलती, अपने पति की बुराई शुरू कर देती. अब तो वह पड़ोस की औरतों से भी पति की बुराई करने लगी थी कि वह उसकी तरफ ध्यान नहीं देता. जरूर किसी लड़की से उसका चक्कर है.

उसके मुंह से पति की बुराइयां सुनते-सुनते उसकी सहेलियां तंग आ गई थीं. एक दिन उसकी अभिन्न सहेली पूर्वा ने कह ही दिया, 'तुमको अपने पति में इतनी कमियाँ नज़र आती हैं, तो फिर उसे बदल क्यों नहीं देती. तलाक़ देकर दूसरी शादी कर लो.''

समिता अचानक चौंक गयी, ''तलाक़, अरे नहीं, वह इतना भी बुरा नहीं है. बस मेरी तरफ़ ध्यान कम देता है.''

उसकी सहेली चिढ़कर बोली, ''सारा दिन तुम्हारा ध्यान रखेगा तो काम कब करेगा. पति काम करता है, तभी तो तुम इतने ठाठ-बाठ से रह रही हो.''

''मुझे लगता है, वह मेरे प्रति वफादार नहीं है.'' समिता ने सहेली की बात पर ध्यान न देते हुए कहा.

पूर्वा कुछ देर सोचती रही, फिर बोली, ''तुम्हारा पति वफादार नहीं है तो उसे तलाक देकर किसी कुत्ते से शादी कर लो. उससे अधिक वफादार पति और कोई नहीं मिलेगा. न वह काम पर जाएगा, न तुम्हें किसी बात के लिए टोंकेगा. बस केवल तुम्हारी बात सुनेगा. जहां कहोगी, बैठ जाएगा. जहां कहोगी, घूमने चल देगा. किसी और घर की तरफ मुंह भी नहीं मारेगा. फिर तुम्हें अपने पति से कोई शिकायत नहीं होगी.''

समिता को पता नहीं अपनी सहेली की बात समझ में आई या नहीं, परन्तु उसके बाद उसने सहेलियों के बीच पति की बुराई करनी बंद कर दी.❑

परख

कृष्ण मनु

उस तृतीय श्रेणी के लिपिक का जुनून कहिए, तमन्ना या फिर मन की भावनाओं को भाषा में ढालकर लोगों के बीच बाँटने की तीव्र इच्छा, उसने स्वरचित पाण्डुलिपि के प्रकाशन में अपने जीपीएफ के पैसे भी लगा डाले.

पुस्तक की प्रथम प्रति उसने महाप्रबंधक को भेंट करनी चाही. निजी सहायक ने भेंट नहीं करने दिया. अपने तत्काल बॉस को भेंट की, कुछ लिखने में व्यस्त उसने सिर उठा कर देखा भी नहीं.

“रख दो.” उपेक्षित और खुरदरी आवाज़ सुनकर वह सहम गया.

चेम्बर्स से निकलने के क्रम में पिऊन से टकराते टकराते बचा.

“नई किताब दबी है बगल में. क्या है बाबू, जरा मुझे भी दिखाइए.”

“छोड़ो, यह तुम्हारे मतलब की नहीं.”

“आपने लिखी है, तब तो मैं जरूर देखूँगा.” इच्छा के विपरीत उसने लगभग छीन ही ली किताब. उलट पलट कर देखने के पश्चात हो हो कर हंसने लगा- “मैं निरक्षर भला क्या समझूँगा?” फिर जेब टटोलने लगा, दो मुड़े-तुड़े से दस के नोट निकले- “लो बाबू, रख लो.”

दो कदम पीछे हटकर बौखलाया हुआ वह बोला- “यह... यह क्या कर रहे तुम? किताब तुम्हें पसंद है तो रख लो। तुमसे पैसे लूँगा?”

“रख लो बाबू, साग-सब्जियां भी मुफ्त में नहीं मिलतीं। यह तो सुरसती जी हैं।” माथे से लगाया- “दसवीं में बिटिया पढ़ती है न, उससे पढ़वा कर सुनूंगा. शेष पैसे अगली तनख्वाह में दे दूँगा बाबू.”

वह घंटी बजते ही साहब के चेम्बर में घुस गया.❑

सम्पर्क : आर 451, महालक्ष्मी नगर,
इंदौर - 452 010 (म.प्र.)
मो : 9425067204

डॉ. ऋचा शर्मा की दो लघुकथायें

नॉट रीचेबल

पत्नी का देहांत हुए महीना भर ही हुआ था. घर में बड़ा अकेलापन महसूस कर रहे थे. बेटा-बहू, बच्चे अपना-अपना लैपटॉप लेकर कमरों में बंद हो जाते थे. घर खाने को दौड़ रहा था. पत्नी के जाते ही हाथ-पाँव जैसे कट से गए थे, कुछ सूझ ही नहीं रहा था. अब समझ में आ रहा है कि बेटे बहू की बातें भी वह अपने तक ही रखती थीं. समय रहते कद्र नहीं समझी मैंने उसकी, गुमसुम बैठ सोच रहे थे.

तभी बेटा आकर बोला, "पापा! एक बात करनी थी आपसे. असल में ऑनलाइन क्लास के लिए सबको अलग कमरा चाहिए. मम्मी रही नहीं तो अब..." वे चश्मा उतारकर उसे देखने लगे- तो?

"क्या है सुमन आपके साथ कम्फर्टेबल फील नहीं करती. गैरेज के पास जो कमरा है आप उसमें रह लेंगे क्या?

"हाँ..." उन्होंने गहरी साँस ली. अगले दिन वे फ्लाइट्स के चार टिकट ले आए. बहू से बोले, "बेटी! बहुत दिनों से तुम लोग कहीं घूमने नहीं गए हो. मैंने केरल में होटल की बुकिंग करवा दी है, खर्चे की चिंता मत करना. बच्चों की ऑनलाइन क्लासेस हैं और तुम दोनों का काम भी घर से ही हो रहा है तो तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी." सब खुश हो गए. बेटा भौचक्का था, बोला, "पापा आप नाराज नहीं हैं ना मुझसे? मुझे लगा था कि..."

"अरे! अपने बच्चों से भी कोई नाराज होता है." वे मुस्कुराकर बोले.

बेटे बहू के जाने के बाद दूसरे दिन ही मकान के खरीददार आ गए. अपना बंगला बेचकर वे वन बेडरूम के छोटे फ्लैट में शिफ्ट हो गए. बेटा घूमकर लौटा तो वॉचमैन ने बेटे को एक पत्र दिया, जिसमें बेटे के किराए के फ्लैट का पता लिखा हुआ था. पिता का फोन नॉट रीचेबल बता रहा था.❑

एक और फोन कॉल

फोन की घंटी बजती तो पूरे परिवार में सन्नाटा छा जाता. किसी की हिम्मत ही नहीं होती फोन उठाने की. पता नहीं कब, कहाँ से बुरी खबर आ जाए. ऐसे ही एक फोन कॉल ने तन्मय के ना होने की खबर दी थी. तन्मय कोविड पॉजिटिव होने पर खुद ही गाड़ी चलाकर गया था अस्पताल में एडमिट होने के लिए. डॉक्टर्स बोल रहे थे कि चिंता की कोई बात नहीं, सब ठीक है. उसके बाद उसे क्या हुआ कुछ समझ में ही नहीं आया. अचानक एक दिन अस्पताल से फोन आया कि तन्मय नहीं रहा. एक पल में सब कुछ शून्य में बदल गया. ठहर गई जिंदगी. बच्चों के मासूम चेहरों पर उदासी मानों थम गई. वह बहुत दिन तक समझ ही नहीं सकी कि जिंदगी कहाँ से शुरू करे. हर तरह से उस पर ही तो निर्भर थी अब जैसे कटी पतंग. एकदम अकेली महसूस कर रही थी अपने आप को. कभी लगता क्या करना है जीकर? अपने हाथ में कुछ है ही नहीं तो क्या फायदा इस जीवन का? तन्मय का यूँ अचानक चले जाना भीतर तक खोखला कर गया उसे.

ऐसी ही एक उदास शाम को फोन की घंटी बज उठी, बेटी ने फोन उठाया. अनजान आवाज में कोई कह रहा था, "बहुत अफसोस हुआ जानकर कि कोविड के कारण आपके मम्मी-पापा दोनों नहीं रहे. बेटी! कोई जरूरत हो तो बताना, मैं आपके सामनेवाले फ्लैट में ही रहता हूँ."

बेटी फोन पर रोती हुई, काँपती आवाज में जोर-जोर से कह रही थी, "मेरी मम्मी जिंदा हैं, जिंदा हैं मम्मा. पापा को कोविड हुआ था, मम्मी को कुछ नहीं हुआ है. हमें आपकी कोई जरूरत नहीं है. मैंने कहा ना मम्मी...जिन्दा हैं."❑

सम्पर्क : अध्यक्ष, हिंदी-विभाग,
अहमदनगर कॉलेज,
अहमदनगर-414001 (महाराष्ट्र)
मो : 9370288414

इधर उधर की...

पप्पू पर बिजली का तार गिर गया.
पप्पू तड़प-तड़प कर मरने ही वाला था कि अचानक उसे याद आया कि बिजली तो 2 दिन से बंद है.
वह उठकर हंसते हुए बोला, "साला, याद नहीं आता तो मर ही जाता."

जंगल की ओर

राम मूरत 'राही'

शहर की एक कॉलोनी में लगे मोबाइल टावर के पास, नीम के पेड़ पर बैठा एक चिड़ा अचानक धरती पर आ गिरा और थोड़ी देर तड़पने के बाद उसने दम तोड़ दिया। तभी एक चिड़िया अपने दो नन्हे बच्चों के साथ वहाँ आई और चिड़ा को मृत पड़ा देखकर विलाप करने लगी। दोनों नन्हे बच्चे भी अपनी माँ को रोता देखकर, जोर-जोर से रोने लगे। कुछ देर बाद उन में से एक बच्चे ने अपनी माँ से सिसकते हुए पूछा- "माँ! पिताजी को क्या हो गया है और आप रो क्यों रही हैं?"

चिड़िया ने सिसकते हुए बताया- "बेटा! अब तुम्हारे पिता की मृत्यु हो चुकी है।"

"माँ! पिता जी की मृत्यु कैसे हुई?" दूसरे बच्चे ने सिसकते हुए पूछा।

"बेटा! मोबाइल टावर से निकलने वाले रेडिएशन की वजह से।"

"माँ! क्या रेडिएशन से एक दिन हम भी मर जाएंगे?" पहले बच्चे ने मासूमियत से पूछा।

"नहीं बेटा! इससे पहले कि हम पर भी मोबाइल टावर से निकलने वाले रेडिएशन का दुष्प्रभाव पड़े, हम ये शहर छोड़कर ऐसे गाँव में जाएंगे, जहाँ मोबाइल के टावर न हों।"

चिड़िया इतना कह कर चिड़ा को आखिरी बार देखकर, फिर अपने दोनों बच्चों को साथ लेकर गाँव की तरफ उड़ गई।

गाँव में एक पेड़ पर घोंसला बनाकर रहते हुए अभी उसे कुछ ही दिन हुए थे कि एक दिन चिड़िया बहुत ज्यादा बीमार पड़ गई। तब उसके एक बच्चे ने माँ को बीमार देखकर पूछा- "माँ ! आपको क्या हो गया है?"

"बेटा! शहर छोड़कर हम गाँव इसलिए आए थे कि यहाँ हमारी जान को कोई खतरा नहीं होगा, लेकिन हम यहाँ भी सुरक्षित नहीं हैं।"

"कैसे माँ? यहाँ तो मोबाइल टावर भी नहीं हैं।" एक बच्चे ने पूछा।

"बेटा! यहाँ मनुष्य ज्यादा फसल की पैदावार लेने के लालच में साग-सब्जी के खेतों में रसायनिक खाद डाल रहा है और फसलों में अधिक मात्रा में कीटनाशकों का छिड़काव भी कर रहा है, जिससे साग-सब्जियाँ जहरीली हो रही हैं। हम पंक्षी इसे खाकर बीमार पड़ते हैं और फिर अपनी जान गवाँ देते हैं?"

"माँ! अब हम कहाँ जाएंगे?" दूसरे बच्चे ने चिंतित होकर पूछा।

"बेटा! मैं तो अब कहीं नहीं जा पाऊँगी, क्योंकि मेरा अंत निकट आ गया है। हाँ... अब तुम दोनों यहाँ से दूर जंगल में चले जाओ, जहाँ मनुष्य की छाया नहीं पड़ी हो।"❑

सम्पर्क : 168-बी, सूर्यदेव नगर,
इंदौर-452009 (म.प्र.)
मो : 94245 94873

खंडहर

गोविंद शर्मा

मेरा गामोली, पुराना दोस्त वर्षों बाद मिला, शहर में। फोटोग्राफर-कम-एक्टिविस्ट, यह परिचय दिया उसने अपना। बोला, "आजकल मैंने पुराने महल, दुर्ग, कुआँ-बावड़ी आदि के संरक्षण की मुहिम चला रखी है। उनकी नहीं, जिनकी देखभाल होती है, उनकी, जो खंडहर हो चुके या होने वाले हैं। उनसे बातें करता हूँ। उनकी तस्वीरें लेता हूँ और प्रसारित-प्रचारित कर लोगों को उनके संरक्षण की प्रेरणा देता हूँ। आओ, तुम्हें अपनी फोटो प्रदर्शनी दिखाता हूं।"

गजब के फोटो थे। कभी कितने भव्य होते होंगे ये महल? खंडहरों के चित्र देखते-देखते एक जगह मैं ठिठक गया। अभी उस फोटो को देखा ही था कि वह बोल पड़ा- "यह? मुझे तो अपने गाँव गये दस से ज्यादा साल हो गये। एक दिन मुझे अपनी गाँव के कुएँ की याद आ गई। मैंने अपने सहायक को उसकी फोटो लेने के लिये भेज दिया। उसने कुएँ आदि के साथ ही इनकी भी फोटो ले ली। पता नहीं इनमें उसको क्या कलात्मकता नजर आई कि फोटो भी खंडहरों के बीच लगा दी। ये मेरे...।"

"मैं जानता हूँ। ये तुम्हारे पिताजी हैं। वर्षों से वहाँ गाँव में अकेले हैं। उनकी कोई सार संभाल करने वाला नहीं है। तुम्हारे सहायक ने इन्हें यहां शायद इसलिए स्थापित कर दिया कि तुम इन्हें मानवी खंडहर मान लो तो इनके प्रति भी कुछ लगाव तुम्हारे दिल में उमड़ आए।"

खंडहरों के संरक्षण की बात करने वाला मेरा दोस्त अब मौन था।❑

सम्पर्क : ग्रामोत्थान विद्यापीठ,
संगरिया-335063
जिला- हनुमानगढ़ (राजस्थान)

डॉ. रामकुमार घोटड़ की तीन लघुकथायें

और वह एक औरत है

''यार! भाभीजी के बारे में बस्ती वाले हमेशा ही कुछ-न-कुछ कानाफूसी करते रहते हैं...।''

''क्या...ऽ...ऽ...?''

''यही कि वो दिनभर मजदूरों के साथ काम करती है। न जाने क्या-क्या करतब करती होगी?''

''मैं भी धागा मिल में मजदूरी करता हूँ, उसमें अधिकतर मजदूरनियां ही काम करती हैं, तब तो मेरे बारे में भी बस्ती वाले कुछ फुसफुसाहट करते होंगे।''

''नहीं तो।''

''क्यों...?''

''तुम तो एक मर्द हो न।''

''और वह एक औरत है...इसलिए...?''❑

मानव सभ्यता

बिजली के लरजते तारों पर एक कमेड़ी उदास, चिन्तित-सी बैठी हुई थी। कहीं से उड़ता हुआ एक कबूतर उसके पास आ बैठा और उसकी चिन्ता का कारण जानना चाहा।

''वर्षों से कोशिश कर रही हूँ, वंश वृद्धि नहीं हो पा रही...।''

''क्यों कोख हरी नहीं हो रही, क्या तुम्हारे आदमी में कमी है...?''

''नहीं! ऐसी बात नहीं, कोख तो हरी होती है...।''

''तो फिर...?''

''अण्डे देने को कोई सुरक्षित, उचित स्थान नहीं मिला। बदलते युग की इस मानवीय सभ्यता की नई शैली ने पेड़-पौधे खत्म कर दिये और अपने आलीशान इमारतों में घोंसला बनाने की जगह नहीं छोड़ रहे...।''

''हाँ, सच है बहन।'' कबूतर बुदबुदाया- ''अगर मानवीय प्रवृत्ति ऐसे ही पनपती रही तो मानव जीवन की कगार पर समझो...।'' कबूतर अपने गन्तव्य स्थान की ओर उड़ चला।❑

शब्दों के घाव

एक गढ़-किला के म्युजियम में अवलोकनार्थ ऐतिहासिक सामग्री रखी हुई थी और साथ में रखे हुए थे उनके मालिकों के शौर्यगाथाओं के कलमबद्ध दस्तावेज।

उनमें से एक तीर ने अकड़ते हुए नजदीक पड़ी तलवार से कहा- ''मेरा घाव गहरा होता है, मैं इस तरीके से मार करता हूँ कि वो दिखाई भी न दे और चोटिल दर्द भरी आवाज में कराहता रहे...।''

''नहीं...। मेरा घाव सबसे गहरा होता है।'' तलवार ने दम्भ भरते हुए कहा- ''मैं जहाँ भी प्रहार करती हूँ तो अंग धड़ से ही अलग हो जाता है, और उसकी निशानियाँ शरीर पर ता-उम्र बनी रहती है।''

पास में रखी पुस्तक से शब्दों ने झाँककर उनकी ओर देखा और मुस्कुराते हुए बोली- ''बहुत नासमझ हैं ये...।''❑

सम्पर्क : निराला अस्पताल,
सादुलपुर, चूरू-331023
मो : 9414086800, 7976194765

लड़की वाले : हमें लड़का पसन्द नहीं है.
लड़के वाले : जी, पसन्द तो हमें भी नहीं है, पर क्या करें? घर से निकाल दें क्या?

❑❑

पापा : नालायक, कम से कम एक बुक तो खोलकर देख लिया कर!
पप्पू : क्या बात करते हो पापा, मैं तो रोज एक बुक खोलकर देखता हूं.
पापा : कौन सी बुक?
पप्पू : फेसबुक!

❑❑

लड़की : आज मेरे भाई ने मुझे तुम्हारे साथ बाइक पर देख लिया.
लड़का : ओ तेरी, तो फिर क्या हुआ बाद में?
लड़की : फिर क्या, बस का किराया ले लिया...फैमिली बहुत सख्त है मेरी!

गोविन्द भारद्वाज की तीन लघुकथायें

गृहस्थी का रथ

"दिव्या तुम बड़े परिवार की इकलौती बेटी हो... भला तुम्हारे लिए रिश्ते की कोई कमी होगी... एक से बढ़कर एक रिश्ते आएंगे तेरे लिए।" माँ ने दिव्यांग बेटी को समझाते हुए कहा।

"लेकिन माँ मैं सिर्फ ऐसे लड़के से शादी करूँगी... जो मेरे जैसा ही हो... वो भी दिव्यांग की श्रेणी में आता हो।" दिव्या ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

"बेटी! ये क्या कह रही है तू?"

"माँ मैं बिल्कुल ठीक कह रही हूँ। अगर मैं और मेरा पति एक जैसे होंगे... तो हम दोनों के बीच अक्षमता को लेकर कोई कुटिल विचार नहीं आएंगे। एक-दूसरे की भावनाओं को समझ सकेंगे।" दिव्या बोली।

तभी पड़ोस के घर से जोर-जोर से आवाजें आने लगीं।

"देखो मैंने तुम से शादी करके तुम पर अहसान किया है. .. तुमने अपनी सूरत आइने में देखी हैं कभी।" पड़ोसी रोहित अपनी पत्नी पर चिल्लाते हुए कहा रहा था।

"हाँ... हाँ... मैं नहीं हूँ, तुम जितनी सुंदर! लेकिन मेरे बाप ने भी तुम्हें मुंह माँगी रकम दी थी, हरे-हरे नोटों के सामने तुम्हारी खूबसूरती फीकी पड़ गयी थी, मेरे सामने।" रोहित की पत्नी ने भी पलट कर जवाब दिया।

दिव्या बोली, "देख लिया न... अपने पड़ोस का हाल... क्या अब भी तुम!"

"ना मेरी बच्ची... तू जो कह रही है, बिल्कुल ठीक है। गृहस्थी के रथ के दोनों पहिए बराबर होने चाहिए।" माँ ने बेटी को गले लगाते हुए कहा।❑

ईश्वर

ज्योत्स्ना मंदिर जा रही थी। उसकी पूजा की टोकरी में कुछ फल थे। उन फलों को देखकर एक भूखे बच्चे का मन ललचा गया। उसने ज्योत्सना के पास जाकर कहा, "आंटी मुझे एक फल दो ना. .. मुझे भूख लगी है।"

उस गरीब बच्चे को देखकर ज्योत्सना ने कहा, "बेटा यह तो ईश्वर के लिए हैं।"

"मैं ही तो ईश्वर हूँ।" बच्चे ने बड़ी मासूमियत से जवाब दिया।

"तुम ईश्वर हो... किसने कहा यह सब तुम से...?" ज्योत्सना ने मुस्कुराते पूछा।

"अरे ईश्वर... तुम यहां? मैं कब से तुम्हें ढूँढ़ रही हूँ... चल मेरे साथ, तेरे लिए किसी घर से कुछ खाने के लिए माँगती हूँ।" एक भिखारिन ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा।

"जरा ठहरो... यह लो बेटा, फल खा लो...।" ज्योत्सना ने बच्चे को रोकते हुए कहा।

"बहन जी... ये तो शायद आप मंदिर में ले जा रही हैं!" भिखारिन बोली।

"नहीं रे... मैं तो ईश्वर के लिए ही लायी थी, और वो मुझे मंदिर पहुँचने से पहले ही मिल गया...।" उस बच्चे को सहलाते हुए ज्योत्सना ने जवाब दिया।❑

रक्तदान

"तुम से कितनी बार कहा है कि रक्तदान मत किया करो... देखो तुम्हें कुछ हो गया तो मेरा क्या होगा... इस छोटे बच्चे का क्या होगा?" मालती ने रक्त-शिविर में जा रहे गौरव को टोकते हुए कहा।

"अरे मालती, तुम तो बेकार में इतनी चिंता कर रही हो। खून देने से जान को कोई खतरा नहीं होता; बल्कि किसी की जाती हुई जान को बचाया जाता है। जरा सोचो सभी तुम्हारी तरह सोचने लग जाएं, तो भला ब्लैड बैंक में खून कहाँ से आएगा।"

गौरव पत्नी मालती को तसल्ली देकर घर से निकल गया।

लगभग आधे घंटे बाद मालती के पास एक अजनबी का फोन आया। मालती बदहवास होकर टैक्सी पकड़ सिटी हॉस्पिटल पहुंच गयी। पूछताछ खिड़की से पता कर मालती आईसीयू में पहुँची। दरअसल गौरव का रास्ते में एक्सीडेंट हो गया था। उसके सिर में गम्भीर चोट आई थी। खून काफी बह चुका था। डॉक्टर ने उसे बताया कि गौरव को खून की जरूरत है। मालती माथा पकड़कर बैठ गयी। वो अकेली कैसे खून का इंतजाम करेगी।

अचानक किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा। "आप कौन?" मालती ने पूछा। "बहन जी, मैं सलीम हूँ। गौरव भाईजान ने छः महीने पहले मुझे खून देकर मेरी जान बचाई थी। उनका मुझ पर कर्ज है, बस वही चुकाने आया हूँ।" एक नौजवान युवक ने कहा। मालती की आँखों में चमक आ गयी। उसके कानों में गौरव के कुछ देर पहले कहे शब्द गूँज गये कि रक्तदान से जान जाती नहीं, बल्कि बचायी जाती है।❑

सम्पर्क : पितृ कृपा, बी-ब्लॉक,
4/254, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,
पंचशील नगर, अजमेर (राजस्थान)
पिन - 305004

डॉ. शील कौशिक की दो लघुकथायें

परख

दिवाली आनेवाली है। रंग-रोगन कराने से पूर्व महेश को अपने घर की टूट-फूट, दीवारों में आई दरारों तथा जगह-जगह से उखड़े प्लास्तर की मरम्मत कराने हेतु मजदूर की आवश्यकता पड़ी। वह सवेरे-सवेरे शहर के मटका चौक पर पहुंच गया। यहां मजदूरी मिलने की ताक में लेबर दिन भर बैठी रहती है, इसीलिए इस चौक को लेबर चौक के नाम से भी जाना जाता था।

वह एक-एक मजदूर को परखने लगा। कई गबरू, नौजवान यह सोच कर कि पहले उन्हीं से पूछा जाएगा, अकड़ कर खड़े हो गए। महेश ने एक-एक पर नजर डालता और हटा लेता। ऐसा करते हुए उसे करीब 15-20 मिनट हो गए थे।

“मजदूर ढूंढ़ने आए हो या कोई खोया हुआ अपना रिश्तेदार?” बाईं ओर से किसी हट्टे-कट्टे मजदूर का व्यंग्य बाण चला।

उसके सिर में ठां-सा बजा यह वाक्य। उसे सचमुच अपना बिछुड़ा चाचा याद आ गया, जिनका वह अत्यंत लाडला था। मन में भावनाओं की नदी उमड़ पड़ी, अपनी नाममात्र की कमाई होने पर भी वे मुझे मेरी पसंद की जलेबी खिलाना कभी नहीं भूले थे।

उसकी निगाह दूर शांत भाव से बैठे एक अधेड़ व्यक्ति पर टिक गई। टिक क्या गई, वह उसे अपने स्कूटर के पीछे बैठा ले चला।

“लो भई, इसे तो यह थका-मांदा, बूढ़ा ही पसंद आया।” पीछे से कुछ मजदूरों की आवाज आई।

“चाचा लगता है क्या तुम्हारा?” एक और आवाज पीछे से सुनाई पड़ी।

इस बार उसने स्कूटर रोका और कहा, “हां, यही समझ लो!”❑

बदलती प्रश्नावली

स्वाति अब सातवीं कक्षा में आ गई है। माहवारी आने के साथ उसके शरीर में अब बदलाव आने लगे हैं।

स्कूल से लौटने पर मम्मी का पहले की भांति उससे प्रश्न पूछना अब भी जारी है...

“क्या स्कूल के टॉयलेट में गई थी?”

“कोई शिक्षक तुम्हारा हाथ तो नहीं पकड़ता?”

“अकेले में तो नहीं बुलाया?”

“कोई तुम्हारी तरफ घूरता तो नहीं?”

“किसी से तुम खाने की चीजें तो नहीं लेती हो?”

“वैन का ड्राइवर तुम्हें छूने का प्रयास तो नहीं करता?”

“ये मम्मी को क्या हुआ है अब? पहले तो कभी ऐसे प्रश्न नहीं पूछती थीं?”

स्वाति की झुंझलाहट बढ़ गई। कभी वो समय था, जब मम्मी रसोई में रोटियाँ बेलते हुए प्यारे, परवाह भरे, मजेदार और मेरे मनपसंद प्रश्न पूछती थीं।

“बेटा, लंच में आज मैंने बर्गर रखा था, अच्छा लगा न! खाया भी या बांट दिया? म्यूजिक पीरियड में क्या किया? कौन-कौन से गेम खेले? आज आर्ट्स एंड क्राफ्ट के पीरियड में क्या बनाया? होमवर्क पूरा न करने पर किसी ने डांटा तो नहीं?”

“स्वाति आज तेरे प्यारे दोस्त निशान्त से झगड़ा तो नहीं हुआ?”

“क्या मम्मी! आप भी न, कितना ख्याल रखती हो मेरा,” कह कर स्कूल से लौटने के बाद कंधे से स्कूल बैग उतारते ही मैं झट से मम्मी के गले लग जाती थी।

और जब कभी मम्मी प्रश्न नहीं पूछती थीं, तो मैं खुद शुरू हो जाती थी, “आज मैंने ये किया... वो किया... आज तो मम्मी निशांत को मैंने चपेट मार दी, बड़ा समझता था अपने-आप को. ..”

यह सब सोचते वह यूनिफार्म बदलने कमरे में जाने लगी। मम्मी की प्रश्नावली जारी थी, “कोई तुम्हारी अत्यधिक प्रशंसा तो नहीं करता...?”

आखिरी प्रश्न पर स्वाति सचेत हो गई... उसकी सांसें अटक गईं,

“भाटी सर...”

कंधे से बैग पटक कर, बिना यूनिफॉर्म बदले वह दौड़ी आई और फिर से मम्मी के गले लग गई।❑

सम्पर्क : मेजर हाउस-17, हुडा सेक्टर-20,
पार्ट-1,सिरसा-125056 (हरियाणा)
मो : 94168-47107

अनिल शूर आज़ाद की तीन लघुकथायें

अपने अपने टापू

अपनी मातृभूमि से हजारों किलोमीटर दूर अमेरिका के डेनवर में अपनी नातिन के स्कूल-फंक्शन में वह आया हुआ था।

सहसा सामने की कुर्सी पर, एक परिचित से चेहरे से उसकी नज़रों का सामना हुआ। वह पहली बार यहां आया था, यहां उसका परिचित कौन हो सकता था। लेकिन दिल ने कहा- वह उसकी चालीस वर्ष पहले की फ्रेंड लूसी ही है। उसने भी शायद उसे पहचान लिया था।

वक़्त ने उसकी प्रेयसी को कितना बदल डाला था। वह स्वयं भी तो कितना बदल गया था। एकाएक लूसी के साथ गुज़रे पल, कितनी ही अंतरंग यादें उसे पुलकित कर गईं। वह गम्भीरता से कोशिश करता तो वे विवाह कर सकते थे। लूसी ने कितनी बार उसे कहा भी, पर वही उसे टाल जाता रहा। उसे याद आया वह अपने किसी दूर के रिश्तेदार के यहां अमेरिका चली आई थी। फिर वह उसे भूल ही गया। लूसी ने भी कभी सम्पर्क नहीं किया।

कार्यक्रम की समाप्ति पर ऑडिटोरियम में मौजूद सभी उठने लगे थे। उसकी नातिन सोफिया के आने में अभी देर थी। भावनाओं के वशीभूत वह आगे बढ़ा- “हेलो, आप लूसी ही हो ना. .. माय लव!”

“वह लव नहीं, हमारा लस्ट था। मुझसे मिलने की अब कोशिश मत करना।” कहते लूसी एक ओर को बढ़ गई। आगे बढ़ा हुआ उसका हाथ खाली ही रह गया। इतनी हिम्मत उसमें नहीं बची थी कि आगे बढ़कर उसे रोक लेता।

बस, खामोश रहते... सूनी आंखों से उसे जाते हुए देखता रहा।❑

प्यास

छोटे से स्टेशन पर पैसेंजर ट्रेनें ही कुछ देर के लिए रुकती थीं। मई-जून की बरसती आग में वहां पारा पचास के आसपास जा पहुंचता था। तब, नजदीकी गांव के युवकों की एक टोली रेल यात्रियों को पानी पिलाने के अभियान में जुट जाती थी। राजू सदैव इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता। प्यासों को पानी पिलाने का उसे इतना जुनून था कि ट्रेन चलने के बाद भी दौड़ दौड़कर यात्रियों को पानी पहुंचाने की कोशिश में कई बार वह गिरकर चोटिल हो जाता था।

आज फिर वह, लाइन के पास बिछे पत्थरों पर गिरकर कई जगह से बुरी तरह छिल गया था। उसके भाई ने दवा लगाते हुए उससे पूछा- “ट्रेन की खिड़की से खाली बर्तन लिए बढ़ा हुआ हाथ देखकर आखिर तुम्हें हो क्या जाता है, जो तुम अपना आपा भूल जाते हो?”

राजू एकाएक गम्भीर हो गया। खोई सी उदास आवाज़ में बुदबुदाया- “मां का चेहरा मेरे सामने आ जाता है, भैया! शहर के अस्पताल में जब मां की मृत्यु हुई थी, उससे पहली शाम आइसीयू में मां ने इशारे से मुझसे पानी मांगा था। पानी लेकर मैं आगे बढ़ा था कि नर्स ने मुझे रोक दिया। बमुश्किल गीला कॉटन ही मां के होंठों पर फेरने दिया था। अगली सुबह मां की मृत्यु हो गई थी। मुझे अक्सर लगता है कि आख़िरी समय मां को मैं पानी तक नहीं पिला सका था।” कहते राजू फफक पड़ा।

परिवेश में सहसा एक मातमी ख़ामोशी पसर गई थी।❑

गुरुघर

इस बार अमृतसर आना हुआ तो, गुरुद्वारा साहब आकर मत्था टेकने का समय उसने निकाल ही लिया। गुरुद्वारे के प्रवेशद्वार के साथ बने जूताघर के सेवादार को, अपने फटे जूते सौंपते उसे बहुत संकोच हुआ।

पवित्र-सरोवर के शीतल जल में स्नान कर वह एकदम तरोताज़ा हो गया। वाकई इस स्थान में कुछ ऐसा है कि थोड़े समय के लिए ही सही, अपने तमाम रंजोगम वह भूल गया था। गुरु साहब के हुजूर में शीश नवाकर उसने स्वयं में एक स्फूर्ति सी महसूस की। स्वादिष्ट लंगर प्रसाद छककर खाने के बाद बड़ी देर तक वह, शब्दकीर्तन का रसास्वादन भी करता रहा।

समय का भास होने पर वह उठा। जूताघर से अपने जूते वापिस लिए। नई नई हुई पालिश से इन्हें चमचमाते देखकर एकबार तो पहचान ही नहीं पाया था। फिर... थोड़ी दूरी पर बैठकर जूते पहनते हुए उसने, एक कागज की उपस्थिति अनुभव की। किंचित हैरान होकर उसने मुड़ातुड़ा कागज बाहर निकाला। उसे खोला तो पांच-पांच सौ के दो नोट उसमें से निकल आए।

कागज पर एक संदेश भी लिखा था- “बेटा, अपने लिए नए जूते खरीद लेना।”❑

सम्पर्क : एजी-1/33-बी, विकासपुरी,
नई दिल्ली -110018

डॉ. सन्ध्या तिवारी की दो लघुकथायें

राजा नंगा है

छःह साल की राजो मुझे घूँघट काढ़े परांठे बेलते हुए बड़े गौर से देख रही थी।

"माँ तुम घूँघट क्यों काढ़ती हो?" उसने पूछा।

"अरे! तुम्हारे बाबा बैठे हैं, न।" माँ ने ढलक गये घूँघट को नीचे नाक तक खींचते हुए जवाब दिया।

"लेकिन बाबा से तुम मुँह क्यों छुपाती हो? बाबा तो किसी से मुँह नहीं छुपाते। वह तो खाली नेकर (निक्कर) पहन कर पूरे घर में घूमते हैं?"

अवाक् माँ कुछ बोल नहीं पायी। बस स्कूल के उन दिनों की एक कहानी याद आ गयी जो कि एक मास्टर साहब ने सुनाई थी;

"एक राजा था, उसने एक पारदर्शी पोशाक बनवायी और उसे पहन प्रजा के बीच गया और सबसे पूछा कि पोशाक कैसी है?

सबने उसकी बहुत तारीफ़ की। केवल एक बच्चा हाथ में एक तख्ती उठाये खड़ा था, जिस पर लिखा था- "राजा नंगा है।"

कहानी ख़त्म।

लेकिन, मैं हमेशा सोचती, कि उस बच्चे का हश्र क्या हुआ होगा। आज एक ऐसी ही तख्ती राजो ने भी हाथो में उठा ली थी। चटाक् की आवाज के साथ ससुर का रोबीला स्वर गूंजा;

"तमीज़ सिखाओ इसे।"

और उस कहानी का अंत आज समझ आया। राजा ने उस बच्चे का हाथ तख्ती सहित काट दिया होगा।❑

सदाबहार

जाने किस ताने-बाने में उलझी, मैं अपनी खिड़की पर खड़ी थी।

इतने में मैंने देखा- एक सदाबहार का पौधा खिड़की की चौखट और दीवार की संद से निकल कर लहलहा रहा था। उसके चमकीले चिकने हरे पत्ते और प्याजी रंग के फूल मुझे अपनी ओर बरबस आकर्षित कर रहे थे, लेकिन दीवार में बरसात का पानी भरेगा, यह सोच कर मैंने उखाड़ने के लिये हाथ बढ़ाया ही था, कि नीचे गली से आवाज आई- "पौधे ले लो, पौधे।"

मैंने देखा- ठेले पर देसी गुलाब, इंगलिश गुलाब, बोगन बेलिया, एरोकेरिया, पाम की विभिन्न किस्में रखी थीं।

"ये इंगलिश गुलाब कैसे दिया?"

"सौ रुपये का।"

"हूँऽऽ ! और ये देसी वाला?" मैंने पूछा?

"सत्तर का।"

"बड़ा महंगा बता रहे हो। इसमें करना ही क्या होता है, केवल कलम ही तो लगानी होती है।" मैंने जरा अपने पादप ज्ञान की धौंस जमाते हुए कहा।

"हाँ, लेकिन इतने दिन इसकी परवरिश, खाद-पानी, देख-रेख, सुबह-शाम सींचना... इसका कुछ नहीं क्या?" पौधे वाले ने ठेले पर इधर उधर खिसक गये पौधों को एक साथ ठीक से जमाते हुए जरा तीखे स्वर में कहा।

"ओह! अच्छा तो तू बेटे का बाप है..." मैंने हँसते हुए कहा।

"और मैं अनचाही बेटी...। जिसे बोने से लेकर सींचने तक तुमने कुछ नहीं किया... हाँ आज उखाड़ कर फेंक जरूर रही हो. ..।" फुसफुसाहट सदाबहार की थी...।

अनजाने ही मेरा हाथ मेरे पेट पर चला गया और मेरा चेहरा पीला पड़ गया।❑

सम्पर्क : पत्नी श्री राजेश तिवारी
ठेका महिला पुलिस चौकी के सामने ,
निकट सलोनी हॉस्पिटल, यशवन्तरी रोड़,
पीलीभीत, 262001 (उ. प्र.)
मो : 7017824491,

इधर उधर की...

पिता : उदास क्यों है बेटा?
बेटा : नहीं बता सकता आपको.
पिता : अपना दोस्त समझ के बता दे.
बेटा : अब क्या बताऊँ यार... तेरी भाभी आइफोन मांग रही है...!!!

डॉ. सत्यवीर 'मानव' की दो लघुकथायें

लौट आया नरेन

आज तक तो कभी उसके साथ ऐसा नहीं हुआ था। लेकिन आज उनके साथ यह क्या हो रहा है, वह समझ ही नहीं पा रहा। कभी भावना गीत बन जाती है, तो कभी गीत भावना में बह जाता है। वह अपने आप को पर्वत की सूखी चोटी समझता रहा है, फिर आज वह हिमाच्छादित शिखर कैसे बनता जा रहा है?

अभी-अभी पापा का फोन आया था। हालांकि उन्होंने शब्दों में तो कुछ नहीं कहा था, लेकिन बार-बार रुंधते गले और रह-रह कर नाक सुड़कने की आवाज ने बहुत कुछ कह दिया था।

उसे काफी वर्ष पहले पढ़ी पापा की एक लघुकथा 'लौट आओ नरेन' याद आ रही थी। लघुकथा का नायक नरेन बिल्कुल उसी की तरह एमबीबीएस करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका चला जाता है और फिर वहीं का होकर रह जाता है। कथा-नायक का पिता उसे बहुत समझाता है- "मेरे और अपनी मम्मी के लिए नहीं, तो अपनी मातृभूमि के लिए ही आ जाओ बेटे! उसका कर्ज तो तुम हजारों जन्म निछावर करके भी नहीं उतार सकते। अमेरिका के लोग तो बहुत धनी हैं, लेकिन तुम्हारे देश के गरीब मरीज तो तुम्हारे पास इलाज के लिए नहीं आ पायेंगे ना! फिर उन्हें तुम्हारी शिक्षा और प्रतिभा का क्या फायदा हुआ?" आदि-आदि।

लेकिन कथा-नायक पर इसका कोई असर नहीं हुआ- "इन सब व्यर्थ की बातों के लिए मैं अपना करियर तो बरबाद नहीं कर सकता ना।" और कथा-नायक का पिता पापा के टूटते शब्दों की तरह ही टूटकर चला गया था।

उसे लगा कि वह लघुकथा अभी-अभी फिर लिखी गई है और उसका नायक कोई और नहीं वह स्वयं है। किंतु वह इसका अंत पहले जैसा नहीं होने देगा।

उसने सोचा और पापा को फोन लगा दिया- "मैं इंडिया आ रहा हूं पापा!"❑

नपुंसक मधुक्खियां

उसने गलती से मधुमक्खियों का छत्ता छेड़ दिया था और एक के बाद एक दौड़ी चली आती सारी की सारी मधुमक्खियां उससे चिपट गई थीं। यह देखकर मुझे फिर सुबह वाली घटना याद हो आई।

मैं बार-बार कोशिश करता हूं, लेकिन ध्यान फिर वहीं चला जाता है। वे केवल तीन थे और तमाशा देखने वाले सैकड़ों। फिर भी वे उस दूकानदार को मार-मार कर अधमरा करके ही छोड़कर गए थे। किसी की हिम्मत नहीं हुई कि उस बेकसूर को छुड़ा सके, जबकि उसने एक-एक को कातर नजरों से देखा था। एक दर्द... एक याचना थी उन आंखों में कि कोई तो आगे आये। उसने अपनी नजरों से सभी के ज़मीर को ललकारा था, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

भीड़ में मैं भी शामिल था- वैसा ही कायर... नहीं नपुंसक। मैं अर्जुन क्यों नहीं बन पाया? फिर... फिर अब मुझे क्यों लगता है कि आदमी मधुमक्खी क्यों नहीं बन पाता?❑

सम्पर्क : 642/1, हुड्डा,
नारनौल (हरियाणा)- 123001

इधर उधर की...

एक औरत अपनी कुछ परेशानियों को लेकर एक बाबा के डेरे में पहुंची. बाबा ने सारी परेशानियों को बड़े गौर से सुना. फिर बोले, "इसका हल निकल जाएगा, सब ठीक हो जाएगा... लेकिन इसके लिए कुछ खर्चा आएगा."
औरत ने पूछा, "कितना खर्चा आएगा?"
बाबा : "तुमसे मैं ज्यादा तो नहीं ले सकता... लेकिन पुराणों के अनुसार हमारे कुल 33 करोड़ देवी देवता हैं. बस सबके नाम से एक-एक पैसा दान कर देना."
औरत ने मन ही मन गिनती की, तो बाबा के हिसाब से कुल खर्च 33 लाख रुपये आता था... औरत भी चालाक थी. उसने कहा, "ठीक है बाबाजी, आप बारी-बारी से सबका नाम लीजिए, मैं एक-एक पैसा रखती जाऊंगी.
बाबा डेरे में अभी भी बेहोश हैं.
❑❑
देश की सबसे बड़ी अंधश्रद्धा...
शादी कर दो,
लड़का सुधर जाएगा.

अशोक श्रीवास्तव 'सिफर' की तीन लघुकथायें

अधूरे रिश्ते

जय ने शैली से कहा- "कल मिलने क्यों नहीं आई?"

शैली ने कहा- "लड़के वाले देखने आए थे. पसंद करके शगुन दे गए हैं."

जय अवाक्!

"कुछ रिश्ते जीवन में शायद अधूरे ही बने रहते हैं जय." नज़रें झुकाकर वह मुड़ी और चल दी.

जय शैली को जाते हुए देखता रहा.❑

हँसमुख

नमन की शादी को लेकर घर के लोग परेशान थे। इकलौता लड़का होने के कारण माता पिता की घबराहट भी ज्यादा रहती है। पता नहीं लड़की कैसी मिलेगी, माँ बाप को साथ रखेगी कि नहीं, क्योंकि आजकल जैसी बातें उन्हें सुनने को मिल रही थीं कि बहू सास ससुर के साथ रहना पसंद नहीं करतीं।

इसी बीच नमिता का रिश्ता उनके पास आया, जो बैंक में पी आर ओ थी। एक बात से सभी संतुष्ट थे कि लड़की बैंक में है, जैसे भी रखेगी रह लेंगे। नमिता सामान्य सी थी, पर हँसमुख थी। सबको पसंद आ गई और शादी भी हो गई।

लेकिन उसका हँसमुख स्वभाव ही सास के गले नहीं उतर रहा था। वो अपने अंदाज में ससुर से, अन्य रिश्तेदारों से, नमन के दोस्तों से बात करती तो सास कुढ़ के रह जाती।

इसी बीच नमिता का प्रमोशन पर ट्रांसफर दूसरे शहर हो गया। पूरे परिवार का सामंजस्य ही बिगड़ गया। नमन उसी शहर में लेक्चरर था। तय हुआ की वो वहां से अपडाउन करेगा। छुट्टी में दोनों घर आया करेंगे। पर नमिता राजी नहीं थी। वो कह रही थी कि मम्मी पापा को अकेले नहीं छोड़ेगी। वो अपडाउन कर लेगी, नहीं तो मम्मी पापा भी मेरे साथ रहेंगे और नमन वहां से अपडाउन कर लेंगे, वरना वो नौकरी छोड़ देगी। फैसला अब मम्मी पापा को करना है।

मम्मी ने कहा कि नमिता हम तेरे साथ रहेंगे, नमन अपडाउन कर लेगा, और उन्होंने नमिता को अपने आलिंगन में लेकर कहा कि मैं गलत थी। तू ऊपर से नहीं, अंदर से भी हँसमुख है बेटी। तूने हमारे सारे डर दूर कर दिए।

और नमिता का माथा चूम लिया।❑

बस, साथ दिए रहना...

वसुधा और आकाश का जीवन बेटे गगन के साथ मजे से चल रहा था, लेकिन इस क्रूर कोरोना की नजर लग गई और आकाश हाथ छुड़ा कर चले गए।

वसुधा दुःख के समुंदर में डूब गई। एक बेटा है जो अभी पढ़ रहा है। कोरोना के कारण कोई भी सगे सम्बन्धी, मित्र भी घर नहीं जा पा रहे थे। सिर्फ मोबाइल और वाट्सएप से ही सांत्वना और धीरज बंधा रहे थे। किसी के पास ज्यादा कुछ कहने को नहीं था, सो वसुधा से कहते, "बेटे पर ध्यान दो, उसे सुरक्षित रखो।" बात भी सही थी।

अब इसी पौधे को बड़ा कर आकाश के समान बनाना है वसुधा को, ताकि आकाश शिकायत न कर सके कि तुमने मेरे छोड़े काम को वैसे का वैसा ही छोड़ दिया है।

शरीर नहीं है तो क्या हुआ, मरते दम तक आकाश की ही पत्नी कहलाएगी वसुधा, ये सम्मान उससे कोई छीन नहीं सकता है।

इस बात से वसुधा की हिम्मत बढ़ी। आकाश की ओर हाथ उठाकर बोली, "देख रहे हो न आकाश, जिस पौधे को छोड़कर गए हो, अब उसका आकाश भी मैं ही हूँ और वसुधा भी मैं ही हूँ। तुम्हें निराश नहीं करेगी तुम्हारी वसुधा!"

तभी बेटे ने झिंझोड़ कर उठाया, "माँ न जाने कितनी देर से नींद में बड़बड़ा रही हो कि मैं ही आकाश हूँ, तुम्हें निराश नहीं करेगी, नहीं करेगी। लो चाय पियो, पापा की तरह इलायची डाल कर बनाई है।"

एक आकाश सी मुस्कान वाली नजर बेटे पर डालकर वह एक हाथ से चाय लेकर बेटे का सिर सहलाने लगी। नेपथ्य में देखते हुए स्वयं से कहा, "बनाएगी, जरूर तुम्हीं सा बनाएगी, बस साथ दिए रहना।❑

षड्यंत्र

पवन शर्मा

वह देख रहा है; दद्दा को सभी घेरे हुए बैठे हैं- अम्मा, उसकी दोनों बहनें- सीमा, लता और छोटा भाई विनोद। बीच में बैठे दद्दा बतिया रहे हैं। दद्दा अभी-अभी लौटे हैं।

"कितेक के यहाँ गए थे?" अम्मा पूछती हैं।

"कईन के यहाँ।" दद्दा ने बताया।

"कछू जमी?"

"जमी का... फोटो ले आओ हूँ।" दद्दा ने कहा और बैग में से चार फोटो निकालकर अम्मा की ओर बढ़ा दीं। अम्मा के पास जाने से पहले ही सीमा और लता ने फोटो झपट लीं। फोटो देखकर उन दोनों के चेहरे पर प्रसन्नता छा गई। विनोद भी झुककर देखने लगा।

"अम्मा, जे ठीक है।" सीमा बोली।

"नईं अम्मा, जे ठीक है।" लता बोली।

वह कुछ नहीं बोला। उसे ये सब तमाशा लग रहा था। अब अम्मा भी फोटो देखने लगीं। दद्दा कह रहे थे, कमीज उतारते हुए, "मैंने हरेक के यहाँ जे कही कि साठ एकड़ खेत है... ट्रैक्टर चल रओ है... गाय- बैल-भैंस... सब कुछ है... कोई कमी नईं है मोए!.. बस, मौड़ी भर ठीक होनी चाहिए। और कहो कि मेरो मौड़ा एम. ए. फाइनल में है जे साल... और मौड़न से सीधो... कोई ऐब नईं बामे... चाहे तो चल के देख लेओ।" दद्दा थोड़ी देर के लिए रुके, बीड़ी सुलगाई, फिर बोले, "जे ऊपर वाली फोटो है न... जाके बाप ने कहो कि ब्याह में कोई कसर नईं रखूँगो... आवभगत पूरी... पच्चीस हजार देवें कूँ भी बोलो है। मैं सोच रओ हूँ कि जई के साथ पक्की कर देऊँ... और जे नीचेवाली फोटो है न... जाके बाप ने बीस तक की बात करी..." दद्दा ने कहा और बीड़ी का जोर से सुट्टा मारा और हलक से ढेर सारा धुआँ उगल दिया।

"अब तो जईके ऊपर है कि जाए कौन-सी मौड़ी पसंद आएगी।" अम्मा बोलीं।

वह मन-ही-मन सुलगने लगा।

"काऐ रे, कौन-सी ठीक है?... देख ले... तू भी देख ले... नईं तो बाद में हमें ही दोष दे... बता देईए... परौं तक जवाब भेजनो है।" दद्दा बोले।

वह देखता है कि सीमा और लता आपस में धीरे-धीरे कुछ बात कर रही हैं। विनोद भी उनमें ही जा मिला है। अम्मा उठकर दद्दा के पास जा बैठी हैं। उसे लगा, घर में सभी उसके विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हैं- क्या दद्दा, क्या अम्मा, क्या सीमा, क्या लता, क्या विनोद... सब!

"मोए इतनी जल्दी काए के लाने बेच रए हो दद्दा!" बोलते हुए एक विद्रूपता उसके चेहरे पर तैर आई।❑

संपर्क : विद्या भवन, वार्ड नंबर 17,
सुकरी चर्च, जुन्नारदेव-480551,
जिला- छिंदवाड़ा (म. प्र.)
मो : 9425837079 / 8319714936

उजाले की मौत

अशोक गुजराती

वह प्राथमिक प्रशिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में पढ़ाता है. अपनी युवावस्था में कविताएं लिखा करता था. साहित्य के क्षेत्र में अपेक्षित सफलता मिलने से पहले ही वह उसके प्रति उदासीन-सा हो गया. लिखना-पढ़ना छूट गया और लग गयी शराब की लत.

धीरे-धीरे उसकी यह हालत हो गयी कि नशे में धुत वह रात में कहीं भी गिर पड़ता. कोई परिचित देख लेता तो उसे घर के दरवाज़े छोड़ जाता. ग़नीमत यही थी कि दिन में वह अपने होशो-हवास में रहता और कालेज की नौकरी में बना हुआ था.

एक रात भरपूर शराब पीने के बाद उसने एक परिचित रिक्शावाले से किसी अड्डे पर ले चलने को कहा. रिक्शा उस क़स्बे की सुदूर स्थित एक झोंपड़ी के सामने जाकर रुका. रिक्शावाले ने बाहर खड़ी अधेड़ स्त्री से बात की. फिर उससे कहा, "जाओ साब, अंदर चले जाओ."

झोंपड़ी के भीतर दीया टिमटिमा रहा था. उस मरणासन्न उजाले में उसने अपनी हवस पूरी की. कपड़े सम्भालते हुए उसने किसी व्यापारी की तरह पूछा, "कितना हुआ?"

निगाहें नीची किये लड़की किसी मेमने की मानिन्द मिनमिनायी- "आपसे क्या लेना सर!"❑

सम्पर्क : ई-1317, भैरव रेसिडेंसी, कनाकिया रोड,
मीरा रोड-पूर्व-401 107- ठाणे, (महाराष्ट्र)
मो : 09971744164

उम्मीद की किरण

ज्ञानप्रकाश ‘पीयूष’

शहर के प्रतिष्ठित अस्पताल के सामने सुधा के पापा किशोरीलाल का मेडिकल स्टोर था। सुधा ने बीएससी कर लिया था, वह भी बीच-बीच में मेडिकल स्टोर पर जाती और पिता का हाथ बटवाती थी। पिता को उस पर बहुत नाज था।

मेडिकल स्टोर खूब चलता था। हमेशा भीड़ लगी रहती थी। एक तो किशोरीलाल अपने ग्राहकों से बहुत मीठा बोलते थे और दवाइयों पर वे अन्य दुकानदारों की अपेक्षा अधिक डिस्काउंट देते थे। दूसरे वे गरीब ग्राहकों को भी खाली हाथ नहीं जाने देते थे। वे जितना मूल्य चुका सकते, उतने में ही दवाइयाँ दे देते थे। उनका सबके साथ बहुत आत्मीयतापूर्ण व्यवहार रहता था ।

एक दिन उनके सीने में अचानक तेज दर्द उठा और हृदय गति रुक जाने से उनका असामयिक निधन हो गया। सुधा ने अपनी माँ को पिता की लाश से लिपट कर विलाप करते हुए देखा। वह बहुत व्यथित हुई, पर उसने अपने नेत्रों से झर-झर झरते आँसुओं को रोका, मन को मजबूत किया और माँ के पास बैठ कर बड़े प्यार से बोली, “माँ! जो नहीं होना चाहिए था, वह हुआ पर भावी पर किसका वश चलता है? मैं पापा को तो वापिस नहीं ला सकती पर आपको पापा की कमी कभी महसूस नहीं होने दूँगी, यह मेरा पक्का वायदा है आपसे। पापा की तरह मैं भी सबकुछ अच्छे से सम्भाल लूँगी। मैं उन्हीं का तो अंश हूँ। उठो माँ! विचलित मत हो, मन को मजबूत करो, यह धैर्य धारण करने का समय है। मैं आपके साथ हूँ।”

और सुधा बेटी ने सचमुच सबकुछ अच्छे से सम्भाल लिया। वह मेडिकल स्टोर पर नियमित रूप से जाने लगी एवं अपने पापा के ही नक्शे-कदम पर चलने लगी। माँ को यह देख कर बहुत अच्छा लगता, पर बेटी की बढ़ती आयु के साथ उसकी चिंता भी बढ़ने लगी। वह अपनी चिंता किसके साथ साझा करें? उसे कोई रास्ता सूझता दिखाई नहीं दे रहा था।

तभी दरवाजे पर घंटी बजी। सुधा की मम्मी ने दरवाजा खोला। प्रदीप ने अंदर आकर उनके पैर छुए। आशीर्वाद देती हुई सुधा की मम्मी बोली, “बेटा मैंने तुम्हें पहचाना नहीं।”

“आंटी, मैं धनपतराय जी का बेटा प्रदीप हूँ। बचपन में मैं और सुधा दोनों आपके घर पर ही साथ-साथ खेलते थे। आप के बगल में ही हमारा मकान था।”

“हाँ... हाँ बेटे, याद आया, तुम्हारा परिवार तो यहाँ का मकान बेच कर दिल्ली शिफ्ट हो गया था। बहुत दिनों के बाद तुम्हारा यहाँ आना हुआ। अब तुम क्या कर रहे हो बेटे? तुम्हारी तो शादी भी हो गई होगी?”

“नहीं आंटी, सर्विस से पहले मैं शादी करने की कैसे सोच सकता हूँ? अब यहाँ के सरकारी अस्पताल में मेरी हार्ट स्पेशलिस्ट के रूप में नियुक्ति हुई है। मैंने जॉइन कर लिया है। सोचा आप से मिल लेता हूँ। सुधा कहाँ है आंटी? कहीं दिखाई नहीं दे रही।”

“बेटे, पहले आराम से बैठ,चाय-नाश्ता कर, फिर तुझे सब तफसील से बताती हूँ।”

इतने सालों बाद प्रदीप का आना और सुधा के बारे में पूछना उसकी मम्मी को राहत देने वाला महसूस हुआ।❑

सम्पर्क : 0/258, मस्जिद वाली गली,
तेलियान मोहल्ला, नजदीक सदर बाजार,
सिरसा-125055 (हरि.)
मो : 094145-37902,070155-43276

आदेश

सपना चन्द्रा

जनता दरबार में घोषित तिथि को मदनलाल मुख्यमंत्रीजी का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे.

मदनलाल कुछ ज्यादा ही उद्विग्न हो रहे थे... जिंदगी भर जिस सरकार की सेवा करते रहे, उसी के चक्कर लगाने पड़ रहे है.

अपनी सेवा के लिए पुरस्कार भी पाया. आज वही अपनी जमापूंजी के लिए दर-दर भटक रहे थे.

आज इस अफसर के पास तो आज उस अफसर के पास. .. चक्कर काटते काटते बुढ़ापे की हड्डियां थक चुकी थी.

चार-पांच लोगों के बाद मदनलाल हाथ जोड़े मुख्यमंत्री के सामने खड़े थे..

“कहिए क्या समस्या है आपकी?”

“माननीय मंत्रीजी, बस आप हमारे ऊपर इतना उपकार कर दीजिए कि वो पता बता दें जिनके एक आदेश पर मेरा काम हो जाए... क्योंकि मैं आदेशों की सीढ़ियां चढ़ते-उतरते थक गया.”❑

सम्पर्क : श्यामपुर रोड, लालापुर,
भदेरकहलगाँव, भागलपुर-813203 बिहार

विजय कुमार की दो लघुकथायें

अंतरात्मा की आवाज़

"दादू, क्या यह सच है कि आप पहले सिक्योरिटी गार्ड की नौकरी किया करते थे?" चौदह साल के पोते ने कुलदीप से सवाल किया।

"हां बेटा, पर तुम्हें किसने कहा?" कुलदीप ने पूछा।

"मम्मी ने।" पोते ने कहा।

"और क्या बताया तेरी मम्मी ने?" कुलदीप ने कुरेदा।

"यही कि आपको एक बार अपनी ड्यूटी करते हुए ढेर सारे रुपए मिले थे, तो आपने उन्हें ईमानदारी से जिसके थे, उसे लौटा दिए थे।" पोता बोला।

"हां, और एक बार नहीं बेटा, दो बार पहले भी ऐसा ही हुआ था। तब भी मैंने रुपए लौटा दिए थे। कई बार तो कइयों का कीमती सामान भी छूट गया था, जो मैंने लौटा दिया था।" कुलदीप ने पोते को बताया।

"दादू, आपने अपने पास क्यों नहीं रखा?" पोते ने पूछा।

"नहीं बेटा, वह किसी और की अमानत थी, अपना सामान थोड़े था। पता नहीं क्या था, और कैसे-कैसे करके किसी ने बनाया या इकट्ठा किया होगा? हम भी तो कभी कोई चीज लेते हैं, तो कितना सोच-विचार कर, कितना सर खपा कर लेते हैं न। फिर पैसे भी तो खर्च होते हैं। और अगर हमारी वही चीज गुम हो जाए, तो हमें कितना दुख होता है?" कुलदीप पोते को समझाते हुए बोला, "पिछले साल तुम्हारी साइकिल गुम हो गई थी, तो तुम कितना रोए थे और तुम्हें कितना दुख हुआ था?"

"हां, पर जब मिल गई थी, तो उससे भी ज्यादा खुश हुआ था।" पोते के चेहरे पर खुशी के भाव आ गए।

"हाँ, तो सोचो बेटा, जिनकी चीजें मैंने वापस की थीं, उनको कितनी खुशी मिली होगी। उन्होंने तो मुझे नगद इनाम देने की भी कोशिश की थी, पर मैंने नहीं लिए। मेरे लिए उनकी खुशी ही सबसे बड़ा ईनाम था। मुझे इतना ही बहुत था कि मैं किसी के काम आया।" कुलदीप उस सुखद एहसास में फिर से डूब गया।

"और दादू, मम्मी यह भी कह रही थीं कि आप की ईमानदारी से खुश होकर किसी बहुत बड़े अफसर ने आपको भी अफसर बना दिया था। क्या यह सच है?" पोते ने पूछा।

"हां बेटा, बिल्कुल सही बताया उसने तुझे," कुलदीप हंसकर बोला, "जब मैंने वे रुपए लौटाए थे, तो मेरे बड़े अफसर ने मेरी ईमानदारी से खुश हो कर और मेरा पिछला रिकार्ड देख कर मुझे असिस्टेंट सिक्योरिटी अफसर की पोस्ट दिलवा दी। मैं आज भी उन का आभारी हूं, जिन्होंने मेरी ईमानदारी का फल मुझे दिया, और दूसरों के लिए भी एक मिसाल कायम कर दी।"

"और अगर वह आपको अफसर न बनाते तो?" पोते का सवाल था।

कुलदीप ने दृढ़ता से कहा, "तो भी मैं अपना काम उसी ईमानदारी से करता रहता, जैसे पहले कर रहा था। ईमानदारी से काम करना मेरी कोई मजबूरी नहीं थी बेटा, मेरी अपनी अंतरात्मा की आवाज थी।"❑

धन्य हैं

जब बहुत देर तक कोई ऑटोवाला जाने को तैयार न हुआ, तो योगेश का धैर्य जवाब दे गया। वह अपने एक मित्र और उसकी नवविवाहित पत्नी के साथ ऋषिकेश अपने एक अन्य मित्र के विवाह समारोह में शामिल होने के लिए आया हुआ था। हरिद्वार स्टेशन के बाहर से उन्हें ऋषिकेश तक जाने वाला ऑटो पकड़ना था। धूप जोरों पर थी। आज गंगा दशहरा होने के कारण अत्यधिक भीड़ भी थी। रोजमर्रा के रास्ते को भी शायद बदल दिया गया था, जिसकी वजह से ऑटोरिक्शा वाला बीस की जगह पचास रुपए प्रति सवारी मांग रहा था, जो योगेश का मित्र देने को तैयार नहीं था।

एक ऑटोरिक्शा को रोककर योगेश ने कुछ बातचीत की, और अपने दोस्त को आवाज लगाई, "आ जाओ राजेश, यह चलने को तैयार है।" गंतव्य स्थान पर पहुंचकर योगेश ने राजेश को अपनी पत्नी के साथ अंदर जाने को कहा और उससे छुपा कर चुपचाप ऑटोवाले को डेढ़ सौ रुपए पकड़ा दिए।

विवाह समारोह से निपटने के बाद राजेश ने हरिद्वार के किसी गुरुजी के पास उनके आश्रम में जाने की इच्छा व्यक्त की, और सभी वहां चले गए। गुरु जी से मिलने के उपरांत राजेश ने जब उनके चरणों में हजार रुपए रखे, तो योगेश चौंक गया, और सोचने पर मजबूर हो गया, 'अपनी मेहनत की कमाई में से अपने या अपनी पत्नी के ऊपर तो सौ-पचास रुपए भी ज्यादा खर्च ना हो जाएं, इसके लिए इतनी झक्क मारता रहा, अपनी नवविवाहित पत्नी का भी ख्याल नहीं रखा, और यहां ए.सी. आश्रम में पसर कर बैठे इस तथाकथित साधु को कितने रुपए लुटा दिए? कमाल है? कुछ तो सिद्धि है इन साधु, संतों और बाबाओं में, जो ऐसे महाकंजूस मानवों को भी चूस लेते हैं। धन्य हैं...।"

सम्पर्क : 103-सी, अशोक नगर, नजदीक शिव मंदिर,
अम्बाला छावनी- 133001 (हरियाणा)
मो : 09813130512

पवित्रा अग्रवाल की दो लघुकथायें

स्टेटस

मिस्टर वाल्मीकि घर पहुँचे तो पत्नी मुँह लटकाये हुए बर्तन मांज रही थी।

"आज कामवाली नहीं आई?"

"अब आयेगी भी नहीं।"

"अब क्या हो गया? पहले तो कामवाली हमारी जाति पता लगने पर काम छोड़ कर भाग जाती थीं। लेकिन ये नई कामवाली तो अपनी ही जाति की है, ये क्यों भाग गई?"

"हमारी जाति की है तो क्या हमारे सिर पर चढ़ कर बैठेगी? हमारे स्टेटस की हो जाएगी? अब तक तो चाहे जब डाइनिंग टेबल की कुर्सियों पर बैठ जाती थी। मुझे अच्छा तो नहीं लगता था, किंतु बस यही सोच कर चुप रहती थी कि बड़ी मुश्किल से तो मिली है कहीं ये भी न भाग जाये पर..."

"पर क्या?"

"आज टीवी पर फिल्म आ रही थी। उसे देखने के लिए वह सोफे पर बैठ गई। पिंकी ने टोक दिया कि सोफे पर नहीं कार्पेट पर बैठ जाओ।"

"फिर?"

"फिर क्या, बस तुनक कर खड़ी हो गई और बोली, 'अब तक जब ऊँची जाति के लोग हमें अपने से छोटा समझते थे तो बहुत गुस्सा आता था। लेकिन पिंकी हम और तुम दोनों एक जाति के हैं फिर तुम हमसे अछूतों सा व्यवहार क्यों कर रही हो? तुम चार अक्षर पढ़ गये तो हम से ऊँची जाति के तो नहीं हो गये? नहीं करना तुम्हारा काम। कह कर पैर पटकती हुई बाहर चली गई।❑

चित्त भी उनकी और पट्ट भी

घर पंहुचते ही पत्नी ने पूछा- "सुनो शास्त्री जी के पास हो आए?"

"हाँ,"

"आपने बताया कि उनके हिसाब से बनवाए इस नए मकान में रहते हुए करीब दो वर्ष हो गए हैं, पर परेशानियां रूप बदल बदल कर आ रही हैं। हम सुखी नहीं हैं। इस से ज्यादा सुखी तो हम पहले के मकान में थे जिसमें उन्होंने वास्तु के हिसाब से बहुत से दोष गिना दिए थे।"

"हाँ, मैंने बताया कि इस घर में आने के बाद छोटे बेटे की नौकरी चली गई। बड़ी बहू का एबोर्शन हो गया। घर में अशान्ति रहने लगी है, मेरा व्यापार भी अच्छा नहीं चल रहा है, घर के खर्चे भी नहीं निकल रहे हैं।"

"क्या कहा उन्होंने?"

"अब क्या कहेंगे, इन लोगों के पास हर बात का जवाब होता है। कहने लगे- 'देखिए मैंने आपका घर पूरी तरह से वास्तु के हिसाब से बनवाया है, पर आपके पड़ोस के वास्तु का, आपके काम करने की जगह के वास्तु का भी जीवन पर प्रभाव पड़ता है. .. यह सब परेशानियां उसी की वजह से आ रही हैं।"

मैंने कहा- "शास्त्री जी इस घर के सिवाय कुछ भी नहीं बदला है। मेरा व्यापार, बच्चों का आफिस सब पुरानी जगहों पर ही है।"

रूखे स्वर में चिढ़ कर बोले- तो आपके पड़ोस का वास्तु प्रभावित कर रहा होगा, उसे मैं कैसे रोक सकता हूँ?"❑

-

सम्पर्क : बी-502 ,ब्रिगेड मेट्रोपोलिस,
महादेवपुरा, व्हाइटफील्ड रोड,
बेंगलौर-560048 (कर्नाटक)
मो : 9393385447

महिला : बाबा, मेरे और मेरे पति के बीच प्रेम कम हो गया है.

बाबा : बेटा, शनिवार को फेसबुक और रविवार को व्हाट्सएस का उपवास रखो, पहले जैसा प्रेम आ आएगा!!!

❑❑

दादी को गीता पढ़ते देख पोते ने अपनी मां से पूछा : मां, दादी कौन सी परीक्षा की तैयारी कर रही हैं?

मां : बेटा ये फाइनल इयर की तैयारी कर रही हैं!

❑❑

सोहन समोसे को खोलकर अंदर का मसाला ही खा रहा था.

संजू : अरे! तू पूरा समोसा क्यों नहीं खा रहा?

सोहन : अरे मैं बीमार हूं न!

मधु जैन की दो लघुकथायें

बालकृष्ण

रीना साड़ी के पल्लू से आँसुओ को छिपाने की कोशिश करती है।

"देवांश की बात का बहुत बुरा लगा तुझे, क्या करूं, कितना तो समझाती हूँ पर..."

"कोई बात नहीं माँ, छोटा है, समझ जाएगा।"

"जन्म लेते ही माँ का साया छिन गया। तीन साल बाद बहुत समझाने पर दीपक शादी के लिए तैयार हुआ। पांच साल हो गये पर वह तुझे माँ मानने को तैयार नहीं।"

"देवांश आज जन्माष्टमी है, भगवान को झूला झुलाने मंदिर चलना है।"

खुश होते हुए, "हाँ दादी।"

झूला झुलाने के बाद मंदिर के चारों ओर लगी कृष्णलीला की तस्वीरों को देखते हुए दादी उसे सब बताती जाती है।

आश्चर्य से, "भगवान का जन्म जेल में हुआ था और उनकी दो माँ थी।"

"हाँ, एक जन्म देने वाली और एक पालने वाली। जन्म देने वाली से पालने वाली बड़ी होती है, तभी तो कृष्ण के साथ यशोदा का नाम लिया जाता है।"

"देखो दादी! यशोदा माँ भगवान के कान खींच रही हैं।"

"शैतानी करेंगे तो माँ डांटेगी न, जो प्यार करता है वही तो डांटता है।"

रास्ते भर देवांश के मन में अंतर्द्वंद्व चलता रहता है।

घर आते ही लड्डू वाला हाथ आगे करते हुए, "माँ यह प्रसाद आपके लिए।"

रीना आश्चर्य से देवांश को देखती है, "तुमने मुझे माँ कहा!" कहते हुए रो पड़ती है।

आँसू पोंछते हुए, "आप तो मेरी यशोदा माँ हो।"❑

कच्छप चाल

वह बेसब्री से राकेश सर का इंतजार कर रहा था।

प्रतियोगिता के निर्णय को लेकर आश्चर्य चकित था, क्योंकि निर्णय बिल्कुल उसके अनुमान के विपरीत था। ऐसा नहीं कि उसे राकेश सर की नीयत पर शक था। चित्र में तो प्रतियोगी का नाम नहीं बस उसकी आयु लिखी थी। और वे तो अपने निष्पक्ष निर्णय के कारण ही जज बनाये गये थे। इसी उहापोह से निकलने के लिए वह राकेश सर से बात करना चाहता था।

सर के आते ही, "नमस्ते सर।"

"सर, मैं आपसे कुछ जानना चाहता हूँ।"

"आओ बैठो, बताओ क्या जानना चाहते हो?"

"कल की चित्रकला प्रतियोगिता में आपने सबसे अच्छे चार चित्र अलग रखे थे, मुझे लगा इसी में से प्रथम, द्वितीय और तृतीय का चयन होगा पर..."

"पर क्या?"

"आपने जिस चित्र को प्रथम घोषित किया वह तो एक साधारण सा चित्र था। रंग संयोजन भी अच्छा नहीं था।"

सर ने मुस्कुराते हुए कहा, "वे चार चित्र उन बच्चों द्वारा बनाये ही नहीं गये थे, चूंकि घर से बनाकर लाना था तो किसी अन्य से बनवाये गये थे और जो प्रथम आया है, वह उसी बच्चे द्वारा बनाया गया था।"

"लेकिन सर, यह आपको कैसे पता चला?"

"जैसे एक छोटा बच्चा चित्र में नदी, पहाड़, पेड़-पौधे ही बनायेगा। रंग भी वही कत्थई, नीला, हरा भरेगा। कुछ बड़ा बच्चा अपनी कल्पना शक्ति से उसमें खेत-खलिहान, झोपड़ी कुछ जानवर बना देगा। हर बच्चा अपनी उम्र और आपने आसपास के परिवेश के अनुसार ही चित्र बनायेगा। मंजिल पर पहुँचने के लिए एक-एक सीढ़ी चढ़नी पड़ती हैं, छंलाग लगाने या गलत राह पकड़ने से मंजिल तक नहीं पहुंचा जा सकता।"

उसकी ओर देखते हुए, "आपने कछुआ और खरगोश की कहानी तो सुनी ही होगी।" कहते हुए उसे विचारमग्न छोड़ कमरे से बाहर निकल गये।❑

सम्पर्क : 593, संजीवनी नगर,
जबलपुर-482003 (म.प्र.)

गोश्त की गंध

सुकेश साहनी

दरवाजा उसके बारह वर्षीय साले ने खोला और सहसा उसे अपने सामने देखकर वह ऐसे सिकुड़ गया जैसे उसके शरीर से एकमात्र नेकर भी खींच लिया गया हो। दरवाजे की ओट लेकर उसने अपने जीजा के भीतर आने के लिए रास्ता छोड़ दिया। वह अपने साले के इस उम्र में भी पिचके गालों और अस्थि-पंजर-से शरीर को हैरानी से देखता रह गया।

भीतर जाते हुए उसकी नजर बदरंग दरवाजों और जगह-जगह से झड़ते प्लास्टर पर पड़ी और वह सोच में पड़ गया। अगले कमरे में पुराने जर्जर सोफे पर बैठे हुए उसे विचित्र अनुभूति हुई। उसे लगा- बगल के कमरे के बीचो-बीच उसके सास-ससुर और पत्नी उसके अचानक आने से आतंकित होकर काँपते हुए कुछ फुसफुसा रहे हैं।

रसोई से स्टोब के जलने की आवाज आ रही थी। एकाएक ताजे गोश्त और खून की मिली-जुली गंध उसके नथुनों में भर गई। वह उसे अपने मन का वहम् समझता रहा, पर जब खाना परोसा तो वह सन्न् रह गया। सब्जी की प्लेटों में खून के बीच आदमी के गोश्त के बिल्कुल ताजा टुकड़े तैर रहे थे। बस, उसी उसी क्षण उसकी समझ में सब कुछ आ गया। ससुर महोदय पूरी आस्तीन की कमीज पहन कर बैठे हुए थे, ताकि वह उसके हाथ से उतारे गए गोश्त रहे भाग को न देख सके। अपनी तरफ से उन्होंने शुरू से ही काफी होशियारी बरती थी। उन्होंने अपने गालों के भीतरी भाग से गोश्त उतरवाया था, पर ऐसा करने से गालों में पड़ गए गड्ढों को नहीं छिपा सके थे। सास भी बड़ी चालाकी से एक फटा-सा दुपट्टा ओढ़े बैठी थी, ताकि कहाँ-कहाँ गोश्त उतारा गया है, समझ न सके। साला दीवार के सहारे सिर झुकाए उदास खड़ा था, और अपनी ऊँची- ऊँची नेकर से झाँकती गोश्त रहित जांघों को छिपाने का असफल प्रयास कर रहा था। उसकी पत्नी सब्जी की प्लेट में चमचा चलाते हुए कुछ सोच रही थी।

“राकेश जी, लीजिए... लीजिए न!” अपने ससुर महोदय की आवाज उसके कानों में पड़ी।

“मैं आदमी का गोश्त नहीं खाता!!” प्लेट को परे ढकेलते हुए उसने कहा। अपनी चोरी पकड़े जाने से उनके चेहरे सफेद पड़ गए थे।

“क्या हुआ आपको?...सब्जी तो शाही पनीर की है!” पत्नी ने विस्फारित नेत्रों से उसकी ओर देखते हुए कहा।

“बेटा नाराज मत होओ... हम तुम्हारी खातिर में ज्यादा कुछ कर नहीं...” सास ने कहना चाहा।

“देखिए, मैं बिल्कुल नाराज नहीं हूँ।” उसने मुस्कुराकर कहा- “मुझे दिल से अपना बेटा समझिए और अपना मांस परोसना बंद कीजिए। जो खुद खाते हैं, वही खिलाइए। मैं खुशी-खुशी खा लूँगा।”

वे सब असमंजस की स्थिति में उसके सामने खड़े थे। तभी उसकी नजर अपने साले पर पड़ी। वह बड़ी मीठी नजरों से सीधे उसकी ओर देख रहा था। सास-ससुर इस कदर अचंभित थे, जैसे यकायक किसी शेर ने उन्हें अपनी गिरफ्त से आजाद कर दिया हो। पत्नी की आँखों से आँसू बह रहे थे। यह सब देखकर उसने सोचा... काश, यह गोश्त की गंध उसे बहुत पहले ही महसूस हो गई होती!

सम्पर्क : 185, उत्सव,
महानगर पार्ट-2,
बरेली-243122 (उ.प्र.)
मो : 031327493

नवजन्मा

रामेश्वर काम्बोज हिमांशु

जिलेसिंह शहर से वापस आया तो आँगन में पैर रखते ही उसे अजीब-सा सन्नाटा पसरा हुआ लगा।

दादी ने ऐनक नाक पर ठीक-से रखते हुए उदासी भरी आवाज में कहा, “जिल्ले तेरा तो इभी से सिर बंध गया रे। छोरी हुई है!”

जिलेसिंह के माथे पर एक लकीर खिंच गई।

“भाई, लड़का होता तो ज्यादा नेग मिलता। मेरा भी नेग मारा गया।” बहन फूलमती ने मुँह बनाया- “पहला जापा था। सोचा था, खूब मिलेगा।”

जिलेसिंह का चेहरा तन गया। माथे पर दूसरी लकीर भी उभर आई। माँ कुछ नहीं बोली। उसकी चुप्पी और अधिक बोल रही थी, जैसे कह रही हो- जूतियाँ घिस जाएंगी ढंग का लड़का ढूंढ़ने में। पता नहीं किस निकम्मे के पैरों में पगड़ी रखनी पड़ जाए। तमतमाया जिलेसिंह मनदीप के कमरे में जा धमका। बाहर की आवाजें वहाँ पहले ही पहुंच चुकी थी। नवजात कन्या की आँखें मुंदी हुई थी। पति को सामने देखकर मनदीप ने आँखें पोंछते हुए अपना मुँह अपराध भाव से दूसरी ओर घुमा लिया। जिलेसिंह तीर

की तरह लौट आया और लंबे-लंबे डग भरता हुआ चौपाल वाली गली की ओर मुड़ गया।

"सुबह का गया, अभी शहर से आया था। तुम दोनों को क्या जरूरत थी इस तरह बोलने की?" माँ भुनभुनाई।

घर में और भी गहरी चुप्पी छा गई।

कुछ ही देर में जिलेसिंह लौट आया। उसके पीछे-पीछे संतु ढोलकिया गले में ढोल लटकाए आँगन के बीचो-बीच खड़ा हुआ।

"बजाओ-" जिलेसिंह की भारी भरकम आवाज गूँजी। तिड़क-तिड़-तिड़-तिड़ धुम्म, तिड़क धुम्म! ढोल बजा।

मोहल्ले वाले एक साथ चौंक पड़े। जिलेसिंह ने अलमारी से अपनी तुर्रेदार पगड़ी निकाली, जिसे वह शादी-ब्याह या बैसाखी जैसे मौके पर ही बांधता था, ढोल की गिड़गिड़ी पर उसने पूरे जोश से नाचते हुए आंगन के तीन-चार चक्कर काटे। जेब से सौ का नोट निकाला और मनदीप के कमरे में जाकर नवजात के ऊपर वार-फेर की और उसकी अधमुंदी आँखों को हल्के से छुआ। पति के चेहरे पर नजर पड़ते ही मनदीप की आँखों के सामने जैसे उजाले का सैलाब उमड़ पड़ा हो। उसने छलकते आँसुओं को इस बार नहीं पोंछा। बाहर आकर जिलेसिंह ने वह नोट संतु ढोलया को थमा दिया। संतु और जोर से ढोल बजाने लगा तिड़- तिड़-तिड़ तिड़म धुम्म, तिड़क धुम्म! तिड़क धम्म!!

सम्पर्क : 1704बी, जैन नगर, गली नं. 4/10,
कश्मीरी ब्लॉक, रोहिणी सेक्टर 38, कराला,
नई दिल्ली-110081
मो : 9313727493

(खेद है कि सुकेश साहनी और रामेश्वर काम्बोज हिमांशु की लघुकथाओं के साथ प्राप्त हुई अर्चना राय की समीक्षाएं हम प्रकाशित नहीं कर पा रहे हैं. लघुकथा प्रस्तुत करने के लिए हम अर्चना राय जी के हृदय से आभारी हैं.)

अर्चना जी का पता हैः
भेड़ाघाट, जबलपुर-483053
मो : 9881989873

घड़ी की सुइयाँ

योगराज प्रभाकर

दादा और पोता, टीवी स्क्रीन पर आँखें गड़ाए बैठे थे, जहाँ कश्मीर के मुद्दे पर गरमागर्म बहस चल रही थी। वक्ताओं का पूरा पैनल बहुत ही जोश में था। हर कोई एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर भारत के विरुद्ध विष वमन कर रहा था-

"हिन्दुस्तानी फौज हमारे कश्मीरी भाइयों पर दिन रात जुल्म कर रही है।" एक वक्ता ने लगभग चिल्लाते हुए कहा, "हिंदुस्तान की सरकार बेगुनाह कश्मीरियों का कत्ल कर रही है।" दूसरे वक्ता ने ऊँचे स्वर में कहा, "दिन दिहाड़े हमारी माँ बहनों की इज्जत लूटी जा रही है।" लम्बी दाढ़ी वाले वक्ता का स्वर उभरा, "हमारी फौज इंडिया की ईंट से ईंट बजा देगी।" यह एक सेवानिवृत्त सेना अधिकारी का स्वर था, "हम तन मन और धन से अपने जिहादी भाइयों की मदद करेंगे।" लम्बी दाढ़ी वाले मौलाना ने अपना बाजू हवा में लहराते हुए कहा, "इंशाअल्लाह! बहुत जल्द कश्मीर में हमारा झंडा लहरा रहा होगा।" जलती आग में घी डालती हुई यह आवाज एक जिहादी नेता की थी, "जिंस कश्मीर को ये हिन्दुस्तानी अपना सिर कहते हैं, हम इस सिर को धड़ से अलग किये बगैर चैन से नहीं बैठेंगे।" दोनों बाहें उठाते हुए यह फतवा लम्बी दाढ़ी वाले मौलाना की तरफ से उछाला गया। इसी बीच दादा और पोते ने एक दूसरे की तरफ देखा, जहाँ नौजवान पोते की मुट्ठियाँ तनी हुईं और माथे पर क्रोध की रेखाएं थीं, वहीं बूढ़े दादा जी के चहरे पर निराशा और ऊब के मिश्रित चिह्न उभर आए थे। अचानक टीवी के सामने से उठते हुए दादा जी ने कहा, "मैं अब सोने जा रहा हूँ बेटा। उन्हें यूँ अचानक उठते हुए देख पोते ने पूछा, "इस मुद्दे पर आपकी क्या राय है दादा जी?" दादा जी के चेहरे पर एक फीकी सी मुस्कान फैली। अपनी छड़ी से दीवार पर टंगे मानचित्र की तरफ इशारा करते हुए उन्होंने उत्तर दिया, "बेअक्ल लोग हैं ये सब। 1971 में बांग्लादेश गंवा दिया था... लगता है अब बलोचिस्तान की बारी...।" पोते के चेहरे पर चढ़ी क्रोध की लाली सहसा पीलेपन में परिवर्तित होने लगी, किन्तु टीवी पर बहस अभी भी जारी थी।

सम्पर्क : प्रधान सम्पादक 'लघुकथा कलश'
53, 'ऊषा विला' रॉयल एन्क्लेव एक्सटेंशन,
डीलवाल, पटियाला-147002
मो : 9872568228

(यह लघुकथा हमें कल्पना भट्ट के सौजन्य से प्राप्त हुई है)

बेटी की शादी

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

बेटी की शादी को तीन दिन रह गए थे। सारी तैयारी पूरी हो चुकी थी। बस दो लाख रुपये की और जरूरत थी जो लड़के के पिता को देना था।

बेटी की शादी के लिए पत्नी के सारे गहने बेच चुके थे। एक बीघा खेत भी बन्धक पड़ गया था। महाजन का कर्ज भी कई लाख हो गया था।

एक दिन समधी जी का फोन आ गया, "भाई साहब, आप अपनी बेटी की शादी कंगाल होने के लिए कर रहे हैं क्या? आपने इतना कर्ज ले लिया है कि भरते भरते मर जाएंगे, पर भर नहीं पाएंगे। मेरी मानिए तो आप अपनी बेटी हमें दे दीजिए। हम अपने घर सब कुछ कर लेंगे। आपने कभी अपनी परेशानी हमें नहीं बताई, मगर मेरी होने वाली बहू ने हमें सब कुछ बता दिया है। अब मैं आपसे आप की बेटी मांगता हूं और कुछ नहीं। आपने जो हमें दस लाख रुपया दिया है, वह मैं अपने छोटे बेटे से वापस भिजवा रहा हूं। आप अपना खेत छुड़ा लीजिए, अपनी पत्नी के गहने बनवा लीजिए और आपने जिसका जिसका कर्ज लिया है, सब दे दीजिए और रुपयों की जरूरत हो तो कह दीजिएगा, मैं भेज दूंगा। मैं अपने बेटे की शादी कर्जदार बाप की बेटी से नहीं करना चाहता हूं। मैं बारात ले कर आऊंगा। बस आप बारातियों का भरपूर स्वागत सत्कार कर दीजिएगा। मुझे आपसे और कुछ नहीं चाहिए।"

"समधी जी, यह आप क्या कह रहे हैं? कल को मेरी बेटी को ताने सुनने पड़े तो मैं कहीं का नहीं रहूंगा। खुद आत्महत्या कर लूंगा।"

"बस बस समधी, जी आगे और कुछ मत बोलिएगा। मैं कोर्ट से स्टैम्प लिख कर दे दूंगा कि आपकी बेटी को किसी का ताना नहीं सुनना पड़ेगा।"

इतना कह कर लड़के के पिता ने फोन काट दिया। बाप ने बेटी को विदा करते हुए कहा, "बेटी तुम हर गम सहकर ससुराल में रहना, कभी कोई शिकायत मत करना। आज से लड़के के पिता तुम्हारे पापा हैं और लड़के की मां तुम्हारी मां है।"

बेटी ने हंस कर कहा, "पापा मैं आपकी लाड़ली बेटी हूं, कभी कोई शिकायत नही करूंगी।" इतना कह कर लड़की अपने पति के साथ कार में बैठ कर आंखों से ओझल हो गई।❑

सम्पर्क : गल्ला मंडी, गोला बाजार 273408
जनपद-गोरखपुर (उ. प्र.) भारत
मो : 098389118

जय प्रकाश पाण्डेय की दो लघुकथायें

देशभक्ति

देशभक्ति और जनसेवा के भावों से ओतप्रोत एक सिपाही, मंत्री जी के लाड़ले का गिरफ्तारी वारंट लेकर पांच छै दिनों तक दौड़ता रहा। भूखे प्यासे दौड़ते दौड़ते बेहोश होकर गिर गया और मर गया।

सुबह-सुबह मंत्री जी ने सिपाही की पत्नी के नाम चैक साइन कर दिया।❑

लोभ और मोह

"हलो... बेटा तुम्हारे पापा अस्पताल में बहुत सीरियस हैं। तुम्हें बहुत याद कर रहे हैं। उनका आखिरी समय चल रहा है। यहां मेरे सिवाय उनका कोई नहीं है। कब आओगे बेटा? वे तुम्हें एक नजर देखना चाहते हैं।

"मां बहुत बिजी हूं। वैसे भी इण्डिया में अभी बहुत गर्मी होगी। तुम्हारे घर में एसी- वेसी भी नहीं है। छोटे भाई से बात करता हूं कि अभी वो इण्डिया जाकर उन्हें देख ले। फिर माँ के समय मैं चला जाऊँगा। तुम तो समझती हो मां... मुझे तुम से ज्यादा प्यार है।"

"पर बेटा वे तो मरने के पहले सारी प्रापर्टी तुम्हारे नाम करना चाहते हैं।"

"मम्मी, फिर मैं कोशिश करता हूं।"❑

सम्पर्क : जय नगर, जबलपुर
मो : 9977318765

केदारनाथ सविता की दो लघुकथायें

गांव में चुनाव

लेबर चौराहे पर आज कई दिन बाद सुबह राजेन्द्र पहुंचा। उसके एक साथी ने पूछा- "तुम कई दिन बाद काम की तलाश में आज आये हो, कहां थे इतने दिन?"

मेरे गांव में ग्राम प्रधान का चुनाव होने वाला है। मेरे ही गाँव के रामपाल खड़े हैं। बहुत पैसे वाले हैं। उनकी दया से चुनाव तक राशन-पानी, नशा-पत्ती की अच्छी व्यवस्था है। सड़क के मेन रोड पर जो ढाबा है, वहां पर गांव का कोई भी कुछ भी खा सकता है। पैसे देने की जरूरत नहीं है। सब रामपाल देंगे। उन्होंने ढाबे वाले को सहेजा है।"

"तुम तो वहां खा लेते हो, बाकी घर के लोग?"

"सब लोग वहां जा कर खा लेते हैं। सब लोग वोट देंगे न!"

"तब आज क्यों आये हो?"

"आज, अपने लिये एक कुर्ता खरीदना है। चुनाव में प्रचार भी तो करना है न! सोचा कि तुम सबसे मिलता चलूं और कोई हल्का-फुल्का काम मिलेगा तो कर भी लूंगा। ज्यादे मेहनत वाला रहेगा तो मना कर दूंगा।"

राजेन्द्र ने हथेली में सुर्ती रगड़ते हुए जवाब दिया।❑

गरीब हैं न!

सरकारी स्कूल की एक अध्यापिका अपनी ड्यूटी पूरी करके शाम को वापस लौट रही थी कि रास्ते में उसे उसके स्कूल का एक छात्र मिला। उसने छात्र को रोक कर पूछा- "तुम आज स्कूल क्यों नहीं आये थे?"

"आज दोपहर के खाने में खिचड़ी बनने की पारी थी और मुझे खिचड़ी अच्छी नहीं लगती। इसलिये नहीं आया था।"

"तुम स्कूल में पढ़ने के लिए आते हो या खाने के लिए?"

"खाने के लिए, क्योंकि हमारे घर में रोज खाना नहीं बनता। हम लोग गरीब हैं न!"❑

अंधी दौड़

मधुकांत

ऐश्वर्य न उसने कभी चाहा और शायद मिलता भी नहीं; पर दाल रोटी की लड़ाई भी उसकी क्लर्की से न लड़ी जा रही थी, सो एक लाला की दुकान पर पार्ट-टाइम जाना पड़ता था ।

5.00 बजे दफ्तर से भागकर उसे 5.30 बजे हाजिरी देनी पड़ती। लेट हो जाता तो गया काम से।

हाथ में वजनदार थैला लटकाए खारी बावली से गुजर रहा था तो पटरीवाले पर बहुत क्रोध आया। उसे लगा उसके कंधे टकरा टकरा कर लहूलुहान हो गए हैं। उसने सोचा- हर व्यक्ति उसे रोकने के लिए साजिश किए खड़ा है।

बस उसे इतना ध्यान है, मुड़ते हुए किसी वृद्धा से टकराया था। वह गिर गई थी, लेकिन पीछे मुड़कर देखने का अर्थ था पार्ट-टाइम की हानि... वह अधिक गतिशील हो गया था।

रात उसने घर में प्रवेश किया तो मां की कराहट सुनकर रुक गया।

"क्या बात है मां?" उसने पूछा।

"कुल्ले की हड्डी टूट गई बेटा! राह चलते कोई बदमाश धकेल कर चला गया।" कराहट कोसने लगी।

जेब में पड़ा ओवर-टाइम उसे बहुत भारी लगने लगा।❑

संपर्क : 211 एल, मॉडल टाउन,
डबल पार्क, रोहतक, (हरियाणा) - 124001
मो 9896667714

मास्टर जी : ग़ज़ल और भाषण में क्या अंतर होता है...?

छात्र : पराई स्त्री का हर शब्द ग़ज़ल होता है और बीवी का हर शब्द भाषण...!!!

❑❑

पंडित जी ने कुंडली मिलाई...
36 के 36 गुण मिल गए.
लेकिन लड़के वालों ने शादी से मना कर दिया...!
लड़की वाले हैरान होकर पूछने लगे-
"जब सारे गुण मिल रहे हैं तो आप मना क्यों कर रहे हैं?"
लड़के वाले : जी हमारा लड़का तो बिलकुल लफंगा है. अब क्या बहू भी उसी के जैसी ले आएं...!!!

अजीव अंजुम की दो लघुकथायें

उत्सव

जिस दिन होलिका जली थी, उसी दिन बसंती भी जलकर मरी थी। न होलिका को किसी ने जलते देखा, न बसंती को। बस सुबह होलिका की राख व उधर बसंती की चिता की राख ने ही इस बात का प्रमाण दिया।

बाकी अगले दिन सभी ने रंग उछालकर होलिका का उत्सव मनाया और बसंती के जलने के बाद बसंती के चरित्र पर कीचड़ उछाल कर लड़के ने अच्छा दहेज लेकर दूसरा विवाह कर एक नया उत्सव मनाया।❑

बदलाव

आंखों की एल्बम में सजाए बचपन के सारे चित्र उसे आज बदलते से लगे थे। पूरे पच्चीस बरस बाद आया था मिर्जेवाला। यहां सब कुछ बदल गया है। नहर कस्सियाँ पहले से सँकरी लगने लगी हैं। पीर सा का मंदिर और भी छोटा सा दिखाई पड़ता है। कच्चे घर अब पत्थरों के गहनों में लिपटे रंगे पुते सज रहे हैं। चौराहे वाला बड़ा सा बरगद तो मानो अब बदलाव में कहीं खो ही गया है।

"सब कुछ बदल गया माऊ। लगा ही नहीं है मैं मेरी जन्मस्थली मिर्जेवाला में आया हूं। यह तो गांव से शहर हो गया।"

"बेटा! शहर बन जाएगा तो क्या तेरी जन्मभूमि नहीं रहेगी।" माऊ में दूध का गिलास उसके हाथों में थमा दिया।

"लाल लाल दूध तो माऊ मिलेगा नहीं। चलो।" वह गर्म दूध को धीरे-धीरे चुस्कियां लेकर पी गया।

वह जब वापस जाने लगा तो माऊ ने विदा में कंबल के साथ एक डिब्बा भी दिया।

"इसमें क्या है माऊ।"

"घर जाकर देख लेना।"

वह चल दिया, लेकिन मन में बड़ी उत्सुकता थी कि डिब्बे में माऊ ने क्या रखा है। अतः बस में बैठते ही उसने सबसे पहले उस डिब्बे को खोला। वह देखता ही रह गया।

"मिट्टी के घुड़ल्या !"

वह इनसे बचपन में कभी खेला करता था। माऊ के घर का लाल लाल दूध और मिट्टी के घुड़ल्या ही तो उसके बचपन के मुख्य आकर्षण थे। माऊ मुझे जाने कितने ही घुड़ल्या ला कर देती थीं। लेकिन सभी मेरे हाथों से टूटते रहते। माऊ ने मेरा आज कितना ख्याल रखा है। मेरे से ही यह भूल रही जो लाल दूध का उलाहना तो दे गया पर...।

सच समय के साथ गांव शहर बन गया और मैं बालक से आदमी। बहुत बदलाव हो गया।❑

सम्पर्क : राधा कोल्ड के पीछे,
सादाबाद रोड, राया, मथुरा-281204

यादों के गुलाब

सुरेश सौरभ

कुछ पुरानी किताबों को हटाते-संभालते हुए, एक डायरी उसके हाथ में आ गई। ताजे गुलाबों की खुशबू पूरे कमरे में फैल गई। कालेज के दिनों की यादों से उसका अंग-अंग थिरक उठा। बूढ़ी रगो में रक्त का संचार बढ़ गया। तभी अपनी बेटी पर उसकी नजर गई, वह इठलाते-बलखाते हुए किसी से फोन पर बातें कर रही थी। उसके गालों पर बढ़ती गुलाबी रंगत को देख, मुंह बिसूर कर वह दहाड़ा- "किसका फोन है?"

बेटी ने फौरन फोन काट दिया। उसे होश न रहा, पापा जी कब सामने आ गए।

"कि... कि किसी का नहीं..." हकलाते हुए, संभलते हुए।

वह डायरी पटक कर बोला- "तेरे गुलाबी गाल बता रहे हैं, किसका फोन था। बेटी सहम गई।... टिन्न.. एक लवली गुलाबी इमोजी मैसेंजर पर आई। वह देख पाती, इससे पहले पापा बोले- "मुझे गुलाबी रंग और गुलाबों से सख्त नफरत है समझी..."

चट-चट-चट.. तेजी से चप्पलें चटकाते हुए चल पड़े। बेटी हैरत से उन्हें जाते देख रही थी, गालों पर उगी, अपनी गुलाबी रंगत तो समझ में आ रही थी, पर गुलाबों से सख्त नफरत... के मर्म को वह न समझ पा रही थी।❑

सम्पर्क : मो. निर्मल नगर,
लखीमपुर खीरी, पिन-262701
मो : 7376236066

बिना सिर का धड

मधुकांत

मैं कल विनय पाठक से मिला था। अरे! आप विनय पाठक को नहीं जानते ! कमाल है भाई, आप कुछ समय के लिए इस शहर से बाहर क्या गए, आप तो इस शहर को ही भुला बैठे। अरे! वही विनय पाठक, जो इस शहर के हर जलूस में हाथ में झण्डा थामे सबसे आगे होता है। वह इस शहर का बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति है, जिसे यूँ भुला देना ठीक नहीं है। अरे हाँ, जिस व्यक्ति से आपको कोई वास्ता न हो उसे आप क्यों याद रखेंगे! लेकिन मैं आपको यूँ छोड़नेवाला नहीं हूँ। आपको उसकी पूरी दास्तान सुननी ही होगी।

मैं कल जब उसके झोंपड़ीनुमा घर पर पहुँचा तो वहाँ का दृश्य देखकर दंग रह गया। रुकिए! आप मुझे बीच में टोककर यह मत पूछिए कि मैं उसके घर क्यों गया था। आप तो मेरा काम जानते ही हैं। शहर के सभी जलूसों के लिए भीड़ जुटाना ही तो मेरा धन्धा है।

बात मुद्दे से भटक रही है, फिर से सही ट्रैक पर लौटते हैं। जब मैं उसके घर पहुँचा तो यह देखकर चकित रह गया कि उसके सामने ज़मीन पर एक झण्डानुमा कपड़ा बिछा हुआ है और वह उसपर तड़ातड़ जूते बरसाए जा रहा है। उसका चेहरा लाल सुर्ख हो रहा था और उसकी आँखें गुस्से से बाहर निकलने को हो रही थीं।

"क्या हुआ विनयजी?" कुछ देर आश्चर्य से यह देखते रहने के बाद मुझे पूछना ही पड़ा।

"यहाँ से भाग जाओ, नहीं तो मैं यह जूता तुम पर बरसाना शुरू कर दूँगा।" उसने चीखकर कहा।

मैं चुपचाप वहाँ से लौट आया, क्योंकि मैं समझ गया था कि उसके धड़ पर एक सिर उग आया है जो कुछ सोचता भी है और समझता भी है।

आप तो जानते ही हैं कि मुझे सिर्फ सिर रहित धड़ों की आवश्यकता होती है। हाँ, अब मैं फिर से बिना सिर के किसी धड़ की तलाश में हूँ। ऐसा कोई आपकी नजर में हो तो मुझे अवश्य बताना... और हाँ, कमीशन की चिन्ता कतई न करें।❑

सम्पर्क : 138/16, त्रिनगर,
दिल्ली-110035

बेताल का पुनर्जन्म

पुरुषोत्तम दुबे

आज सुबह-सुबह विक्रम बेताल को अपने काँधे पर लादे हुए सरपट भागा जा रहा था। किसी भी वाहन से तेज रफ्तार में।

बेताल ने विक्रम के माथे पर आया पसीना पोछते हुए विक्रम को उसपर चढ़ती थकान से निवृत्ति का संदर्भ पकड़कर जो कहानी सुनाई वह यूँ थी।

अमावस की घोर काली रात में एक ऊँचे टीले पर बैठा युवक अपने अँधे भविष्य को लेकर चिन्तातुर था?

उसने एक राजनीतिज्ञ के कहने पर सांप की बाम्बी में अपना हाथ डाल दिया था। जिसके एवज में सांप ने उसे काट लिया था! इस काटे के इलाज के लिए वह राजनीतिज्ञ के पास पहुंचा। जवाब में राजनीतिज्ञ ने स्पष्ट मना कर दिया कि उसने उस युवक को ऐसा हरगिज नहीं कहा था कि वह सांप की बाम्बी में हाथ डाले!

युवक ने राजनीतिज्ञ से प्रतिशोध लेना ठान लिया। उसने देश का सम्विधान उठाया और प्रजातंत्र के अर्थ को कण्ठस्थ कर लिया।

आम चुनाव की फ़िज़ा आने को हुई तो वह निर्वाचन नामावली खरीद लाया और विभिन्न क्षेत्रों के मतदाताओं के नाम और पते को पढ़ने-समझने लगा। जल्दी ही उसने निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित आयु-सीमा वाला एक निरक्षर व्यक्ति खोज निकाला और उसको उस राजनीतिज्ञ के विरुद्ध उम्मीदवार बना दिया जिसने उसको सांप की बाम्बी में हाथ डालने को कहा था।

यह कथा सुनाते हुए बेताल ने विक्रम से पूछा, "उस युवक ने ऐसा क्यों किया? वह खुद भी तो प्रतिशोध लेने के अर्थ में उस राजनीतिज्ञ के विरुद्ध चुनाव में खड़ा हो सकता था?"

बेताल के सवाल के जवाब में विक्रम ने कहा, "युवक समझदार था, सांप के काटे से राजनीति का जो विष उसमें फैल गया था, उसी विष ने उसमें यह अमृत-विचार पैदा कर दिया था कि एक निरक्षर ही दूसरे निरक्षर को परास्त कर सकता है। दूसरे, युवक ने यह भी सोचा होगा कि खुद न लड़कर किसी और के काँधे से निशाना साधना बुद्धिमानी का काम है।"

विक्रम के मुँह से ऐसा सटीक जवाब सुनकर बेताल विक्रम के काँधे से उड़न-छू होकर न्याय मन्दिर में रखी कुर्सी के नीचे जा दुबका!❑

सम्पर्क : 'शशीपुष्प'
74 जे/ए स्कीम न.71
इन्दौर (म. प्र.)
मो : 9329581414

सावन की झड़ी

कान्ता राय

“भाभी, निबंध लिखवा दो!” चीनू ने उसका ध्यान खींचा।

“किस विषय पर?” चीनू की स्कूल डायरी उठा, फिर से नज़र बरामदे की ओर लग गयी।

जब से सुषमा बरामदे में खड़ी हुई है और उधर वो गुजराती लड़का, उसका ध्यान वहीं है।

कितनी बार मना कर चुकी थी इसे लेकिन...!

बाऊजी नजीराबाद वाले से रिश्ता जोड़ना चाहते हैं और ये है कि इस गुजराती में अटकी है!

ननद के चेहरे पर छाई मायूसी उसे बार-बार हिमाकत करने को उकसा जाती थी, इसलिये कल रात आखिरी बार फिर से हिम्मत करी थी।

“बाऊजी, वो पड़ोस में गुजराती है ना...!”

“हाँ, सो?”

“अपनी सुषमा को पसंद करता है, उसकी नौकरी भी वेयर हाऊस में है।”

“वो...? शक्ल देखी है उसकी, काला-कलूटा, जानवर है पूरा का पूरा! ऊपर से दूसरी जात!” बाऊजी की आवाज इतनी सर्द...., उसकी हड्डियों तक में सिहरन उठी थी।

पति ने उसकी ओर खा जाने वाली नजरों से देखा था।

चीनू ने हाथ से डायरी छीन ली।

वह लौटी, आँचल खींच फिर से पूछा, “बताओ ना, जानवरों के क्रिया कलापों पर क्या लिखूँ?”

सुषमा और चीनू के लिए वह भाभी कम माँ अधिक थी।

“भाभी, मोर क्यों नाचता है?” चीनू ने इस बार सबसे सरल प्रश्न पूछा था।

वैसे चीनू के प्रश्नों के जबाब उसे ढूँढ-ढूँढकर तलाशने होते हैं। आज कल के बच्चे कम्पयूटर से भी तेज, और चीनू, उन सबमें भी अव्वल!

“मोरनी को रिझाने के लिए ही मोर नाचता है।” उसने स्नेह से कहा।

“और जुगनू क्यों चमकता है?”

“अपने साथी को आकर्षित करने के लिए।”

सुनते ही क्षण भर को वह चुप हो गया।

“आप हमारे भैया की साथी हो?”

“हाँ!” उसकी ओर आँखें तरेरती हुई बोली।

“भैया ने आपको कल रात मारा क्यों?”

“चीनू!” वह एकदम से सकपका गयी, “क्योंकि मैं उन पर ध्यान नहीं देती हूँ?” भर्राये स्वर में धीरे से कहा।

“तो उनको भी आपको रिझाने के लिए जुगनू की तरह चमकना चाहिये, मोर की तरह नाचना चाहिये था ना?”

“धत्! वे क्यों रिझायेंगे, जानवर थोड़ी ना हैं!”

“भैया जानवर नहीं हैं, लेकिन गुजराती तो जानवर है ना, इसलिये तो सुषमा जीजी को रिझाता रहता है।” कह कर चीनू जोर-जोर से हँसता रहा, लेकिन वह सुनकर सुन्न पड़ गयी।

“ये क्या ऊटपटाँग बातें कर रहा है तू?”

“भाभी, मैं खुद ही निबंध लिख लूँगा, बस सुषमा जीजी को उसका मोर दिला दो! फिर वो कभी आपकी तरह छुप-छुपकर नहीं रोयेगी।” कहते हुए चीनू की नज़र भी बरामदे में जाकर टिक गयी।❑

सम्पर्क : प्रशासनिक अधिकारी
हिन्दी भवन, श्यामला हिल्स,
पॉलिटेक्निक चौराहा,
भोपाल-462002
मो : 9575465147

रोहित की मां की तबीयत खराब हुई. वह उन्हें लेकर अस्पताल गया...
डॉक्टर ने कहा : दो टेस्ट होंगे!
रोहित वहीं जोर-जोर से रोने लगा और कहने लगा :
हे भगवान, अब क्या होगा!!
मेरी मां तो अनपढ़ है.

❑❑

लड़की : मुझे अमीर लड़के बहुत पसंद हैं.
लड़का : अच्छा...
लड़की : हां...
लड़का : अच्छा तो फिर बाद में बात करता हूं.
थोड़ा हेलीकाप्टर अंदर कर दूं. बाहर गली में खड़ा है...!!!

❑❑

चिंटू अपनी बीवी के ब्यूटी पार्लर गया था, लेकिन वहां जो लिखा था, उसे पढ़कर वह गिरते-गिरते बचा...
वहां लिखा था...
यहां भगवान की रचना के साथ छेड़छाड़ की जाती है!!!

नि-कैप

महेश कुमार केशरी

उस्मान साहब कुर्सी पर बैठते हुए अचानक से फिर उसी रौ में कराहे, जैसे इन महीनों में जब से सर्दियाँ शुरू हुई थीं। वे कराहा करते थे। दर्द की एक पतली महीन रेखा उनके चेहरे पर उभर आई थी। कमबख्त घुटनों ने परेशान कर रखा है। सर्दियों में उनकी तकलीफ अक्सर बढ़ जाया करती है।

वे फिर से एक बार कराहे, "ऊफ! या अल्लाह..." और बैठक से निकलकर ओसारे में आ गए। जहाँ फर्लांग भर की दूरी पर रुकैया साड़ी वाले से साड़ी खरीद रही थी। उनको देखा तो नजरअंदाज करते हुए साड़ी वाले से बातों में उलझी रही।

थोड़ा रुककर वो रुकैया से बोले- "बहू, मेरा निकैप कब का खराब हो गया है। ठंड की वजह से जोड़ों में कनकनाहट होती रहती है। अनवर से कहो ना एक जोड़ी नि-कैप बाजार से ला दे। मैं तो अनवर से कह-कहकर थक गया। लेकिन वो आज-कल करके टाल जाता है।"

रुकैया साड़ी को एक तरफ रखते हुए बोली- "यहाँ लोग अपने लिए कमाएँ या औरों के लिए, समझ नहीं आता। मर-मर के दिन रात काम करो। तब भी घर में बरकत नहीं होती। अभी पिछले साल ही तो उन्होंने आपको नि-कैप खरीदकर दिया था। क्या इतनी जल्दी खराब हो गये।"

"अरे, पिछले साल कहाँ, दो-तीन साल पहले अनवर नि-कैप लाया था। एक नि-कैप का रबर पूरी तरह खराब हो गया है। घुटनों से नि-कैप नीचे गिर जाता है। और घुटनों में कनकनाहट बढने लगती है।" ग्रामोफोन की सुई जैसे उस्मान साहब के गले मे घरघराई।

"दोनों पैर में दर्द है या एक ही पैर में।" रुकैया ने पाँच सौ के दो नोट साड़ी वाले की तरफ बढ़ाते हुए पूछा।

"कभी-कभी एक पैर में भी करता है। और कभी-कभी दोनों पैरों में भी।" उस्मान साहब खुरदरी दीवार की तरफ ताकते हुए बोले।

"आप एक ही नि-कैप को बदल-बदल कर क्यों नहीं पहनते? जब जिस पैर में दर्द ज्यादा हो, उस पैर में पहन लिया कीजिए। इससे पैसा भी बचेगा और सामान की यूटीलिटी भी बरकरार रहेगी।" रुकैया कमरे में जाते हुए बोली।

उस्मान साहब के चेहरे पर उदासी और दुःख के कोहरे और ज्यादा घने हो गए। वे अस्फुट स्वर में जैसे बोले- "दर्द को बदलकर भी भला कोई पहनता है क्या? मेरा बस चलता तो उसे साबुत उखाड़कर ना फेंक देता!"❑

सम्पर्क : मेघदूत मार्केट फुसरो
बोकारो, झारखंड, पिन-829144
मो-9031991875

माँ

सूर्यकांत नागर

पड़ोसिन पुष्पा ने श्यामा चाची को ढेर सारी रोटियाँ थेपते देखा तो दंग रह गई। सब्जी से भी बढ़िया महक आ रही थी। अकेली जान, अचानक क्या हो गया। बूढ़ी-बीमार, अपना तो कुछ होता नहीं, दूसरों का करने चली। बेटे ने अलग कर दिया। नीचे अकेली रहती है। शुरू में कुछ दिनों तक ऊपर से ही खाना आता रहा, लेकिन जब देखा कि अक्सर कच्चा-पक्का, बासी, बचा-खुचा होता है तो खुद अपना बनाना शुरू कर दिया। जैसे-तैसे अपने लिए दो रोटियाँ सेंक लेती है। देखकर पुष्पा चकित इसलिए भी है कि झुलसे चेहरे पर थकान का कोई चिह्न नहीं है। उलटे सुकून की एक रेखा खिंची हुई है।

''क्या कोई मेहमान आने वाला है?'' पुष्पा ने पूछा।

''अरे भाई, मेरे यहाँ कौन आता है?''

''फिर यह सब क्यों?''

''बच्चों के लिए।''

''बच्चों के लिए? बच्चे! जिनके बड़े तुमसे सीधे मुँह बात नहीं करते!''

''आज ऊपर गैस खत्म हो गई थी और अभी तक गैस का कोई ठिकाना नहीं पड़ा है। सुबह से कुछ भी नहीं पका। बच्चे ब्रेड आदि खाकर स्कूल गए हैं और शायद बेटा-बहू भी बिना कुछ खाए ही निकल गए। शाम को सोहन और बहू काम से थके-हारे और बच्चे भूखे-प्यासे लौटेंगे तो कैसे-क्या होगा! एक बार बेटे-बहू को तो भूखा रख भी दूँ, पर तीनों बच्चों को कैसे भूखा रहने दूँ।''

''तीनों बच्चों को?'' चकित होकर पुष्पा ने पूछा।

''हाँ, तीनों को। दो जो स्कूल से लौटने वाले हैं और तीसरा जिसे बहू जन्म देने वाली है।''❑

सम्पर्क : 81, बैराठी कॉलोनी नं. 02,
इन्दौर-452014 (म. प्र.)
मो : 98938-10050

डॉ. योगन्द्र नाथ शुक्ल की दो लघुकथायें

आत्मकथा

उनकी गिनती रसूखदार लोगों में होती थी। नगर के अनेक अनाथालय, वृद्धाश्रम और गंदी बस्ती के विद्यालय उनके आर्थिक सहयोग से चल रहे थे।

एक दिन उनके अंतरंग मित्र ने उन्हें राय दी- "आपने बीस-पच्चीस वर्षों में व्यवसाय और समाज में जो ऊंचाइयां हासिल कीं, वह काबिलेतारीफ़ हैं। मेरी इच्छा है कि आप भी दूसरे बड़े आदमियों के समान आत्मकथा लिखें, ताकि आपके जीवन से अन्य भी प्रेरणा ले सकें।" उसी क्षण उन्होंने मन ही मन आत्मकथा लिखने का फैसला कर लिया।

बचपन में विद्यालय की कक्षा में सर के द्वारा पढ़ाई गई अनेक बातें उन्हें अब तक याद थीं। उनमें से एक बात उनके दिमाग में उस समय आ जाती जब वे अपने 'स्टडी रूम' में आत्मकथा लिखने बैठते। आज भी ऐसा ही हुआ। कुर्सी पर बैठकर उन्होंने जैसे ही दो-तीन पंक्तियां लिखीं, कि सोच में डूब गए... आज महसूस हो रहा है कि इतने कम समय में आदमी ईमानदारी से सिर्फ अपने परिवार का लालन पालन कर सकता है और अधिक से अधिक एक मकान बना सकता है... इतना बड़ा साम्राज्य नहीं खड़ा कर सकता! झूठ, फरेब, धोखे और भ्रष्टाचार का सहारा लेकर मैंने इतनी ऊंचाइयां हासिल कीं!

...इस सोच के साथ उन्हें सर की वह बात याद आ गई. ... "आत्मकथा व्यक्ति के जीवन का आईना होती है, इसमें झूठ नहीं लिखा जाता।" इस कथन के याद आते ही वे व्यथित हो उठे।

...उफ! कितना मुश्किल होता है अपने आप से पूरी सच्चाई के साथ रूबरू होना! पहले लगता था कि जीवन पुस्तक लायक है फिर लगा कि कुछ पृष्ठ लायक... और अब लग रहा है कि जीवन कुछ पैराग्राफ तक ही सिमट कर रह गया!

उन्होंने तुरंत मन ही मन फैसला कर लिया- "बेहतर होगा कि जो छवि समाज में बनी हुई है, उसी से संतोष कर लिया जाए!"

उन्होंने लिखे कागजों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

उनकी आत्मकथा रद्दी की शक्ल में 'डस्टबिन' में पहुंच गई।❑

इतना बड़ा असत्य

कार्यालय के सबसे बड़े अधिकारी सेवानिवृत्त हो रहे थे। सभी ने उनके विदाई समारोह को भव्य बनाने का निर्णय लिया। काम का बंटवारा कर दिया गया। अभिनंदन पत्र बनाने का काम सेन साहब को सौंपा गया।

सेन साहब धर्म भीरु थे और पूरे विभाग में उनकी ईमानदारी की मिसालें दी जाती थी। उन्होंने सेवानिवृत्त हो रहे अधिकारी से उनके जीवन की पूरी जानकारी प्राप्त की, फिर प्रशस्ति पत्र लिखा, जिसमें उनकी भरपूर प्रशंसा कर, उन्हें निहायत ईमानदार और आदर्श पुरुष के रूप में स्थापित किया।

समारोह के पूर्व दिवस के कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने हेतु बैठक रखी गई। प्रशस्ति पत्र पढ़ कर कार्यक्रम संयोजक बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने सेन साहब की बहुत प्रशंसा की और जब उस प्रशस्ति पत्र के वाचन की जवाबदारी उन्हें सौंपनी चाही तो उन्होंने अपनी असहमति प्रदर्शित की। इस पर संयोजक महोदय उन पर नाराज होने लगे। जब उन्होंने सेन साहब से इसका कारण पूछा तो वह बोले- "सर आप अन्यथा न लीजिएगा... मैंने आपके आदेश का पालन किया पर... मैं सबके सामने इतना बड़ा असत्य नहीं बोल पाऊंगा!"

कुछ क्षण के लिए कमरे में सन्नाटा छा गया। सभी महसूस कर रहे थे, जैसे मेज पर रखे प्रशस्ति पत्र का शीशा मानो चटक गया हो!❑

सम्पर्क : पूर्व प्राध्यापक एवं प्राचार्य,
निर्भयसिंह पटेल शासकीय विज्ञान महाविद्यालय
इंदौर (मध्यप्रदेश)

टीचर : अगर रात में मच्छर काटे तो क्या करना चाहिए?
छात्र : चुपचाप खुजा कर सो जाना चाहिए, क्योंकि आप कोई रजनीकांत तो हो नहीं कि मच्छर से सॉरी बुलवा लोगे.

राधेश्याम भारतीय की दो लघुकथायें

सम्मान

वह साइकिल पर चला जा रहा था। उसके जेहन में पत्नी के वहीं शब्द बार-बार आ रहे थे- आज आपको सम्मानित किया जायेगा। सम्मान में एक दोशाला तो मिलेगा ही, शायद, साथ कुछ नकदी भी मिल जाए।

''मुझे तो यह समझ नहीं आ रहा कि पानी पिलाने जैसे छोटे से काम के लिए मुझे क्यों सम्मानित किया जा रहा है? पानी तो कोई भी पिला सकता है।'' उसने स्वयं से प्रश्न किया और स्वयं ही उत्तर दिया।

घरवाली भी कमाल की है। मेरी तो सुनती नहीं, अपनी ही सुनाती रही- ''हर किसी के पास कहाँ समय है इस तरह के परोपकारी काम करने का। आप तो रेलवे स्टेशन पर पागलों की तरह हर यात्री को पानी पिलाने में लगे रहते हैं। ...भाग-भागकर उनके हाथों में थमी खाली बोतल को पानी से भरते हैं, पानी से भरी थैलियाँ ट्रेन के अन्दर बैठे यात्रियों को थमाते हैं। किसी को पानी से भरे गिलास पकड़ाते हैं... फिर उन द्वारा फेंके गए खाली गिलासों को इकट्ठा करते फिरते हैं। भला है हर किसी के बस का खेल यह....।''

इसी के साथ उसे याद आया कि कैसे एक दिन एक वृद्ध को जोर की खांसी उठी थी। यदि वह दौड़कर उसे पानी न पिलाता तो न जाने क्या हो जाता। उसके बाद वृद्ध ने उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया। कमाल तो तब हुआ जब ट्रेन में बैठे एक महात्मा ने उसे पास बुलाकर उसके हाथों को चूमा।

''यह पुण्य की पराकाष्ठा है मेरे भगवन... देवदूत हो तुम इस धरा पर...।''

''मैं तुच्छ प्राणी...।''

''नहीं, ऐसा कहकर खुद को छोटा न करो भगवन। तुम जिंदगी बचाने वाले हो...।'' महात्मा जी ने उसे बीच में टोकते हुए बड़े ही शालीन शब्दों में कहा था।

सतनाम सिंह का ध्यान तब भंग हुआ जब साइकिल सड़क से नीचे जा उतरी और वह गिरते-गिरते बचा। वह वहीं खड़ा सोचने लगा- अभी ट्रेन के आने का समय हो रहा है। कितनी गर्मी पड़ रही है।

''नहीं, घरवाली ने कहा था कि कार्यक्रम में जाना है...।'' पत्नी वाले विचार ने मन के विचार को पीछे धकेला।

वह थोड़ी देर तक किंकर्तव्यविमूढ़-सा खड़ा रहा। और फिर उसने साइकिल स्टेशन की ओर मोड़ दी।❑

दो सहेली

''नेहा! ये क्या हाल बना रखा है? वो पूर्णिमा का चाँद, अमावस्या में कैसे ढल गया? वो माँसल देह, ये अस्थि-पिंजर... मैं कोई सपना तो नहीं देख रही? तू वास्तव में ही मेरे साथ पढ़ने वाली कॉलेज की मेधावी नेहा ही है न?'' संगीता जैसे एक ही साँस में सब कुछ जान लेना चाहती थी।

वे दोनों कभी कॉलेज की सहपाठी रही थीं। आज बाजार में मिल गईं।

''तू सपना नहीं, सच देख रही है। मैं ही तेरी सहेली नेहा हूँ।''

''पर मुझे तो अभी भी यकीन नहीं हो रहा। वैसे तू आजकल कर क्या रही है?''

''घर गृहस्थी के भाड़ में झोंक दी यह जिंदगी...'' नेहा के शब्द भी उसकी जिंदगी की तरह निराशा में डूबे थे।

''क्या! क्या कह रही है तू। मेरी तो कुछ समझ नहीं आ रहा। याद है, जब तू ओजस्वी वाणी में भाषण दिया करती थी तो श्रोताओं के रोम-रोम में ऊर्जा का संचार कर देती थी। मैं तो सोच रही थी कि तुम भी आगे पढ़-लिखकर किसी अच्छे पद पर पहुँच गई होगी।'' संगीता नेहा की बात को बीच में काटते हुए बोली।

''ऐसे नसीब कहाँ मेरे! शादी के बाद सबको कहा कि मैं पढ़ूँगी। पर किसी के कानों पर जूँ न रेंगी। यही सोचकर मैंने भी कहना छोड़ दिया, जो भाग्य में होगा, उसे स्वीकार करूँगी।'' ऐसा कहते हुए नेहा की आवाज बुझते-जलते दीपक-सी थरथरा हो रही थी।

''नेहा, जो तुमने बताया ठीक वैसा ही मेरे साथ भी हुआ था. ..''

''सच! तो तुमने भी कर लिया होगा समझौता परिस्थितियों से?''

''नहीं।''ऐसा कहते हुए संगीता की आँखों की पुतलियाँ

मानो चौड़ी होती चली गईं।

''नहीं। पर क्यों?''

''मैंने पढ़ाई वाले मुद्दे पर समझौता नहीं किया... स्पष्ट कह दिया कि मैं पढ़ूँगी। मेरी सास ने कहा कि घर का काम कौन करेगा, बच्चे को कौन पालेगा। ससुर ने कहा कि हमारे घर की बहू-बेटियाँ बाहर नहीं जायेगी।

''मैं धर्मसंकट में पड़ गई। पर मैंने पढ़ना नहीं छोड़ा। पढ़ती रही। जब परीक्षा का समय आया तो शहर में ननद के पास गई। उसने सहायता की और मैंने परीक्षा दी। परीक्षाओं में पास होती चली गई और आज नौकरी करके अपने पाँव पर खड़ी हूँ स्वाभिमान के साथ। अब पूरा परिवार खुश है।''

''यार, तुझमें इतनी हिम्मत आई कहाँ से?'' विस्मित भाव से पूछा नेहा ने।

''तेरे ओजस्वी भाषणों से। जिनमें तू नारी सशक्तिकरण की बात करती थी। नारी दुनिया को बदल सकती है। और मैं समझती हूँ कि यह नारी सशक्तिकरण का रास्ता पढ़ाई के बीच से गुजरता है।'' ऐसा कहते हुए संगीता के चेहरे पर एक गर्वित मुस्कान तैर रही थी।❑

सम्पर्क : नसीब विहार कालोनी,
घरौंडा, करनाल-132114 (हरियाणा)
मो : 9315382236

कहते हैं...
जहां आदमी को एक बार धोखा मिले, वहां कभी दुबारा नहीं जाना चाहिए.
पर क्या करें भाई... ससुराल तो जाना ही पड़ता है.
❑❑
भले ही सबके अच्छे दिन आ जाएं, लेकिन ये गोलगप्पों और रिक्शेवालों के कभी अच्छे दिन नहीं आएंगे...
वो लड़कियों के भैया थे,
भैया हैं...
और भैया ही रहेंगे...!!!
❑❑
पति : मेरे सीने में बहुत दर्द हो रहा है, जल्दी से एम्बुलेंस के लिए फोन लगाओ.
पत्नी : हां, लगाती हूं. जल्दी से अपने मोबाइल का पासवर्ड बताओ.
पति : रहने दो, अब थोड़ा ठीक लग रहा है...!!!

कैरियर

गोकुल सोनी

आज मिसेज भल्ला के घर पार्टी थी. मोंटू को वे डांट भी रही थीं, और समझा भी रही थीं. देखो मोंटू, "आज की किटी पार्टी विशेष है. आज की थीम है, 'बच्चे और उनका कैरियर' तुमको तो पता ही है. आज सभी आंटियां अपने-अपने बच्चों को लेकर अपने घर आयेंगी. सभी बच्चों का स्केटिंग, डांसिंग, पेंटिंग, सिंगिंग, म्यूजिक, और पोएट्री काम्पिटीशन रखा गया है. उस में जो बच्चा ओवर आल विनर होगा, उस बच्चे और उसकी मम्मी को बड़ा सा प्राइज मिलेगा. तुम अपने कमरे में खिलौनों से खेलने में मस्त रहते हो, आज कोई खेल नहीं. दिन भर तैयारी करो."

फिर हाथ पकड़कर, जोर से भम्भोड़कर बोली- "याद रखना, शाम को मुझे प्राइज चाहिए, समझे. देखो मेरी नाक मत कटवा देना."

चिंटू डरा-डरा सा बोला, "जी मम्मी, पर मुझे नींद आ रही है."

मम्मी बोली- "कोई नींद नहीं जाओ, कमरे में और तैयारी करो."

थोड़ी देर बाद जब मिसेज भल्ला चुपचाप चिंटू को देखने गईं तो चिंटू एक बन्दर के खिलौने के गले में रस्सी बाँध कर उसे खूब उछाल रहा था, उसको गुलाटी खिला रहा था और पटक रहा था. पर उसके चेहरे पर सहज आनंद न होकर गुस्सा और तनाव था और कुछ बडबडा रहा था.

उन्होंने ध्यान से सुनने की कोशिश की तो वह बन्दर को रस्सी से उछाल कर गुलाटी खिलाते हुए डांट रहा था, "ए बंदर. .. जल्दी नाच... तुझे फर्स्ट आना है. देखो सो मत जाना. तुझे आर्टिस्ट बनना है, सिंगर बनना है, म्यूजीशियन बनना है, डांसर बनना है, और हाँ खिलाड़ी और पोएट भी बनना है. अभी... इसी वक्त... सब कुछ बनना है और याद रखना, तुझे गणित, इंग्लिश, जी.के., ड्राइंग, हिंदी, साइंस, सभी में 'ए प्लस' भी लाना है. नाच बन्दर नाच, नहीं तो बहुत मारूंगा.. बहुत मारूंगा." और बन्दर को बार बार जमीन पर पटक कर सुबक-सुबक कर रोने लगा. मिसेज भल्ला किंकर्तव्यविमूढ़ सी खड़ी उसे देख रही थीं. उनको कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था. वे चिंटू को गले से लगाकर खुद सुबक-सुबक कर रोने लगीं।❑

सम्पर्क : 82/1, सी-सेक्टर, साईंनाथ नगर,
कोलार रोड, भोपाल-462 042
मो : 7000855409

माधव नागदा की दो लघुकथायें

परिवार की लाड़ली

एक साथ तीन पीढ़ियां गांव के बस स्टैण्ड पर बस का इंतजार कर कही थीं- दादी, मां, पिता, बेटा और उसकी नई-नवेली बहू। बस स्टैण्ड हाइवे के किनारे था। हालांकि यातायात की कमी नहीं थी, लेकिन लोकल बसों की कमी थी। फलस्वरूप लोगों को घंटों इंतजार करना पड़ता था।

समय गुजारने के लिये बेटे ने एक तरीका ढूंढ़ निकाला। वह आते-जाते ट्रकों के पीछे की लिखावटों को पढ़ने लगा। जरा जोर से, ताकि सब सुन लें। कोई रोमांटिक सी बात होती तो बहू की ओर देख कर और जोर से बोलता। बहू घूंघट कुछ ऊपर उठाती, नीचे का ओंठ दांतों तले दबाती और सबकी नजरें बचाते हुए पति की ओर आंखें तरेरती। पति को पत्नी के चेहरे की यह लिखावट ट्रक की लिखावट से भी ज्यादा रोमांचित कर देती। उसे इंतजार में भी अनोखा आनंद आने लगा।

अभी-अभी मार्बल से लदा एक ट्रक गुजरा था। ओवरलोड। धीमी रफ्तार। दर्द से कराहता हुआ सा। लिखा था, 'परिवार की लाडली' बेटे ने कहा, वो देखो परिवार की लाडली जा रही है और बड़े लाड़ से पत्नी को निहारा।

"हुंह, इतना तो बोझा लाद रखा है और परिवार की लाड़ली।" पत्नी ने व्यंग्य किया।

सासूजी सुन रही थी। उन्होंने तिरछी निगाहों से अपने पति व सास की तरफ देखा, फिर बोली, "इतना बोझा लाद रखा है तभी तो परिवार की लाड़ली है, वरना..." बहू ने महसूस किया कि सासूजी की आवाज घुट कर रह गई है।❑

शहर की रामलीला

आज सीता वनवास था।

'सीता' तो तैयार थी, परन्तु 'राम' बीमार पड़ गये थे। प्रश्न यह था कि ऐन समय राम का रोल किसे दिया जाय? इधर पब्लिक बेसब्री से इन्तजार कर रही थी।

"सर, क्यों न नीलेश को राम का रोल दे दें। उत्साही लड़का है, कर लेगा।" प्राम्पटर ने सुझाया।

"अरे यार, तुमने भी किस सिरफिरे का नाम ले लिया। कब क्या हरकत कर बैठे, कुछ ठिकाना भी है उसका?"

इतने में नीलेश भी आ गया। बोला, "सर, आप मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करते? हर बार बंदर बना देते हैं। एक बार राम का रोल भी देकर देखिये न। दर्शक वाह-वाह कर उठेंगे।"

पंडाल में शोर बढ़ गया था। डायरेक्टर के माथे पर चिन्ता की रेखाएं उभर आयीं, "खा राम की कसम, कोई ऊटपटांग हरकत नहीं करेगा।"

नीलेश ने राम की कसम खायी और तैयार होकर तुरन्त मंच पर पहुँच गया।

रथ तैयार, लक्ष्मण तैयार, लक्ष्मण बहाना बनाकर गर्भवती सीता को रथ पर बैठाते हैं। दर्शकों की आंखें नम! राम बेचैन।

"ठहरो लक्ष्मण, उतरो रथ से। मैं जाता हूं सीता के साथ।" राम गरजे और लक्ष्मण को धकियाकर स्वयं रथारूढ़ हो गये।

डायरेक्टर हतप्रभ! प्राम्पटर भौंचक्क! दर्शकों में सन्नाटा!

"मैं ऐसे सिंहासन को लात मारता हूं जो सीता के अपमान के बदले प्राप्त होता है। सीते, मैं इतना विवेकहीन नहीं हूं कि एक धोबी के अनर्गल प्रलाप के कारण तुम्हें त्याग दूं। तुम मेरी अर्द्धांगिनी हो। यदि अयोध्या को तुम स्वीकार नहीं तो अयोध्या भी मुझे स्वीकार नहीं। इसी क्षण मैं अयोध्या को अंतिम प्रणाम कहता हूं। चलो सुमंत।"

"पर्दा, पर्दा..." डायरेक्टर चिल्लाया, "मैं पहले ही कहता था कि यह लड़का जरूर जूते पड़वायेगा।"

उधर चमत्कार हो गया। तमाम दर्शक तालियां बजाते हुए अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो गये। इतने में एक महीन किन्तु दृढ़ स्वर उभरा, 'आज के राम की जय' और पूरा पंडाल जयकारे से गूंज उठा।❑

सम्पर्क : लाल मादड़ी
(नाथद्वारा) - 313301

उपेक्षा

प्रजन्या सिंह

राम केशव बाबू जाने-माने आदमी थे। उनकी पत्नी की मौत रोहित के जन्म के दो साल बाद ही हो गयी थी। वे चाहते तो आसानी से दूसरी शादी कर घर बसा सकते थे, लेकिन उन्होंने रोहित को अकेले दम माँ और पिता की जिम्मेदारी निभाते हुए पाल-पास कर बड़ा किया था।

छोटे से कसबे में उनकी काफी इज्जत थी। वे सरकारी विद्यालय में संस्कृत के शिक्षक थे। अलग से अंग्रेजी भाषा के भी जानकार थे। वे धोती-कुर्ता पहनते थे और पैर में कैम्पस का जूता। मगर वे ड्रेस के साथ अपनी सोच में भी दूरदर्शी थे। इण्टर के बाद उन्होंने रोहित को इन्जीनियरिंग की पढ़ाई के लिए बेंगलुरु भेजा। रोहित के बेंगलुरु जाने के बाद उनके अकेलेपन का साथी केवल स्कूल था। वे अक्सर रोहित को याद किया करते थे। पढ़ाई खत्म करने के बाद जब वह वापस आया, तब उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने रोहित की शादी उसकी पसंद की लड़की ऋचा से कर दी। दोनों कुछ समय बाद दिल्ली में रहने लगे।

समय कट रहा था, पर अब अकेलेपन के साथ राम केशव बाबू की उम्र बढ़ रही थी। मजबूरन वे भी रोहित के पास दिल्ली रहने चले गए। रोहित को शुरु-शुरु में तो उनका आना अच्छा लगा, सोचा कुछ समय रहकर चले जाएँगे। मगर जब उन्होंने जाने की चर्चा नहीं की तो फिर उसके व्यवहार में बदलाव आने लगा।

ऋचा लगातार राम केशव बाबू को गाँव भेजने के लिए रोहित पर दबाव डाल रही थी। अक्सर दोनों के बीच इस मुद्दे पर लड़ाई हो जाती थी। रोहित की पत्नी चिढ़ कर कहती थी, “इस बूढ़े को वृद्धाश्रम दे आओ।”

रोहित लाज-संकोच की वजह से सहमत नहीं हो पाता था। मगर वह असमंजस में रहता था। राम केशव बाबू को घुमा-फिरा कर उसने अपनी मनःस्थिति से अवगत भी कराया था। ऋचा का बहुत विरोध संभव नहीं था उसके लिए।

राम केशव बाबू समझदार आदमी थे। हालात के हिसाब से उन्होंने कई बार खुद को बदलने का प्रयास किया था, पर कोई न कोई चूक हो ही जाती थी।

घर में कोई पार्टी चल रही थी। रोहित और ऋचा के बहुत से दोस्त और सहकर्मी आए हुए थे। उन्हें घर के अंदर रहने की सख्त हिदायत दी गयी थी। बहुत देर तक वे घर के अंदर ही बोर हेते रहे। फिर उन्हें प्यास की तलब हुई। नजरें बचाकर वे बेसिन के पास पानी पीने लगे। तभी किसी ने कहा, “हू इज ही मि. रोहित?”

“ही इज माय ओल्ड सर्वेंट।” उसने अकबका कर कहा।

राम केशव बाबू चौंक कर तेजी से कमरे में चले गए। उन्हें लगा, उनके पैरों तले की जमीन खिसक गयी हो...❑

सम्पर्क : द्वारा-संजय कुमार सिंह,
यमुना नगर कोसी नर्सरी के पास,
वाया मधुबनी, पूर्णिया-854301

बदलाव

आनन्द कुमार तिवारी

अपना मासिक वेतन प्राप्त करने के पश्चात राधे जब पुनः काम पर नहीं लौटा तो खरे साहब बहुत चिंतित हो गए; क्योंकि सीधे, सरल, शांत और ईमानदार घरेलू नौकर मिलना आजकल कठिन ही नहीं दुर्लभ हो गये हैं. एक दिन अचानक बाजार में उनकी भेंट राधे से हो गई तो वे उस पर बरस पड़े कि वह बिना सूचना के इतने दिनों से कहाँ था?

राधे मौन साधे खरे साहब की झिड़कियाँ सुनता रहा. उसके मौन ने उनका क्रोध बढ़ाने में आग में घी का काम किया और वे लगभग अपशब्दों का प्रयोग करने लगे. राधे ने हाथ जोड़कर कहा- “साहब! आप सब कुछ कह चुके हैं, अब जरा मेरी भी सुन लीजिए.”

खरे साहब थोड़े शांत हुए. उन्होंने कहा- “हाँ! बोलो क्या कहना चाहते हो?”

राधे ने विनम्रता से उत्तर दिया- “साहब मैं आपके यहां 5 वर्षों से काम कर रहा था. इन 5 वर्षों में आपने मेरा वेतन एक रुपया भी नहीं बढ़ाया. यहां तक कि त्योहार-पावन और विशिष्ट अवसरों में भी आप कंजूसी दर्शा जाते हैं. इतने समय में महंगाई कहाँ से कहाँ पहुँच गई है; जबकि आप चाहते हैं कि मैं प्रतिदिन साफ-सुथरे और अच्छे कपड़े पहनकर आऊं, क्योंकि आपके यहाँ प्रतिदिन बड़े-बड़े और संभ्रान्त व्यक्तियों का आना-जाना लगा रहता है.”

राधे ने कुछ देर रुक कर पुनः कहा- “साहब मैं अपने परिवार का पेट मुश्किल से भर पाता हूँ. ऐसी स्थिति में यह कैसे संभव है कि मैं प्रतिदिन अच्छे और स्वच्छ कपड़े बदल-बदल कर पहन सकूँ. इसलिए मैंने कपड़ों के स्थान पर मालिक ही बदल लिया.”

खरे साहब के पास राधे की बात का कोई उत्तर नहीं था.❑

संपर्क : तुलसीधाम, 36 चंचल कॉलोनी,
लक्ष्मी नगर के पास, पिपलानी, भोपाल (म. प्र.)
मो : 9827362053

रामयतन प्रसाद की दो लघुकथायें

एक जहरीला प्रश्न

सेठ नागरमल अपने कुत्तों को सुबह का नाश्ता करा रहे थे। कुत्ते उछल-उछल कर सेठ जी के हाथों से बिस्कुट खा रहे थे। सुबह की गुनगुनी धूप में नरम-नरम घास पर कुत्तों का उछलना और लुबक-लुबक कर उनके हाथ से बिस्कुट लेना उन्हें बहुत अच्छा लग रहा था।

उसी समय उनकी नौकरानी का आठ वर्षीय बेटा भी वहाँ आकर खड़ा हो गया और ललचायी दृष्टि से बिस्कुट खाते कुत्तों को देखने लगा।

सेठ ने उसे वहाँ से टरकाने के ख्याल से कुछ टुकड़े उसकी तरफ भी उछाल दिये। वह बिस्कुट के टुकड़ों पर कुत्तों की तरह ही झपटा और उन्हें मुंह में डालकर पलक झपकते ही निगल गया।

वहाँ से कुछ दूर खड़ी उसकी माँ सेठ जी की उदारता और अपने बेटे के सौभाग्य पर फूली नहीं समा रही थी। कुछ देर बाद सेठ जी से आँख बचाकर उसने अपने बेटे को पास बुलाया और स्नेह जताते हुए बोली- "बेटा सेठ जी ने आज तुम्हें बिस्कुट खिलाया।"

"हाँ मां...।" फिर सोचते हुए वह बोला, "माँ सेठ जी अपने कुत्तों को बहुत दुलारते हैं न मां...।"

"हाँ बेटे बहुत दुलारते हैं... जान से भी ज्यादा।"

"तो... तो मुझे भी उनका कुत्ता बना दो न मां...।"❑

भूख की औलाद

जहाँ-तहाँ से फटी और बदरंग साड़ी से किसी तरह अपनी देह को ढकने की कोशिश करती हुई वह भीख माँग रही थी। उसकी गोद में एक बच्चा भी था, जो मुश्किल से ढाई-तीन महीने का रहा होगा और उस समय भिखारिन की सूखी छाती को चूस-चूसकर तृप्त होने की कोशिश में बेदम हो रहा था।

भिखारिन एक हाथ से बच्चे को पकड़े थी और उसके दूसरे हाथ में भीख का कटोरा था। तभी चाय की दुकान पर चाय की चुस्की ले रहे कुछ युवकों ने उसे देखकर फबती कसी, "अरे, यार देखो न कैसी मस्त चीज है....।"

"हाँ... है तो बड़ी मस्त... नहा-धोकर निकलती तो फिर भीख मांगने की जरूरत ही नहीं होती...।"

तभी उनमें से एक ने आश्चर्य व्यक्त किया, "ले... लेकिन कुछ दिन पहले तो हरामजादी कह रही थी कि उसका कोई नहीं है, फिर यह बच्चा कहाँ से ले आई।"

"ऐ! तेरी गोद में यह बच्चा कहाँ से आ गया?"

भिखारिन चुप रही। उसी समय दूसरे ने दिल्लगी की- "कौन है इसका बाप...?"

"भूख" भिखारिन इस बार जोर से बोली।

सभी ठठाकर हँस पड़े- "क्या कहा, भूख भी कहीं किसी का बाप होता है?"

"हाँ... हाँ... बाबू, इसका बाप भूख ही है। उसी ने इसे मेरे पेट में डाल दिया है...।"❑

सम्पर्क : ए.के. एन्टरप्राइजेस,
कण्कड़बाग, पटना-8000020

छड़ी से मारो दादी

डॉ. कुँवर प्रेमिल

जनवरी का महीना था। अतिरिक्त ठंड पड़ रही थी। सुबह कुहासे की धुंध में मुस्कुरा रही थी। सड़क सुनसान थी। आवाजाही बिल्कुल बंद थी।

ऐसे में एक दादी पोता सड़क पर छिया छिलाई खेल रहे थी।

"मुझे पकड़ दादी तो जानू-" पोता आगे आगे दौड़ रहा था।

अचानक पोता सड़क पर औंधे मुंह जा गिरा। उसके घुटने छिल गए। दादी ने उसे एक चांटा जड़ते हुए कहा- "ले, और भाग, देख तेरे घुटने से खून बहने लगा है। दर्द हो रहा है क्या?"

पोता बोला- "उल्टे ठंड कम लग रही है दादी। छड़ी से मार मुझे तो और भी कम ठंड लगेगी।"

दादी रोते रोते बोली- "मैं तुझे कैसे मारूंगी मेरे हीरा बेटा। अबकी ठंड में जरूर तुझे गर्म कपड़े ले दूंगी। तब हमें इस कड़ाके की ठंड में सड़क पर नहीं दौड़ना पड़ेगा।"

ठंड से बचने के लिए सड़क पर दादी पोता की दौड़ खत्म हो गई थी। वे अपनी झोपड़ी में लौटने मजबूर हो गए थे।❑

सम्पर्क : यम आई जी-8, विजयनगर,
जबलपुर (मध्य प्रदेश) - 482002

अतुलमोहन प्रसाद की दो लघुकथायें

बदलता ज़माना

वर्णवाल दम्पत्ति को पहले से पुत्र था. दूसरी संतान पुत्री हुई. पति-पत्नी दूसरी संतान के रूप में पुत्री को पाकर खुश थे. वे पुत्र-पुत्री में कोई अंतर नहीं मानते थे. पुत्र के जन्म पर उनके दरवाजे पर किन्नर आकर सोहर गा गये थे.

"पुत्री होने के कारण इस बार किन्नर आकर तंग नहीं करेंगे." पति ने कहा.

"अरे मंगलमुखी! बगल में तो आयेंगे ही. बत्तराजी के यहां हुआ है. कहीं किसी ने यहां के लिए इशारा कर दिया तो?"

"उनका भी उसूल है कि पुत्री के जन्म होने पर नहीं आते हैं." तभी किसी ने दरवाजे पर जोर-जोर से दस्तक दी.

"आप बैठिए, मैं देखती हूं." कहकर पत्नी दरवाजे की ओर बढ़ गयी. दरवाजा खुलते ही किन्नर नज़र आये.

"यहां क्यों? बत्तरा जी का घर बगल में है. उनके यहां लड़का हुआ है."

"वहां तो जायेंगे ही, आपके यहां भी तो पुत्री-रत्ना आयी है." एक किन्नर ने कहा.

"पुत्री रत्ना पर आप लोगों की क्या जरूरत है?"

"अब ज़माना बदल गया है. पुत्र और पुत्री में कोई अन्तर नहीं रह गया है. हम लोग केवल लड़के वालों पर ही आश्रित क्यों रहें. अब हम लड़कियों के जन्म में शान से नाचते-गाते हैं." दूसरे किन्नर ने कहा.

किन्नरों को उत्तर सुन वर्णवाल दम्पत्ति चुप हो गये और किन्नरों ने गीत गाना शुरू कर दिया.❑

अनुभूति

आंशु को सुबह-सुबह घूमने की आदत है. वह अपना मोबाइल लेकर निकल पड़ता है. रास्ते में जो उसे कोई रोचक या रोमांचक दृश्य देखने को मिल जाता है, उसे अपने मोबाइल में कैद कर लेता है या अपने मोबाइल में रिकार्ड कर लेता है. घर आते ही या रास्ते से ही वायरल कर देता है. उसे ऐसे अनहोनी या रोचक दृश्य वायरल करने में आनंद की अनुभूति होती है. फिर फेसबुक पर आये लाइक और कमेन्ट्स देखने की ललक होती है.

घर से थोड़ी दूर जाने पर वह शांति मुहल्ले में आ जाता है. पता नहीं कोलाहल से भरे इस मुहल्ले का नाम शांति मुहल्ला किसने रख दिया है. मुश्किल से वह अभी शांति मुहल्ले में एक बांस अन्दर प्रवेश किया था, तभी उसकी नज़र मुहल्ले की एक छोटी लड़की पर पड़ी जो किसी दुकान से कोई सामान खरीदकर वापस आ रही थी और चार-पांच कुत्ते उसे घेरकर अपनी आवाज़ से दृश्य को रोमांचक बना रहे थे. लड़की सहमी, फिर भागने का प्रयास करने लगी.

तत्क्षण आंशु ने मोबाइल निकाला और रिकार्डिंग शुरू कर दी. तभी कुत्तों के भय से लड़की ज़मीन पर गिर पड़ती है. आंशु जो एक रोमांचक वीडियो बना रहा था, उसकी चेतना ने झकझोरा और पास पड़े पत्थर के टुकड़ों से कुत्तों को मारना शुरू किया और वीडियो बनाना भूल गया. उसे लड़की की जान बचाने की चिंता हो गयी और उसके इस सद्प्रयास से लड़की की जान बच गयी.❑

सम्पर्क : डी.के. धर्मशाला मार्ग,
बंगाली टोला, बक्सर-802101 (बिहार)
मो : 8235059357

इधर उधर की...

एक बच्चा गायब हो गया. किसी ने उसकी फोटो व्हाट्सएप पर डाल दी कि बच्चे को ढूंढ़ने के लिए फोटो फारवर्ड करें.
शाम को बच्चा वापस आ गया.
लेकिन एक साल हो गया और उसका फोटो अब भी फारवर्ड हो रहा है. बच्चा जहां भी जाता है, लोग उसे पकड़ कर उसके घर छोड़ आते हैं.

इधर उधर की...

पति : डार्लिंग, तुम खूबसूरत होती जा रही हो!
पत्नी किचन से : तुमने कैसे जाना?
पति : तुम्हें देखकर तो अब रोटियां भी जलने लगी हैं.

डॉ. भावना शुक्ल की दो लघुकथायें

निर्णय

“बाबूजी यह मैं क्या सुन रहा हूं... कि नीता कहीं और शादी करना चाहती है और वह लड़का अपनी जात बिरादरी का नहीं है।”

“हां तुमने सही सुना है... कोई बात नहीं। जब उसकी यही मर्जी है तो उसे करने दो।”

“बाबू जी आपका दिमाग खराब हो गया है। कोई ब्राह्मण पंजाबी लड़के से शादी करेगा क्या? मैं तो हरगिज भी उसकी शादी नहीं करूंगा।”

नीता के आते ही सुदीप ने कहा, “एक बात कान खोल कर सुन लो... जहां हम चाहेंगे वही तुम्हारी शादी होगी। घर से बाहर कदम निकाला तो टांग तोड़ देंगे।”

नीता भाई के डर के मारे उस वक्त कुछ कह न पाई और एक दिन उसने फैसला किया कि वह अपनी जिंदगी इस घर में नहीं गुजार सकती और वह घर से निकल गई।

भाई को जैसे ही पता चला उसने माता-पिता से कहा, “खबरदार आपने जो इससे रिश्ता रखा तो आप मेरा मरा हुआ मुंह देखेंगे या मैं समझ लूंगा कि आप हमारे लिए मर गए।”

माता पिता डर के मारे उससे मिलने नहीं जाते थे। कुछ दिन बाद नीता ने एक बेटे को जन्म दिया। नीता को माता पिता की उपेक्षा, दर्द और तड़प के कारण बीमारी ने घेर लिया और एक दिन वह इस दुनिया को छोड़ कर चली गई।

अब सुदीप भैया के बेटी की शादी है। भैया बहुत उत्साह के साथ अपनी बिटिया का विवाह कर रहे हैं, क्योंकि बिटिया ने अपनी मनपसंद बंगाली लड़के को चुना है।

पिताजी यह सब देखकर अपने आपको रोक नहीं पाए और उनके मुंह से निकला, “अगर तुमने यही निर्णय उस वक्त लिया होता तो शायद मेरी बेटी जिंदा होती।”❑

भोला मन

केबिन के दरवाजे में ठक ठक की आवाज आई।

तुरंत ही हमने कहा, “कम इन।”

देखते ही होश उड़ गए। सामने से खूबसूरत लड़की हाथ में मिठाई का डिब्बा लिए चली आ रही थी।

आते ही बोली, “सर लीजिए इसी ऑफिस में आज ही मेरी पोस्टिंग हुई है, सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर।”

हमने “बधाई है जी” कहा।

और वह “थैंक्स” कह कर चली गई।

दिन रात रूबी के साथ काम के सिलसिले में उठना बैठना जारी रहा। मेरा मन तो बस उसका दीवाना होता जा रहा था। उसकी बातों में उसके शब्दों में उसके पहनने ओढ़ने में कशिश थी जिसमें मैं रमता चला जा रहा था। कई बार सोचा कि उससे बात करूं, उससे कहूं, लेकिन हिम्मत ही नहीं हुई। एक दिन पता चला कि वह नौकरी छोड़ कर जा रही है।

उसको शहर से बाहर कहीं और अच्छी कंपनी में नौकरी मिल गई है। तब मुझसे रहा नहीं गया और मैंने उसके जाने से पहले उसको कह ही दिया, “रूबी जबसे तुमको देखा है, तब से मैं तुम्हारा दीवाना हो गया हूं। मैं तुम्हें प्यार करता हूं, तुम्हारे साथ अपनी जिंदगी गुजारना चाहता हूं।”

रूबी का जवाब था, “आप सभी पुरुष वर्ग का मन बड़ा भोला होता है। हंसी मजाक और मित्रता को आप प्यार समझ लेते हैं और उसी पर अपना जीवन बर्बाद करने के लिए उतारू हो जाते हैं। मैंने इस संदर्भ में कभी नहीं सोचा और न ही मैं सोचना चाहती हूं।”❑

सम्पर्क : प्रतीक लॉरिल, सी-904,
सेक्टर 120, नोएडा (यू. पी) पिन-201307

इधर उधर की...

बाबा : बेटा, तुझ पर एक खतरनाक चुड़ैल का साया है.
पति : बाबा, जुबान संभाल के बात करो और ख़बरदार जो मेरी बीवी के बारे में कुछ उल्टा-सीधा बोला तो...
❑❑
पति पत्नी का एक घंटे से चल रहा झगड़ा पति की बोली गई सिर्फ एक लाइन से खत्म हो गया...
“सुन्दर हो तो कुछ भी बोलोगी क्या...?”
इसके बाद पति को चाय-बिस्कुट भी मिले.

राकेश भ्रमर की दो लघुकथायें

खुशियों का संसार

वह सोशल मीडिया पर अति सक्रिय था. फेसबुक पर उसके हजारों मित्र थे, ट्वीटर पर सैकड़ों फॉलोअर थे. वाट्सएप पर वह लगातार चैटिंग में व्यस्त रहता. अति व्यस्तता के कारण वह सरकारी काम में लापरवाही बरतने लगा था, तो दूसरी तरफ अपने परिवार की तरफ़ कोई ध्यान न देता.

उसके आसपास की दुनिया अस्त-व्यस्त थी, परन्तु वह आभासी दुनिया में इतना खोया हुआ था, कि उसे पारिवारिक और सामाजिक दुनिया से जैसे कोई लेना देना नहीं रह गया था. अन्दर ही अन्दर कितना खुश था, यह तो किसी को पता नहीं, परन्तु उसके चेहरे पर सदा गंभीरता और मलीनता के चिह्न साफ़ दिखाई पड़ते थे. वह किसी से ज्यादा बात भी नहीं करता था.

इसी व्यस्तता में एक दिन वह भयंकर रूप से बीमार पड़ गया. उसे आईसीयू में भर्ती कराना पड़ा. सोशल मीडिया पर उसकी गतिविधियां ठप्प हो गई थीं. कई दिन बाद जब वह आईसीयू से बाहर आया, तो सबसे पहले मोबाइल पर अपने खाते खोलकर उत्सुकता से देखा. कहीं कुछ भी नहीं था. किसी ने यह तक न पूछा कि वह कहां था, और सोशल मीडिया से अचानक कहां गायब हो गया था? उसके दिल को बहुत धक्का लगा.

निराश भाव से उसने अपने आसपास देखा- उसके पास केवल उसकी पत्नी और बूढ़े मां-बाप थे. उसने पूछा, ''और कोई नहीं आया?''

''और कौन आता? घर के सारे लोग तो यहीं हैं. बच्चा छोटा है, उसे अपनी मां के पास छोड़ आई हूं. अब आप चुप रहिए. डॉक्टर ने ज्यादा बोलने के लिए मना किया है.''

कुछ न कहकर, उसने फेसबुक, ट्वीटर और वाट्सएप पर अपना स्टेटस अपडेट किया, ''बीमार हूं. कई दिनों बाद आईसीयू से निकलकर बाहर आया हूं. ....अस्पताल में भर्ती हूं.''

इसके बाद उसके एकाउन्ट्स में शुभकामनाओं के अनगिनत संदेश आने आरंभ हो गए. वह पढ़ते-पढ़ते तंग आ गया, परन्तु मिलने कोई नहीं आया. उसे आशा थी कि उसका स्टेटस देखकर उसके मित्र उसे अस्पताल में देखने आएंगे. उसके बहुत सारे फेसबुक मित्र व्यक्तिगत पहचानवाले थे और उसी शहर में रहते थे. फिर भी कोई नहीं आया. उसकी आंखों में कुछ बुझ-सा गया. दिल में एक कराह सी उठी, जिसकी आवाज़ केवल उसने सुनी.

पत्नी रात-दिन उसके पास रहकर उसकी देखभाल करती, मां-बाप घर-बाहर के काम करते हुए भी दिन भर उसके पास रहते और उसके जल्दी ठीक होने की दुआयें मांगते. पत्नी और मां-बाप का अपने प्रति सेवाभाव देखकर वह अन्दर ही अन्दर आत्मग्लानि से भर उठा. वह सोचता- ये लोग उसके प्रति इतने चिन्तित हैं. यह उसके अपने हैं, जो आज मुसीबत की घड़ी में उसके पास हैं और इन्हीं लोगों से दूर वह एक काल्पनिक संसार में अनजान लोगों के बीच में खुशियां तलाश करता फिरता था. उस संसार में केवल आभास था, यथार्थ कहीं नहीं था.

जब वह ठीक होकर घर आया, तो सबसे पहले सोशल मीडिया से अपने सारे एकान्ट्स डिलीट कर दिये. ऐसा करके उसे बड़ा सुकून मिला. उसे लग रहा था जैसे किसी जेल से छूटकर निकला हो. अब उसके पास समय की कोई कमी नहीं थी. वह अपने ऑफिस के काम पर पूरा ध्यान देता और घर आकर अपने बच्चे, बीवी और मां-बाप के साथ हंसता-बोलता. उसकी दुनिया ही बदल गयी थी.

अब वह अत्यधिक खुश रहने लगा था.❑

नागपंचमी

नागनाथ शहर से गाँव लौट रहा था। गाँव के बाहर उसे साँपनाथ मिला। साँपनाथ ने नागनाथ से पूछा, ''कहाँ गए थे भाई?''

''शहर!'' नागनाथ ने बताया।

''शहर...! आज नागपंचमी के दिन शहर में क्या काम आ पड़ा?'' साँपनाथ ने आश्चर्य से पूछा ।

''नाग को दूध पिलाने गया था।'' नागनाथ ने बहुत ही सहज भाव से उत्तर दिया ।

''नाग को दूध पिलाने!'' साँपनाथ को और अधिक आश्चर्य हुआ, ''गाँव के खेत, मेड़ और जंगल छोड़कर तुम शहर में नाग को दूध पिलाने गए थे?''

''हाँ, गाँव में ढूँढ़ा था, लेकिन यहाँ कोई नाग नहीं मिला। शहर गया तो वहाँ बहुत सारे मिल गये।''

साँपनाथ बेहोश होते-होते बचा।❑

संरक्षक

डॉ. राजकुमार 'सुमित्र', जबलपुर (म.प्र.)
आचार्य भगवत दुबे, जबलपुर (म.प्र.)
आचार्य (डॉ.) हरिशंकर दुबे, जबलपुर (म.प्र.)
श्री मधुर गंजमुरादाबादी, उन्नाव (उ.प्र.)
श्री ओम प्रकाश परीडा, दिल्ली
श्री नरेश ग्रोवर, जबलपुर (म.प्र.)
श्री एम. एल. वर्मा, इलाहाबाद (उ.प्र.)
श्री राधेलाल रावत, विधयक, लखनऊ (उ.प्र.)
श्री गुरुशरण सिंह, नागपुर
श्रीमती पूजाश्री, मुंबई
श्री के. राज आर्य, नई दिल्ली
श्री बलराज कुमार, नई दिल्ली
श्री यशोदा नंदन त्रिवेदी, दिल्ली
श्री राजेन्द्र पटेरिया, जबलपुर (म.प्र.)
श्री राकेश सिंह, मुंबई
श्री हरजीत सिंह, नई दिल्ली
श्री राजेन्द्र पी. शुक्ल, मुंबई
श्री कृष्ण कुमार, दिल्ली
श्री ज्ञानेन्द्र कुमार, लखनऊ, (उ.प्र.)
श्री प्रेम शुक्ल, नई दिल्ली
श्री अशोक 'अंजुम', अलीगढ़ (उ.प्र.)
श्री मुन्ना कुमार सिंह, मणिपुर

आजीवन सदस्य

डॉ. कुंवर प्रेमिल, जबलपुर (म.प्र.)
श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा, छिंदवाड़ा (म.प्र.)
श्री पफणी भूषण कर्ण, पटना (बिहार)
श्री बी. बी. चांदना, जबलपुर (म.प्र.)
डॉ. सुश्री गीता गीत, जबलपुर (म.प्र.)
श्री अवध बिहारी नायक, जबलपुर (म.प्र.)
श्री जे. पी. सिंह, जबलपुर (म.प्र.)
श्री रवीन्द्र झा, दिल्ली
श्री सुरेन्द्र साहू, सरगुजा (छ.ग.)
श्रीमती सुषमा श्रीवास्तव, लखनऊ (उ.प्र.)
श्री अमरेन्द्र नारायण, जबलपुर (म.प्र.)
श्री शरदचन्द्र राय श्रीवास्तव, जबलपुर (म.प्र.)
श्री यूनुस अदीब, जबलपुर (म.प्र.)
श्री राजेश माहेश्वरी, जबलपुर (म.प्र.)
श्री शिव कुमार कश्यप, थाणे (महाराष्ट्र)
श्री केदारनाथ 'सविता', मीरजापुर (उ.प्र.)
श्री अजय कुमार, गाजियाबाद (उ.प्र.)
श्री दिनेश कुमार सक्सेना, लखनऊ (उ.प्र.)
श्री राजेन्द्र कुमार, झांसी (उ.प्र.)
श्री देवेन्द्र भारद्वाज, झांसी (उ.प्र.)
श्री दिलीप कुमार अर्श, पणजी (गोवा)
डॉ. पशुपति नाथ उपाध्याय, अलीगढ़ (उ.प्र.)
सुश्री वन्दना सहाय, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. तनूजा चौधरी, जबलपुर (म.प्र.)
श्री रजनीश वर्मा, दिल्ली
श्री राकेश माहेश्वरी 'काल्पनिक', नरसिंहपुर (म.प्र.)

लेखकों के लिए

1. हिन्दी साहित्य की समस्त विधाओं की रचनाओं का स्वागत है। कृपया हाइकू न भेजें।

2. रचनाएं साफ कागज पर स्पष्ट रूप से लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए। फोटोकॉपी कतई न भेजें। उन पर विचार नहीं किया जाएगा।

3. अगर ईमेल से रचनाएं भेजे रहे हैं, तो यथासंभव कृतिदेव 10 या कुण्डली फॉण्ट में ही भेजें। यूनीकोड में भी रचनाएं भेज सकते हैं, परन्तु यूनीकोड से कृतिदेव में कन्वर्ट करते समय कई बार अक्षर बदल जाते हैं, जिससे सम्पादन में समय अधिक लगता है। जिन रचनाओं में त्रुटियां अधिक पाई जाती हैं, उनको अस्वीकृत किया जा सकता है।

4. रचना लिखने या टाइप करने के बाद उसे एक बार पढ़कर अशुद्धियों को ठीक करने के बाद ही भेजें।

5. समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियां भेजें। अगर स्वयं समीक्षा लिखकर भिजवा रहे हैं, तो एक प्रति भेज सकते हैं। इसमें कोई दुराग्रह नहीं है।

6. प्राची में रचनाएं गुणवत्ता के आधार पर प्रकाशित की जाती हैं। इसके लिए पत्रिका का सदस्य होना कोई आधार नहीं है।

सम्पादकीय पता
96-सी, प्रथम तल, डीडीए फ्लैट्स,
पॉकेट-4, मयूर विहार फेज-1,
दिल्ली-110091